Hindi Easy-to-Read Version

Language: हिन्दी (Hindi)
Provided by: Bible League International.

Copyright and Permission to Copy

Taken from the Hindi Easy-to-Read Version © 1995 by Bible League International.
PDF generated on 2017-08-22 from source files dated 2017-08-22.
a28f7793-64e5-53d1-b0c7-eb243e526a41
ISBN: 978-1-5313-1305-0

लूका

लूका का यीशु के जीवन के बारे में लिखना

१ १ बहुत से लोगों ने हमारे बीच घटी बातों का
ब्यौरा लिखने का प्रयत्न किया। २ वे ही बातें
हमें उन लोगों द्वारा बतायी गयीं, जिन्होंने उन्हें
प्रारम्भ से ही घटते देखा था और जो सुसमाचार
के प्रचारक रहे थे। ३ हे मान्यवर थियुफिलुस!
क्योंकि मैंने प्रारम्भ से ही सब कुछ का बड़ी
सावधानी से अध्ययन किया है इसलिए मुझे यह
उचित जान पड़ा कि मैं भी तुम्हारे लिये इसका एक
क्रमानुसार विवरण लिखूँ। ४ जिससे तुम उन बातों
की निश्चिंतता को जान लो जो तुम्हें सिखाई गयी
हैं।

जकरयाह और इलीशिबा

५ उन दिनों जब यहूदिया पर हेरोदेस का राज
था वहाँ जकरयाह नाम का एक यहूदी याजक
था जो उपासकों के अबिय्याह समुदाय *का था।
उसकी पत्नी का नाम इलीशिबा और वह हारून
के परिवार से थी। ६ वे दोनों ही धर्मी थे। वे बिना
किसी दोष के प्रभु के सभी आदेशों और नियमों
का पालन करते थे। ७ किन्तु उनके कोई संतान नहीं
थी, क्योंकि इलीशिबा बाँझ थी और वे दोनों ही
बहुत बूढ़े हो गए थे।
८ जब जकरयाह के समुदाय के मन्दिर में याजक
के काम की बारी थी, और वह परमेश्वर के सामने
उपासना के लिये उपस्थित था। ९ तो याजकों में
चली आ रही परम्परा के अनुसार पर्ची डालकर
उसे चुना गया कि वह प्रभु के मन्दिर में जाकर
धूप जलाये। १० जब धूप जलाने का समय आया
तो बाहर इकट्ठे हुए लोग प्रार्थना कर रहे थे।
११ उसी समय जकरयाह के सामने प्रभु का एक
दूत प्रकट हुआ। वह धूप की वेदी के दाहिनी ओर
खड़ा था। १२ जब जकरयाह ने उस दूत को देखा तो
वह घबरा गया और भय ने जैसे उसे जकड़ लिया
हो। १३ फिर प्रभु के दूत ने उससे कहा, “जकरयाह
डर मत, तेरी प्रार्थना सुन ली गयी है। इसलिये
तेरी पत्नी इलीशिबा एक पुत्र को जन्म देगी,
तू उसका नाम यूहन्ना रखना। १४ वह तुम्हें तो
आनन्द और प्रसन्नता देगा ही, साथ ही उसके
जन्म से और भी बहुत से लोग प्रसन्न होंगे।
१५ क्योंकि वह प्रभु की दृष्टि में महान होगा। वह
कभी भी किसी दाखरस या किसी भी मदिरा का
सेवन नहीं करेगा। अपने जन्म काल से ही वह
पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होगा।
१६ “वह इस्राएल के बहुत से लोगों को उनके
प्रभु परमेश्वर की ओर लौटने को प्रेरित करेगा।
१७ वह एलिय्याह की शक्ति और आत्मा में स्थित
हो प्रभु के आगे आगे चलेगा। वह पिताओं का
हृदय उनकी संतानों की ओर वापस मोड़ देगा और
वह आज्ञा ना मानने वालों को ऐसे विचारों की ओर
प्रेरित करेगा जिससे वे धर्मियों के जैसे विचार
रखें। यह सब, वह लोगों को प्रभु की खातिर
तैयार करने के लिए करेगा।”
१८ तब जकरयाह ने प्रभु के दूत से कहा, “मैं
यह कैसे जानूँ कि यह सच है? क्योंकि मैं एक बूढ़ा
आदमी हूँ और मेरी पत्नी भी बूढ़ी हो गई है।”
१९ तब प्रभु के दूत ने उत्तर देते हुए उससे कहा,
“मैं जिब्राईल हूँ। मैं वह हूँ जो परमेश्वर के सामने
खड़ा रहता हूँ। मुझे तुझ से बात करने और इस
सुसमाचार को बताने को भेजा गया है। २० किन्तु
देख! क्योंकि तूने मेरे शब्दों पर, जो निश्चित समय
आने पर सत्य सिद्ध होंगे, विश्वास नहीं किया,
इसलिये तू गूँगा हो जायेगा और उस दिन तक नहीं
बोल पायेगा जब तक यह पूरा न हो ले।”
२१ उधर बाहर लोग जकरयाह की प्रतीक्षा कर
रहे थे। उन्हें अचरज हो रहा था कि वह इतनी देर
मन्दिर में क्यों रुका हुआ है। २२ फिर जब वह बाहर
आया तो उनसे बोल नहीं पा रहा था। उन्हें लगा
जैसे मन्दिर के भीतर उसे कोई दर्शन हुआ है। वह
गूँगा हो गया था और केवल संकेत कर रहा था।
२३ और फिर ऐसा हुआ कि जब उसका उपासना का
समय पूरा हो गया तो वह वापस अपने घर लौट
गया।
२४ थोड़े दिनों बाद उसकी पत्नी इलीशिबा
गर्भवती हुई। पाँच महीने तक वह सबसे अलग
थलग रही। उसने कहा, २५ “अब अन्त में जाकर
इस प्रकार प्रभु ने मेरी सहायता की है। लोगों
के बीच मेरी लाज रखने को उसने मेरी सुधि ली।”

कुँवारी मरियम

२६-२७ इलीशिबा को जब छठा महीना चल रहा
था, गलील के एक नगर नासरत में परमेश्वर द्वारा
स्वर्गदूत जिब्राईल को एक कुँवारी के पास भेजा
गया जिसकी यूसुफ़ नाम के एक व्यक्ति से सगाई

*१:५ अबिय्याह समुदाय यहूदी याजकों को २४ समुदायों में बाँटा गया था। देखें १ इतिहास २४

हो चुकी थी। वह दाऊद का वंशज था। और उस
कुँवारी का नाम मरियम था। २८ जिब्राईल उसके
पास आया और बोला, "तुझ पर अनुग्रह हुआ है,
तेरी जय हो। प्रभु तेरे साथ है।"
२९ यह वचन सुन कर वह बहुत घबरा गयी, वह
सोच में पड़ गयी कि इस अभिवादन का अर्थ क्या
हो सकता है?
३० तब स्वर्गदूत ने उससे कहा, "मरियम, डर
मत, तुझ से परमेश्वर प्रसन्न है। ३१ सुन! तू
गर्भवती होगी और एक पुत्र को जन्म देगी और तू
उसका नाम यीशु रखेगी। ३२ वह महान होगा और
वह परमप्रधान का पुत्र कहलायेगा। और प्रभु
परमेश्वर उसे उसके पिता दाऊद का सिंहासन
प्रदान करेगा। ३३ वह अनन्त काल तक याकूब के
घराने पर राज करेगा तथा उसके राज्य का अंत
कभी नहीं होगा।"
३४ इस पर मरियम ने स्वर्गदूत से कहा, "यह
सत्य कैसे हो सकता है? क्योंकि मैं तो अभी कुँवारी
हूँ!"
३५ उत्तर में स्वर्गदूत ने उससे कहा, "तेरे पास
पवित्र आत्मा आयेगा और परमप्रधान की
शक्ति तुझे अपनी छाया में ले लेगी। इस प्रकार
वह जन्म लेने वाला पवित्र बालक परमेश्वर का
पुत्र कहलायेगा। ३६ और यह भी सुन कि तेरे ही
कुनबे की इलीशिबा के गर्भ में भी बुढापे में एक
पुत्र है और उसके गर्भ का यह छठा महीना है।
लोग कहते थे कि वह बाँझ है। ३७ किन्तु परमेश्वर
के लिए कुछ भी असम्भव नहीं।"
३८ मरियम ने कहा, "मैं प्रभु की दासी हूँ। जैसा
तूने मेरे लिये कहा है, वैसा ही हो!" और तब वह
स्वर्गदूत उसके पास से चला गया।

जकरयाह और इलीशिबा के पास मरियम का जाना

३९ उन्हीं दिनों मरियम तैयार होकर तुरन्त
यहूदिया के पहाड़ी प्रदेश में स्थित एक नगर को
चल दी। ४० फिर वह जकरयाह के घर पहुँची और
उसने इलीशिबा को अभिवादन किया। ४१ हुआ
यह कि जब इलीशिबा ने मरियम का अभिवादन
सुना तो जो बच्चा उसके पेट में था, उछल पड़ा
और इलीशिबा पवित्र आत्मा से अभिभूत हो
उठी।
४२ ऊँची आवाज में पुकारते हुए वह बोली, "तू
सभी स्त्रियों में सबसे अधिक भाग्यशाली है
और जिस बच्चे को तू जन्म देगी, वह धन्य है।
४३ किन्तु यह इतनी बड़ी बात मेरे साथ क्यों घटी
कि मेरे प्रभु की माँ मेरे पास आयी! ४४ क्योंकि तेरे
अभिवादन का शब्द जैसे ही मेरे कानों में पहुँचा,
मेरे पेट में बच्चा खुशी से उछल पड़ा। ४५ तू धन्य
है, जिसने यह विश्वास किया कि प्रभु ने जो कुछ
कहा है वह हो कर रहेगा।"

मरियम द्वारा परमेश्वर की स्तुति

४६ तब मरियम ने कहा,
४७ "मेरी आत्मा प्रभु की स्तुति करती है;
मेरी आत्मा मेरे रखवाले परमेश्वर में आनन्दित
है।
४८ उसने अपनी दीन दासी की सुधि ली,
हाँ आज के बाद
सभी मुझे धन्य कहेंगे।
४९ क्योंकि उस शक्तिशाली ने मेरे लिये महान
कार्य किये।
उसका नाम पवित्र है।
५० जो उससे डरते हैं वह उन पर पीढ़ी दर पीढ़ी दया
करता है।
५१ उसने अपने हाथों की शक्ति दिखाई।
उसने अहंकारी लोगों को उनके अभिमानपूर्ण
विचारों के साथ तितर-बितर कर दिया।
५२ उसने सम्राटों को उनके सिंहासनों से नीचे
उतार दिया।
और उसने विनम्र लोगों को ऊँचा उठाया।
५३ उसने भूखे लोगों को अच्छी वस्तुओं से भरपूर
कर दिया,
और धनी लोगों को खाली हाथों लौटा दिया।
५४ वह अपने दास इस्राएल की सहायता करने
आया
हमारे पुरखों को दिये वचन के अनुसार
५५ उसे इब्राहीम और उसके वंशजों पर सदा सदा
दया दिखाने की याद रही।"
५६ मरियम लगभग तीन महीने तक इलीशिबा
के साथ ठहरी और फिर अपने घर लौट आयी।

यूहन्ना का जन्म

५७ फिर इलीशिबा का बच्चे को जन्म देने का
समय आया और उसके घर एक पुत्र पैदा हुआ।
५८ जब उसके पड़ोसियों और उसके परिवार के
लोगों ने सुना कि प्रभु ने उस पर दया दर्शायी
है तो सबने उसके साथ मिल कर हर्ष मनाया।
५९ और फिर ऐसा हुआ कि आठवें दिन बालक
का ख़तना करने के लिए लोग वहाँ आये। वे उसके
पिता के नाम के अनुसार उसका नाम जकरयाह

रखने जा रहे थे, ६० तभी उसकी माँ बोल उठी,
"नहीं, इसका नाम तो यूहन्ना रखा जाना है।"
६१ तब वे उससे बोले, "तुम्हारे किसी भी
सम्बन्धी का यह नाम नहीं है।" ६२ और फिर
उन्होंने संकेतों में उसके पिता से पूछा कि वह उसे
क्या नाम देना चाहता है?
६३ इस पर जकरयाह ने उनसे लिखने के लिये
एक तख्ती माँगी और लिखा, "इसका नाम है
यूहन्ना।" इस पर वे सब अचरज में पड़ गये।
६४ तभी तत्काल उसका मुँह खुल गया और उसकी
वाणी फूट पड़ी। वह बोलने लगा और परमेश्वर
की स्तुति करने लगा। ६५ इससे सभी पड़ोसी डर
गये और यहूदिया के सारे पहाड़ी क्षेत्र में लोगों में
इन सब बातों की चर्चा होने लगी। ६६ जिस किसी
ने भी यह बात सुनी, अचरज में पड़कर कहने लगा,
"यह बालक क्या बनेगा?" क्योंकि प्रभु का हाथ
उस पर है।

जकरयाह की स्तुति

६७ तब उसका पिता जकरयाह पवित्र आत्मा
से अभिभूत हो उठा और उसने भविष्यवाणी की:
६८ "इस्राएल के प्रभु परमेश्वर की जय हो
क्योंकि वह अपने लोगों की सहायता के लिए
आया और उन्हें स्वतन्त्र कराया।
६९ उसने हमारे लिये अपने सेवक
दाऊद के परिवार से एक रक्षक प्रदान किया।
७० जैसा कि उसने बहुत पहले अपने पवित्र
भविष्यवक्ताओं के द्वारा वचन दिया था।
७१ उसने हमें हमारे शत्रुओं से और उन सब के
हाथों से,
जो हमें घृणा करते थे, हमारे छुटकारे का वचन
दिया था।
७२ हमारे पुरखों पर दया दिखाने का
अपने पवित्र वचन को याद रखने का।
७३ उसका वचन था एक वह शपथ जो हमारे पूर्वज
इब्राहीम के साथ ली गयी थी
७४ कि हमारे शत्रुओं के हाथों से हमारा छुटकारा
हो
और बिना किसी डर के प्रभु की सेवा करने की
अनुमति मिले।
७५ और अपने जीवन भर हर दिन उसके सामने हम
पवित्र और धर्मी रह सकें।
७६ "हे बालक, अब तू परमप्रधान का नबी
कहलायेगा,
क्योंकि तू प्रभु के आगे-आगे चल कर उसके लिए
राह तैयार करेगा।
७७ और उसके लोगों से कहेगा कि उनके पापों की
क्षमा द्वारा उनका उद्धार होगा।
७८ "हमारे परमेश्वर के कोमल अनुग्रह से
एक नये दिन का प्रभात हम पर ऊपर से उतरेगा।
७९ उन पर चमकने के लिये जो मौत की गहन
छाया में जी रहे हैं
ताकि हमारे चरणों को शांति के मार्ग की दिशा
मिले।"
८० इस प्रकार वह बालक बढ़ने लगा और
उसकी आत्मा दृढ़ से दृढ़तर होने लगी। वह जनता
में प्रकट होने से पहले तक निर्जन स्थानों में रहा।

यीशु का जन्म

(मत्ती १:१८-२५)

२ १ उन्हीं दिनों औगुस्तुस कैसर की ओर से
एक आज्ञा निकाली कि सारे रोमी जगत की
जनगणना की जाये। २ यह पहली जनगणना थी।
यह उन दिनों हुई थी जब सीरिया का राज्यपाल
क्विरिनियुस था। ३ सो गणना के लिए हर कोई
अपने अपने नगर गया।
४ यूसुफ भी, क्योंकि वह दाऊद के परिवार एवं
वंश से था, इसलिये वह भी गलील के नासरत
नगर से यहूदिया में दाऊद के नगर बैतलहम को
गया। ५ वह वहाँ अपनी मँगेतर मरियम के साथ,
(जो गर्भवती भी थी,) अपना नाम लिखवाने गया
था। ६ ऐसा हुआ कि अभी जब वे वहीं थे, मरियम
का बच्चा जनने का समय आ गया। ७ और उसने
अपने पहले पुत्र को जन्म दिया। क्योंकि वहाँ
सराय के भीतर उन लोगों के लिये कोई स्थान नहीं
मिल पाया था इसलिए उसने उसे कपड़ों में लपेट
कर चरनी में लिटा दिया।

यीशु के जन्म की सूचना

८ तभी वहाँ उस क्षेत्र में बाहर खेतों में कुछ
गड़ेरिये थे जो रात के समय अपने रेवड़ों की
रखवाली कर रहे थे। ९ उसी समय प्रभु का एक
स्वर्गदूत उनके सामने प्रकट हुआ और उनके चारों
ओर प्रभु का तेज प्रकाशित हो उठा। वे सहम
गए। १० तब स्वर्गदूत ने उनसे कहा, "डरो मत,
मैं तुम्हारे लिये अच्छा समाचार लाया हूँ, जिससे
सभी लोगों को महान आनन्द होगा। ११ क्योंकि
आज दाऊद के नगर में तुम्हारे उद्धारकर्ता प्रभु
मसीह का जन्म हुआ है। १२ तुम्हें उसे पहचान ने
का चिन्ह होगा कि तुम एक बालक को कपड़ों में
लिपटा, चरनी में लेटा पाओगे।"

१३ उसी समय अचानक उस स्वर्गदूत के साथ
बहुत से और स्वर्गदूत वहाँ उपस्थित हुए। वे यह
कहते हुए प्रभु की स्तुति कर रहे थे,
१४ “स्वर्ग में परमेश्वर की जय हो
और धरती पर उन लोगों को शांति मिले जिनसे
वह प्रसन्न है।”
१५ और जब स्वर्गदूत उन्हें छोड़कर स्वर्ग लौट
गये तो वे गड़ेरिये आपस में कहने लगे, “आओ हम
बैतलहम चलें और जो घटना घटी है और जिसे
प्रभु ने हमें बताया है, उसे देखें।”
१६ सो वे शीघ्र ही चल दिये और वहाँ जाकर
उन्होंने मरियम और यूसुफ को पाया और देखा
कि बालक चरनी में लेटा हुआ है। १७ गड़ेरियों
ने जब उसे देखा तो इस बालक के विषय में जो
संदेश उन्हें दिया गया था, उसे उन्होंने सब को
बता दिया। १८ जिस किसी ने भी उन्हें सुना, वे सभी
गड़ेरियों की कही बातों पर आश्चर्य करने लगे।
१९ किन्तु मरियम ने इन सब बातों को अपने मन में
बसा लिया और वह उन पर जब तब विचार करने
लगी। २० उधर वे गड़ेरिये जो कुछ उन्होंने सुना था
और देखा था, उस सब कुछ के लिए परमेश्वर की
महिमा और स्तुति करते हुए अपने अपने घरों को
लौट गये।
२१ और जब बालक के ख़तने का आठवाँ दिन
आया तो उसका नाम यीशु रखा गया। उसे यह
नाम उसके गर्भ में आने से भी पहले स्वर्गदूत द्वारा
दे दिया गया था।

यीशु मन्दिर में अर्पित

२२ और जब मूसा की व्यवस्था के अनुसार
शुद्ध होने के दिन पूरे हुए तो वे यीशु को प्रभु
को समर्पित करने के लिये यरूशलेम ले गये।
२३ प्रभु की व्यवस्था में लिखे अनुसार, “हर पहली
नर सन्तान ‘प्रभु को समर्पित’ मानी जाएगी।”
*२४ और प्रभु की व्यवस्था कहती है, “एक
जोड़ी कपोत या कबूतर के दो बच्चे बलि चढ़ाने
चाहिए।” सो वे व्यवस्था के अनुसार बलि चढ़ाने
ले गये। †

शमौन को यीशु का दर्शन

२५ यरूशलेम में शमौन नाम का एक धर्मी और
भक्त व्यक्ति था। वह इस्राएल के सुख-चैन की
बाट जोहता रहता था। पवित्र आत्मा उसके
साथ था। २६ पवित्र आत्मा द्वारा उसे प्रकट
किया गया था कि जब तक वह प्रभु के मसीह के
दर्शन नहीं कर लेगा, मरेगा नहीं। २७ वह आत्मा से
प्रेरणा पाकर मन्दिर में आया और जब व्यवस्था
के विधि के अनुसार कार्य के लिये बालक यीशु को
उसके माता-पिता मन्दिर में लाये। २८ तो शमौन
यीशु को अपनी गोद में उठा कर परमेश्वर की
स्तुति करते हुए बोला :
२९ “प्रभु, अब तू अपने वचन के अनुसार अपने
दास मुझ को शांति के साथ मुक्त कर,
३० क्योंकि मैं अपनी आँखों से तेरे उस उद्धार का
दर्शन कर चुका हूँ,
३१ जिसे तूने सभी लोगों के सामने तैयार किया है।
३२ यह बालक ग़ैर यहूदियों के लिए तेरे मार्ग को
उजागर करने के हेतु प्रकाश का स्रोत है
और तेरे अपने इस्राएल के लोगों के लिये यह
महिमा है।”
३३ उसके माता-पिता यीशु के लिए कही गयी
इन बातों से अचरज में पड़ गये। ३४ फिर शमौन
ने उन्हें आशीर्वाद दिया और उसकी माँ मरियम
से कहा, “यह बालक इस्राएल में बहुतों के पतन
या उत्थान के कारण बनने और एक ऐसा चिन्ह
ठहराया जाने के लिए निर्धारित किया गया है
जिसका विरोध किया जायेगा। ३५ और तलवार से
यहां तक कि तेरा अपना प्राण भी छिद जाएगा
जिससे कि बहुतों के हृदयों के विचार प्रकट हो
जाएं।”

हन्नाह द्वारा यीशु के दर्शन

३६ वहीं हन्नाह नाम की एक महिला नबी थी।
वह अशेर कबीले के फनूएल की पुत्री थी। वह
बहुत बूढ़ी थी। अपने विवाह के बस सात साल
बाद तक ही वह पति के साथ रही थी। ३७ और फिर
चौरासी वर्ष तक वह वैसे ही विधवा रही। उसने
मन्दिर कभी नहीं छोड़ा। उपवास और प्रार्थना
करते हुए वह रात-दिन उपासना करती रहती थी।
३८ उसी समय वह उस बच्चे और माता-पिता के
पास आई। उसने परमेश्वर को धन्यवाद दिया और
जो लोग यरूशलेम के छुटकारे की बाट जोह रहे
थे, उन सब को उस बालक के बारे में बताया।

---

*२ :२३ हर ... जाएगी देखें निर्गमन १३ :२, १२
†२ :२४ उद्धरण लैव्यव्यवस्था १२ :८

यूसुफ और मरियम का घर लौटना

३९ प्रभु की व्यवस्था के अनुसार सारा अपेक्षित
विधि-विधान पूरा करके वे गलील में अपने नगर
नासरत लौट आये। ४० उधर वह बालक बढ़ता एवं
हृष्ट-पुष्ट होता गया। वह बहुत बुद्धिमान था
और उस पर परमेश्वर का अनुग्रह था।

बालक यीशु

४१ फ़सह पर्व पर हर वर्ष उसके माता-पिता
यरूशलेम जाया करते थे। ४२ जब वह बारह साल
का हुआ तो सदा की तरह वे पर्व पर गये। ४३ जब
पर्व समाप्त हुआ और वे घर लौट रहे थे तो यीशु
वहीं यरूशलेम में रह गया किन्तु माता-पिता को
इसका पता नहीं चल पाया। ४४ यह सोचते हुए
कि वह दल में कहीं होगा, वे दिन भर यात्रा करते
रहे। फिर वे उसे अपने संबन्धियों और मित्रों के
बीच खोजने लगे। ४५ और जब वह उन्हें नहीं मिला
तो उसे ढूँढते ढूँढते वे यरूशलेम लौट आये।
४६ और फिर हुआ यह कि तीन दिन बाद वह
उपदेशकों के बीच बैठा, उन्हें सुनता और उनसे
प्रश्न पूछता मन्दिर में उन्हें मिला। ४७ वे सभी
जिन्होंने उसे सुना था, उसकी सूझबूझ और उसके
प्रश्नोत्तरों से आश्चर्यचकित थे। ४८ जब उसके
माता-पिता ने उसे देखा तो वे दंग रह गये। उसकी
माता ने उससे पूछा, "बेटे, तुमने हमारे साथ ऐसा
क्यों किया? तेरे पिता और मैं तुझे ढूँढते हुए बुरी
तरह व्याकुल थे।"
४९ तब यीशु ने उनसे कहा, "आप मुझे क्यों ढूँढ
रहे थे? क्या तुम नहीं जानते कि मुझे मेरे पिता के
घर में ही होना चाहिये?" ५० किन्तु यीशु ने उन्हें
जो उत्तर दिया था, वे उसे समझ नहीं पाये।
५१ फिर वह उनके साथ नासरत लौट आया और
उनकी आज्ञा का पालन करता रहा। उसकी माता
इन सब बातों को अपने मन में रखती जा रही
थी। ५२ उधर यीशु बुद्धि में, डील-डौल में और
परमेश्वर तथा मनुष्यों के प्रेम में बढ़ने लगा।

यूहन्ना का संदेश

(मत्ती ३:१-१२; मरकुस
१:१-८; यूहन्ना १:१९-२८)

३ १ तिबिरियुस कैसर के शासन के पन्द्रहवें साल
में जब
यहूदिया का राज्यपाल पुन्तियुस पिलातुस था
और उस प्रदेश के चौथाई भाग के राजाओं में
हेरोदेस गलील का,
उसका भाई फिलिप्पुस इतूरैया और त्रखोनीतिस
का,
तथा लिसानियास अबिलेने का अधीनस्थ शासक
था।
२ और हन्ना तथा कैफा महायाजक थे, तभी
जकरयाह के पुत्र यूहन्ना के पास जंगल में
परमेश्वर का वचन पहुँचा। ३ सो यर्दन के आसपास
के समूचे क्षेत्र में घूम घूम कर वह पापों की क्षमा
के लिये मन फिराव के हेतु बपतिस्मा का प्रचार
करने लगा। ४ भविष्यवक्ता यशायाह के वचनों
की पुस्तक में जैसा लिखा है:
"किसी का जंगल में पुकारता हुआ शब्द:
'प्रभु के लिये मार्ग तैयार करो
और उसके लिये राहें सीधी करो।
५ हर घाटी भर दी जायेगी
और हर पहाड़ और पहाड़ी सपाट हो जायेंगे
टेढ़ी-मेढ़ी और ऊबड़-खाबड़ राहें
समतल कर दी जायेंगी।
६ और सभी लोग परमेश्वर के उद्धार का दर्शन
करेंगे!'" *
७ यूहन्ना उससे बपतिस्मा लेने आये अपार जन
समूह से कहता, "अरे साँप के बच्चो! तुम्हें किसने
चेता दिया है कि तुम आने वाले क्रोध से बच
निकलो? ८ परिणामों द्वारा तुम्हें प्रमाण देना होगा
कि वास्तव में तुम्हारा मन फिरा है। और आपस
में यह कहना तक आरंभ मत करो कि 'इब्राहीम
हमारा पिता है।' मैं तुमसे कहता हूँ कि परमेश्वर
इब्राहीम के लिये इन पत्थरों से भी बच्चे पैदा
करा सकता है। ९ पेड़ों की जड़ों पर कुल्हाड़ा रखा
जा चुका है और हर उस पेड़ को जो उत्तम फल नहीं
देता, काट गिराया जायेगा और फिर उसे आग में
झोंक दिया जायेगा।"
१० तब भीड़ ने उससे पूछा, "तो हमें क्या करना
चाहिये?"
११ उत्तर में उसने उनसे कहा, "जिस किसी के
पास दो कुर्ते हों, वह उन्हें, जिसके पास न हों, उनके
साथ बाँट ले। और जिसके पास भोजन हो, वह भी
ऐसा ही करे।"
१२ फिर उन्होंने उससे पूछा, "हे गुरु, हमें क्या
करना चाहिये?"
१३ इस पर उसने उनसे कहा, "जितना चाहिये
उससे अधिक एकत्र मत करो।"

---

*३:६ उद्धरण यशायाह ४०:३-५

१४ कुछ सैनिकों ने उससे पूछा, “और हमें क्या
करना चाहिये ?”
सो उसने उन्हें बताया, “बलपूर्वक किसी से धन
मत लो। किसी पर झूठा दोष मत लगाओ। अपने
वेतन में संतोष करो।”
१५ लोग जब बड़ी आशा के साथ बाट जोह रहे
थे और यूहन्ना के बारे में अपने मन में यह सोच
रहे थे कि कहीं यही तो मसीह नहीं है,
१६ तभी यूहन्ना ने यह कहते हुए उन सब को
उत्तर दिया : “मैं तो तुम्हें जल से बपतिस्मा देता
हूँ किन्तु वह जो मुझ से अधिक सामर्थ्यवान है, आ
रहा है, और मैं उसके जूतों की तनी खोलने योग्य
भी नहीं हूँ। वह तुम्हें पवित्र आत्मा और अग्नि
द्वारा बपतिस्मा देगा। १७ उसके हाथ में फटकने की
डाँगी है, जिससे वह अनाज को भूसे से अलग कर
अपने खलिहान में उठा कर रखता है। किन्तु वह
भूसे को ऐसी आग में झोंक देगा जो कभी नहीं
बुझने वाली।” १८ इस प्रकार ऐसे ही और बहुत से
शब्दों से वह उन्हें समझाते हुए सुसमाचार सुनाया
करता था।

यूहन्ना के कार्य की समाप्ति

१९ बाद में यूहन्ना ने उस चौथाई प्रदेश के
अधीनस्थ राजा हेरोदेस को उसके भाई की पत्नी
हिरोदिआस के साथ उसके बुरे सम्बन्धों और उसके
दूसरे बुरे कर्मो के लिए डाँटा फटकारा। २० इस पर
हेरोदेस ने यूहन्ना को बंदी बनाकर, जो कुछ कुकर्म
उसने किये थे, उनमें एक कुकर्म और जोड़ लिया।

यूहन्ना द्वारा यीशु को बपतिस्मा

(मत्ती ३ :१३-१७ ; मरकुस १ :९-११)

२१ ऐसा हुआ कि जब सब लोग बपतिस्मा ले रहे
थे तो यीशु ने भी बपतिस्मा लिया। और जब यीशु
प्रार्थना कर रहा था, तभी आकाश खुल गया।
२२ और पवित्र आत्मा एक कबूतर का देह धारण
कर उस पर नीचे उतरा और आकाशवाणी हुई कि,
“तू मेरा प्रिय पुत्र है, मैं तुझ से बहुत प्रसन्न
हूँ।”

यूसुफ की वंश परम्परा

(मत्ती १ :१-१७)

२३ यीशु ने जब अपना सेवा कार्य आरम्भ किया
तो वह लगभग तीस वर्ष का था। ऐसा सोचा गया
कि वह
एली के बेटे यूसुफ का पुत्र था।
२४ एली जो मत्तात का,
मत्तात जो लेवी का,
लेवी जो मलकी का,
मलकी जो यन्ना का,
यन्ना जो यूसुफ का,
२५ यूसुफ जो मत्तित्याह का,
मत्तित्याह जो आमोस का,
आमोस जो नहूम का,
नहूम जो असल्याह का,
असल्याह जो नोगह का,
२६ नोगह जो मात का,
मात जो मत्तित्याह का,
मत्तित्याह जो शिमी का,
शिमी जो योसेख का,
योसेख जो योदाह का,
२७ योदाह जो योनान का,
योनान जो रेसा का,
रेसा जो जरुब्बाबिल का,
जरुब्बाबिल जो शालतियेल का,
शालतियेल जो नेरी का,
२८ नेरी जो मलकी का,
मलकी जो अद्दी का,
अद्दी जो कोसाम का,
कोसाम जो इलमोदाम का,
इलमोदाम जो ऐर का,
२९ ऐर जो यहोशुआ का,
यहोशुआ जो इलाज़ार का,
इलाज़ार जो योरीम का,
योरीम जो मत्तात का,
मत्तात जो लेवी का,
३० लेवी जो शमौन का,
शमौन जो यहूदा का,
यहूदा जो यूसुफ का,
यूसुफ जो योनान का,
योनान जो इलियाकीम का,
३१ इलियाकीम जो मेलिया का,
मेलिया जो मिन्ना का,
मिन्ना जो मत्तात का,
मत्तात जो नातान का,
नातान जो दाऊद का,
३२ दाऊद जो यिशै का,
यिशै जो ओबेद का,
ओबेद जो बोअज का,
बोअज जो सलमोन का,
सलमोन जो नहशोन का,
३३ नहशोन जो अम्मीनादाब का,
अम्मीनादाब जो आदमीन का,

आदमीन जो अरनी का,
अरनी जो हिस्रोन का,
हिस्रोन जो फिरिस का,
फिरिस जो यहूदाह का,
३४ यहूदाह जो याकूब का,
याकूब जो इसहाक का,
इसहाक जो इब्राहीम का,
इब्राहीम जो तिरह का,
तिरह जो नाहोर का,
३५ नाहोर जो सरूग का,
सरूग जो रऊ का,
रऊ जो फिलिग का,
फिलिग जो एबिर का,
एबिर जो शिलह का,
३६ शिलह जो केनान का,
केनान जो अरफक्षद का,
अरफक्षद जो शेम का,
शेम जो नूह का,
नूह जो लिमिक का,
३७ लिमिक जो मथूशिलह का,
मथूशिलह जो हनोक का,
हनोक जो यिरिद का,
यिरिद जो महललेल का,
महललेल जो केनान का,
३८ केनान जो एनोश का,
एनोश जो शेत का,
शेत जो आदम का,
और आदम जो परमेश्वर का पुत्र था।

यीशु की परीक्षा

(मत्ती ४ :१-११ ; मरकुस १ :१२-१३)

४ १ पवित्र आत्मा से भावित होकर यीशु यर्दन
नदी से लौट आया। आत्मा उसे वीराने में
राह दिखाता रहा। २ वहाँ शैतान ने चालीस दिन
तक उसकी परीक्षा ली। उन दिनों यीशु बिना कुछ
खाये रहा। फिर जब वह समय पूरा हुआ तो यीशु
को बहुत भूख लगी।

३ सो शैतान ने उससे कहा, “यदि तू परमेश्वर का
पुत्र है, तो इस पत्थर से रोटी बन जाने को कह।”

४ इस पर यीशु ने उसे उत्तर दिया, “शास्त्र में
लिखा है :
‘मनुष्य केवल रोटी पर नहीं जीता।’” *

५ फिर शैतान उसे बहुत ऊँचाई पर ले गया और
पल भर में ही सारे संसार के राज्यों को उसे दिखाते
हुए, ६ शैतान ने उससे कहा, “मैं इन राज्यों का
सारा वैभव और अधिकार तुझे दे दूँगा क्योंकि वह
मुझे दिया गया है और मैं उसे जिसको चाहूँ दे
सकता हूँ। ७ सो यदि तू मेरी उपासना करे तो यह
सब तेरा हो जायेगा।”

८ यीशु ने उसे उत्तर देते हुए कहा, “शास्त्र में
लिखा है :
‘तुझे बस अपने प्रभु परमेश्वर की ही उपासना
करनी चाहिये।
तुझे केवल उसी की सेवा करनी चाहिए!’” †

९ तब वह उसे यरूशलेम ले गया और वहाँ
मन्दिर के सबसे ऊँचे शिखर पर ले जाकर खड़ा
कर दिया। और उससे बोला, “यदि तू परमेश्वर का
पुत्र है तो यहाँ से अपने आप को नीचे गिरा दे!
१० क्योंकि शास्त्र में लिखा है :
‘वह अपने स्वर्गदूतों को तेरे विषय में आज्ञा देगा
कि वे तेरी रक्षा करें।’ ‡
११ और लिखा है :
‘वे तुझे अपनी बाहों में ऐसे उठा लेंगे
कि तेरे पैर तक किसी पत्थर को न छुए।’” ¶

१२ यीशु ने उत्तर देते हुए कहा, “शास्त्र में यह
भी लिखा है :
‘तुझे अपने प्रभु परमेश्वर को परीक्षा में नहीं
डालना चाहिये।’” §
१३ सो जब शैतान उसकी सब तरह से परीक्षा ले
चुका तो उचित समय तक के लिये उसे छोड़ कर
चला गया।

यीशु के कार्य का आरम्भ

(मत्ती ४ :१२-१७ ; मरकुस १ :१४-१५)

१४ फिर आत्मा की शक्ति से पूर्ण होकर यीशु
गलील लौट आया और उस सारे प्रदेश में उसकी
चर्चाएं फैलने लगी। १५ वह उनकी आराधनालयों
में उपदेश देने लगा। सभी उसकी प्रशंसा करते
थे।

---

* ४ :४ उद्धरण व्यवस्था विवरण ८ :३
† ४ :८ उद्धरण व्यवस्था विवरण ६ :१३
‡ ४ :१० उद्धरण भजन संहिता ९१ :११
¶ ४ :११ उद्धरण भजन संहिता ९१ :१२
§ ४ :१२ उद्धरण व्यवस्था विवरण ६ :१६

यीशु का अपने देश लौटना

(मत्ती १३:५३-५८; मरकुस ६:१-६)

१६ फिर वह नासरत आया जहाँ वह पला-बढ़ा
था। और अपनी आदत के अनुसार सब्त के दिन
वह यहूदी आराधनालय में गया। जब वह पढ़ने
के लिये खड़ा हुआ १७ तो यशायाह नबी की पुस्तक
उसे दी गयी। उसने जब पुस्तक खोली तो उसे वह
स्थान मिला जहाँ लिखा था :
१८ "प्रभु का आत्मा मुझमें समाया है
उसने मेरा अभिषेक किया है ताकि मैं दीनों को
सुसमाचार सुनाऊँ।
उसने मुझे बंदियों को यह घोषित करने के लिए
कि वे मुक्त हैं,
अन्धों को यह सन्देश सुनाने को कि वे फिर दृष्टि
पायेंगे,
दलितो को छुटकारा दिलाने को और
१९ प्रभु के अनुग्रह का समय बतलाने को भेजा
है।" *
२० फिर उसने पुस्तक बंद करके सेवक को वापस
दे दी। और वह नीचे बैठ गया। आराधनालय में
सब लोगों की आँखें उसे ही निहार रही थीं। २१ तब
वह उनसे कहने लगा, "आज तुम्हारे सुनते हुए
शास्त्र का यह वचन पूरा हुआ!"
२२ हर कोई उसकी बड़ाई कर रहा था। उसके
मुख से जो सुन्दर वचन निकल रहे थे, उन पर सब
चकित थे। वे बोले, "क्या यह यूसुफ का पुत्र नहीं
है?"
२३ फिर यीशु ने उनसे कहा, "निश्चय ही तुम
मुझे यह कहावत सुनाओगे, 'अरे वैद्य, स्वयं
अपना इलाज कर। कफ़रनहूम में तेरे जिन कर्मो
के विषय में हमने सुना है, उन कर्मो को यहाँ अपने
स्वयं के नगर में भी कर!'" २४ यीशु ने तब उनसे
कहा, "मैं तुमसे सत्य कहता हूँ कि अपने नगर में
किसी नबी की मान्यता नहीं होती।
२५-२६ "मैं तुमसे सत्य कहता हूँ इस्राएल में
एलिय्याह के काल में जब आकाश जैसे मुँद गया
था और साढ़े तीन साल तक सारे देश में भयानक
अकाल पड़ा था, तब वहाँ अनगिनत विधवाएँ थीं।
किन्तु सैदा प्रदेश के सारपत नगर की एक विधवा
को छोड़ कर एलिय्याह को किसी और के पास
नहीं भेजा गया था।
२७ "और नबी एलिशा के काल में इस्राएल में
बहुत से कोढ़ी थे किन्तु उनमें से सीरिया के रहने
वाले नामान के कोढ़ी को छोड़ कर और किसी को
शुद्ध नहीं किया गया था।"
२८ सो जब यहूदी आराधनालय में लोगों ने यह
सुना तो सभी को बहुत क्रोध आया। २९ सो वे खड़े
हुए और उन्होंने उसे नगर से बाहर धकेल दिया।
वे उसे पहाड़ की उस चोटी पर ले गये जिस पर
उनका नगर बसा था ताकि वे वहाँ चट्टान से उसे
नीचे फेंक दें। ३० किन्तु वह उनके बीच से निकल कर
कहीं अपनी राह चला गया।

दुष्टात्मा से छुटकारा दिलाना

(मरकुस १:२१-२८)

३१ फिर वह गलील के एक नगर कफरनहूम
पहुँचा और सब्त के दिन लोगों को उपदेश देने
लगा। ३२ लोग उसके उपदेश से आश्चर्यचकित थे
क्योंकि उसका संदेश अधिकारपूर्ण होता था।
३३ वहीं उस आराधनालय में एक व्यक्ति था
जिसमें दुष्टात्मा समायी थी। वह ऊँचे स्वर में
चिल्लाया, ३४ "हे यीशु नासरी! तू हमसे क्या
चाहता है? क्या तू हमारा नाश करने आया है? मैं
जानता हूँ तू कौन है — तू परमेश्वर का पवित्र
पुरुष है!" ३५ यीशु ने झिड़कते हुए उससे कहा,
"चुप रह! इसमें से बाहर निकल आ!" इस पर
दुष्टात्मा ने उस व्यक्ति को लोगों के सामने एक
पटकी दी और उसे बिना कोई हानि पहुँचाए, उसमें
से बाहर निकल आयी।
३६ सभी लोग चकित थे। वे एक दूसरे से बात
करते हुए बोले, "यह कैसा वचन है? अधिकार और
शक्ति के साथ यह दुष्टात्माओं को आज्ञा देता है
और वे बाहर निकल आती हैं।" ३७ उस क्षेत्र में
आस-पास हर कहीं उसके बारे में समाचार फैलने
लगे।

रोगी स्त्री का ठीक किया जाना

(मत्ती ८:१४-१७; मरकुस १:२९-३४)

३८ तब यीशु आराधनालय को छोड़ कर शमौन
के घर चला गया। शमौन की सास को बहुत ताप
चढ़ा था। उन्होंने यीशु को उसकी सहायता करने
के लिये विनती की। ३९ यीशु उसके सिरहाने खड़ा
हुआ और उसने ताप को डाँटा। ताप ने उसे छोड़
दिया। वह तत्काल खड़ी हो गयी और उनकी सेवा
करने लगी।

*४:१९ उद्धरण यशायाह ६१:१-२; ५८:६

यीशु द्वारा बहुतों को चंगा किया जाना

४०जब सूरज ढल रहा था तो जिन के यहाँ
विभिन्न प्रकार के रोगों से ग्रस्त रोगी थे, वे
सभी उन्हें उसके पास लाये। और उसने अपना
हाथ उनमें से हर एक के सिर पर रखते हुए उन्हें
चंगा कर दिया। ४१उनमें बहुतों में से दुष्टात्माएँ
चिल्लाती हुई यह कहती बाहर निकल आयीं, "तू
परमेश्वर का पुत्र है।" किन्तु उसने उन्हें बोलने
नहीं दिया, क्योंकि वे जानती थीं, "वह मसीह है।"

यीशु की अन्य नगरों को यात्रा

(मरकुस १:३५-३९)

४२जब पौ फटी तो वह वहाँ से किसी एकांत
स्थान को चला गया। किन्तु भीड़ उसे खोजते
खोजते वहीं जा पहुँची जहाँ वह था। उन्होंने
प्रयत्न किया कि वह उन्हें छोड़ कर न जाये।
४३किन्तु उसने उनसे कहा, "परमेश्वर के राज्य
का सुसमाचार मुझे दूसरे नगरों में भी पहुँचाना है
क्योंकि मुझे इसीलिए भेजा गया है।"
४४और इस प्रकार वह यहूदिया की
आराधनालयों में निरन्तर उपदेश करने लगा।

यीशु के प्रथम शिष्य

(मत्ती ४:१८-२२; मरकुस १:१६-२०)

५ १बात यूँ हुई कि भीड़ में लोग यीशु को चारों
ओर से घेर कर जब परमेश्वर का वचन सुन
रहे थे और वह गन्नेसरत नामक झील के किनारे
खड़ा था। २तभी उसने झील के किनारे दो नाव
देखीं। उनमें से मछुआरे निकल कर अपने जाल
साफ कर रहे थे। ३यीशु उनमें से एक नाव पर चढ़
गया जो कि शमौन की थी, और उसने नाव को
किनारे से कुछ हटा लेने को कहा। फिर वह नाव
पर बैठ गया और वहीं नाव पर से जनसमूह को
उपदेश देने लगा।
४जब वह उपदेश समाप्त कर चुका तो उसने
शमौन से कहा, "गहरे पानी की तरफ बढ़ और
मछली पकड़ने के लिए अपने जाल डालो।"
५शमौन बोला, "स्वामी, हमने सारी रात कठिन
परिश्रम किया है, पर हमें कुछ नहीं मिल पाया,
किन्तु तू कह रहा है इसलिए मैं जाल डाले
देता हूँ।" ६जब उन्होंने जाल फेंके तो बड़ी
संख्या में मछलियाँ पकड़ी गयीं। उनके जाल जैसे
फट रहे थे। ७सो उन्होंने दूसरी नावों में बैठे
अपने साथियों को संकेत देकर सहायता के लिये
बुलाया। वे आ गये और उन्होंने दोनों नावों पर
इतनी मछलियाँ लाद दीं कि वे डूबने लगीं।
८-९जब शमौन पतरस ने यह देखा तो वह यीशु
के चरणों में गिर कर बोला, "प्रभु मैं एक पापी
मनुष्य हूँ। तू मुझसे दूर रह।" उसने यह इसलिये
कहा था कि इतनी मछलियाँ बटोर पाने के कारण
उसे और उसके सभी साथियों को बहुत अचरज हो
रहा था। १०जब्दी के पुत्र याकूब और यूहन्ना को
भी, (जो शमौन के साथी थे) बहुत आश्चर्य-चकित
हुए।
सो यीशु ने शमौन से कहा, "डर मत, क्योंकि
अब से आगे तू मनुष्यों को बटोरा करेगा!"
११फिर वे अपनी नावों को किनारे पर लाये और
सब कुछ त्याग कर यीशु के पीछे चल पड़े।

कोढ़ी का शुद्ध किया जाना

(मत्ती ८:१-४; मरकुस १:४०-४५)

१२सो ऐसा हुआ कि जब यीशु एक नगर में था
तभी वहाँ कोढ़ से पूरी तरह ग्रस्त एक कोढ़ी भी
था। जब उसने यीशु को देखा तो दण्डवत प्रणाम
करके उससे प्रार्थना की, "प्रभु, यदि तू चाहे तो
मुझे ठीक कर सकता है।"
१३इस पर यीशु ने अपना हाथ बढ़ा कर कोढ़ी
को यह कहते हुए छुआ, "मैं चाहता हूँ, ठीक हो
जा!" और तत्काल उसका कोढ़ जाता रहा। १४फिर
यीशु ने उसे आज्ञा दी कि वह इस विषय में किसी
से कुछ न कहे। उससे कहा, "याजक के पास जा
और उसे अपने आप को दिखा और मूसा के आदेश
के अनुसार भेंट चढ़ा ताकि लोगों को तेरे ठीक होने
का प्रमाण मिले।"
१५किन्तु यीशु के विषय में समाचार और
अधिक गति से फैल रहे थे। और लोगों के दल
इकट्ठे होकर उसे सुनने और अपनी बीमारियों से
छुटकारा पाने उसके पास आ रहे थे। १६किन्तु यीशु
प्रायः प्रार्थना करने कहीं एकान्त वन में चला
जाया करता था।

लकवे के रोगी को चंगा करना

(मत्ती ९:१-८; मरकुस २:१-१२)

१७ऐसा हुआ कि एक दिन जब वह उपदेश दे
रहा था तो वहाँ फ़रीसी और यहूदी धर्मशास्त्री
भी बैठे थे। वे गलील और यहूदिया के हर नगर
तथा यरूशलेम से आये थे। लोगों को ठीक करने
के लिए प्रभु की शक्ति उसके साथ थी। १८तभी
कुछ लोग खाट पर लकवे के एक रोगी को लिये
उसके पास आये। वे उसे भीतर लाकर यीशु के

सामने रखने का प्रयत्न कर रहे थे। १९ किन्तु भीड़
के कारण उसे भीतर लाने का रास्ता न पाते हुए
वे ऊपर छत पर जा चढ़े और उन्होंने उसे उसके
बिस्तर समेत छत के बीचोबीच से खपरेल हटाकर
यीशु के सामने उतार दिया। २० उनके विश्वास को
देखते हुए यीशु ने कहा, "हे मित्र, तेरे पाप क्षमा
हुए।"

२१ तब यहूदी धर्मशास्त्री और फ़रीसी आपस
में सोचने लगे, "यह कौन है जो परमेश्वर के लिए
ऐसे अपमान के शब्द बोलता है? परमेश्वर को
छोड़ कर दूसरा कौन है जो पाप क्षमा कर सकता
है?"

२२ किन्तु यीशु उनके सोच-विचार को समझ
गया। सो उत्तर में उसने उनसे कहा, "तुम अपने
मन में ऐसा क्यों सोच रहे हो? २३ सरल क्या है?
यह कहना कि 'तेरे पाप क्षमा हुए' या यह कहना
कि 'उठ और चल दे?' २४ पर इसलिये कि तुम जान
सको कि मनुष्य के पुत्र को धरती पर पाप क्षमा
करने का अधिकार है।" उसने लकवे के मारे से
कहा, "मैं तुझसे कहता हूँ, खड़ा हो, अपना बिस्तर
उठा और घर चला जा!"

२५ सो वह तुरन्त खड़ा हुआ और उनके देखते
देखते जिस बिस्तर पर वह लेटा था, उसे उठा
कर परमेश्वर की स्तुति करते हुए अपने घर चला
गया। २६ वे सभी जो वहाँ थे आश्चर्यचकित होकर
परमेश्वर का गुणगान करने लगे। वे श्रद्धा और
विस्मय से भर उठे और बोले, "आज हमने कुछ
अद्भुत देखा है!"

लेवी (मत्ती) यीशु के पीछे चलने लगा

(मत्ती ९:९-१३; मरकुस २:१३-१७)

२७ इसके बाद यीशु चल दिया। तभी उसने चुंगी
की चौकी पर बैठे लेवी नाम के एक कर वसूलने
वाले को देखा। वह उससे बोला, "मेरे पीछे चला
आ!" २८ सो वह खड़ा हुआ और सब कुछ छोड़ कर
उसके पीछे हो लिया।

२९ फिर लेवी ने अपने घर पर यीशु के सम्मान
में एक स्वागत समारोह किया। वहाँ कर वसूलने
वालों और दूसरे लोगों का एक बड़ा जमघट उनके
साथ भोजन कर रहा था। ३० तब फरीसियों और
धर्मशास्त्रियों ने उसके शिष्यों से यह कहते
हुए शिकायत की, "तुम कर वसूलने वालों और
पापियों के साथ क्यों खाते-पीते हो?"

३१ उत्तर में यीशु ने उनसे कहा, "स्वस्थ लोगों
को नहीं, बल्कि रोगियों को चिकित्सक की
आवश्यकता होती है। ३२ मैं धर्मियों को नहीं,
बल्कि पापियों को मन फिराने के लिए बुलाने
आया हूँ।"

उपवास पर यीशु का मत

(मत्ती ९:१४-१७; मरकुस २:१८-२२)

३३ उन्होंने यीशु से कहा, "यूहन्ना के शिष्य
प्रायः उपवास रखते हैं और प्रार्थना करते हैं।
और ऐसा ही फरीसियों के अनुयायी भी करते हैं
किन्तु तेरे अनुयायी तो हर समय खाते पीते रहते
हैं।"

३४ यीशु ने उनसे पूछा, "क्या दूल्हे के अतिथि
जब तक दूल्हा उनके साथ है, उपवास करते हैं?
३५ किन्तु वे दिन भी आयेंगे जब दूल्हा उनसे छीन
लिया जायेगा। फिर उन दिनों में वे भी उपवास
करेंगे।"

३६ उसने उनसे एक दृष्टांत कथा और कही,
"कोई भी किसी नयी पोशाक से कोई टुकड़ा फाड़
कर उसे पुरानी पोशाक पर नहीं लगाता और यदि
कोई ऐसा करता है तो उसकी नयी पोशाक तो
फटेगी ही, साथ ही वह नया पैबन्द भी पुरानी
पोशाक के साथ मेल नहीं खायेगा। ३७ कोई भी
पुरानी मशकों में नयी दाखरस नहीं भरता और
यदि भरता है तो नयी दाखरस पुरानी मशकों को
फाड़ देगी। वह बिखर जायेगा और मशकें नष्ट
हो जायेंगी। ३८ लोग हमेशा नया दाखरस नयी
मशकों में भरते है। ३९ पुराना दाखरस पी कर कोई
भी नये की चाहत नहीं करता क्योंकि वह कहता
है, 'पुराना ही उत्तम है।'"

सब्त का प्रभु यीशु

(मत्ती १२:१-८; मरकुस २:२३-२८)

६ १ अब ऐसा हुआ कि सब्त के एक दिन यीशु
जब अनाज के कुछ खेतों से जा रहा था
तो उसके शिष्य अनाज की बालों को तोड़ते,
हथेलियों पर मसलते उन्हें खाते जा रहे थे। २ तभी
कुछ फरीसियों ने कहा, "जिसका सब्त के दिन
किया जाना उचित नहीं है, उसे तुम लोग क्यों कर
रहे हो?"

३ उत्तर देते हुए यीशु ने उनसे पूछा, "क्या तुमने
नहीं पढ़ा जब दाऊद और उसके साथी भूखे थे, तब
दाऊद ने क्या किया था? ४ क्या तुमने नहीं पढ़ा
कि उसने परमेश्वर के घर में घुस कर, परमेश्वर
को अर्पित रोटियाँ उठा कर खा ली थीं और उन्हें
भी दी थीं, जो उसके साथ थे? जबकि याजकों को
छोड़कर उनका खाना किसी के लिये भी उचित

नहीं ?" ५ उसने आगे कहा, "मनुष्य का पुत्र सब्त
के दिन का भी प्रभु है।"

यीशु द्वारा सब्त के दिन रोगी का अच्छा किया जाना

(मत्ती १२ :९-१४ ; मरकुस ३ :१-६)

६ दूसरे सब्त के दिन ऐसा हुआ कि वह यहूदी
आराधनालय में जाकर उपदेश देने लगा। वहीं एक
ऐसा व्यक्ति था जिसका दाहिना हाथ मुरझाया
हुआ था। ७ वहीं यहूदी धर्मशास्त्रि और फ़रीसी
यह देखने की ताक में थे कि वह सब्त के दिन किसी
को चंगा करता है कि नहीं। ताकि वे उस पर दोष
लगाने का कोई कारण पा सकें। ८ वह उनके विचारों
को जानता था, सो उसने उस मुरझाये हाथ वाले
व्यक्ति से कहा, "उठ और सब के सामने खड़ा हो
जा।" वह उठा और वहाँ खड़ा हो गया। ९ तब यीशु
ने लोगों से कहा, "मैं तुमसे पूछता हूँ सब्त के दिन
किसी का भला करना उचित है या किसी को हानि
पहुँचाना, किसी का जीवन बचाना उचित है या
किसी का जीवन नष्ट करना ?"
१० यीशु ने चारों ओर उन सब पर दृष्टि डाली
और फिर उससे कहा, "अपना हाथ सीधा फैला।"
उसने वैसा ही किया और उसका हाथ फिर से
अच्छा हो गया। ११ किन्तु इस पर आग बबूला
होकर वे आपस में विचार करने लगे कि यीशु का
क्या किया जाये ?

बारह प्रेरितों का चुना जाना

(मत्ती १० :१-४ ; मरकुस ३ :१३-१९)

१२ उन्हीं दिनों ऐसा हुआ कि यीशु प्रार्थना
करने के लिये एक पहाड़ पर गया और सारी रात
परमेश्वर की प्रार्थना करते हुए बिता दी। १३ फिर
जब भोर हुई तो उसने अपने अनुयायियों को पास
बुलाया। उनमें से उसने बारह को चुना जिन्हें उसने
"प्रेरित" नाम दिया :
१४ शमौन (जिसे उसने पतरस भी कहा)
और उसका भाई अन्द्रियास,
याकूब और
यूहन्ना,
फिलिप्पुस,
बरतुलमै,
१५ मत्ती,
थोमा,
हलफ़ई का बेटा याकूब, और
शमौन जिलौती ;
१६ याकूब का बेटा यहूदा, और
यहूदा इस्करियोती (जो विश्वासघाती बना।)

यीशु का लोगों को उपदेश देना और चंगा करना

(मत्ती ४ :२३-२५ ; ५ :१-१२)

१७ फिर यीशु उनके साथ पहाड़ी से नीचे उतर
कर समतल स्थान पर आ खड़ा हुआ। वहीं उसके
शिष्यों की भी एक बड़ी भीड़ थी। साथ ही समूचे
यहूदिया, यरूशलेम, सूर और सैदा के सागर तट
से अनगिनत लोग वहाँ आ इकट्ठे हुए। १८ वे उसे
सुनने और रोगों से छुटकारा पाने वहाँ आये थे। जो
दुष्टात्माओं से पीड़ित थे, वे भी वहाँ आकर अच्छे
हुए। १९ समूची भीड़ उसे छू भर लेने के प्रयत्न में
थी क्योंकि उसमें से शक्ति निकल रही थी और उन
सब को निरोग बना रही थी !
२० फिर अपने शिष्यों को देखते हुए वह बोला :
"धन्य हो तुम जो दीन हो,
स्वर्ग का राज्य तुम्हारा है,
२१ धन्य हो तुम, जो अभी भूखे रहे हो,
क्योंकि तुम तृप्त होगे।
धन्य हो तुम जो आज आँसू बहा रहे हो,
क्योंकि तुम आगे हँसोगे।
२२ "धन्य हो तुम, जब मनुष्य के पुत्र के
कारण लोग तुमसे घृणा करें, और तुमको बहिष्कृत
करें, और तुम्हारी निन्दा करें, तुम्हारा नाम बुरा
समझकर काट दें। २३ उस दिन तुम आनन्दित
होकर उछलना-कूदना, क्योंकि स्वर्ग में तुम्हारे
लिए बड़ा प्रतिफल है, उनके पूर्वजों ने भी
भविष्यवक्ताओं के साथ ऐसा ही किया था।
२४ "तुमको धिक्कार है, ओ धनिक जन,
क्योंकि तुमको पूरा सुख चैन मिल रहा है।
२५ तुम्हें धिक्कार है, जो अब भरपेट हो
क्योंकि तुम भूखे रहोगे।
तुम्हें धिक्कार है, जो अब हँस रहे हो,
क्योंकि तुम शोकित होओगे और रोओगे।
२६ "तुम्हे धिक्कार है, जब तुम्हारी प्रशंसा हो
क्योंकि उनके पूर्वजों ने भी झूठे नबियों के साथ
ऐसा व्यवहार किया।

अपने बैरी से भी प्रेम करो

(मत्ती ५ :३८-४८ ; ७ :१२a)

२७ "ओ सुनने वालो ! मैं तुमसे कहता हूँ अपने
शत्रु से भी प्रेम करो। जो तुमसे घृणा करते हैं,
उनके साथ भी भलाई करो। २८ उन्हें भी आशीर्वाद
दो, जो तुम्हें शाप देते हैं। उनके लिए भी प्रार्थना
करो जो तुम्हारे साथ अच्छा व्यवहार नहीं करते।
२९ यदि कोई तुम्हारे गाल पर थप्पड़ मारे तो

दूसरा गाल भी उसके आगे कर दो। यदि कोई
तुम्हारा कोट ले ले तो उसे अपना कुर्ता भी ले लेने
दो। ३० जो कोई तुमसे माँगे, उसे दो। यदि कोई
तुम्हारा कुछ रख ले तो उससे वापस मत माँगो।
३१ तुम अपने लिये जैसा व्यवहार दूसरों से चाहते
हो, तुम्हें दूसरों के साथ वैसा ही व्यवहार करना
चाहिये।
३२ "यदि तुम बस उन्हीं को प्यार करते हो, जो
तुम्हें प्यार करते हैं, तो इसमें तुम्हारी क्या बड़ाई?
क्योंकि अपने से प्रेम करने वालों से तो पापी तक
भी प्रेम करते हैं। ३३ यदि तुम बस उन्हीं का भला
करो, जो तुम्हारा भला करते हैं, तो तुम्हारी क्या
बड़ाई? ऐसा तो पापी तक करते हैं। ३४ यदि तुम
केवल उन्हीं को उधार देते हो, जिनसे तुम्हें वापस
मिल जाने की आशा है, तो तुम्हारी क्या बड़ाई?
ऐसे तो पापी भी पापियों को देते हैं कि उन्हें उनकी
पूरी रकम वापस मिल जाये।
३५ "बल्कि अपने शत्रु को भी प्यार करो, उनके
साथ भलाई करो। कुछ भी लौट आने की आशा
छोड़ कर उधार दो। इस प्रकार तुम्हारा प्रतिफल
महान होगा और तुम परम परमेश्वर की संतान
बनोगे क्योंकि परमेश्वर अकृतज्ञों और दुष्ट लोगों
पर भी दया करता है। ३६ जैसे तुम्हारा परम पिता
दयालु है, वैसे ही तुम भी दयालु बनो।

अपने आप को जानो

(मत्ती ७:१-५)

३७ "किसी को दोषी मत कहो तो तुम्हें भी दोषी
नहीं कहा जायेगा। किसी का खंडन मत करो
तो तुम्हारा भी खंडन नहीं किया जायेगा। क्षमा
करो, तुम्हें भी क्षमा मिलेगी। ३८ दूसरों को दो,
तुम्हे भी दिया जायेगा। वे पूरा नाप दबा-दबा कर
और हिला-हिला कर बाहर निकलता हुआ तुम्हारी
झोली में उडेलेंगे क्योंकि जिस नाप से तुम दूसरों
को नापते हो, उसी से तुम्हें भी नापा जायेगा।"
३९ उसने उनसे एक दृष्टान्त कहा, "क्या कोई
अन्धा किसी दूसरे अन्धे को राह दिखा सकता है?
क्या वे दोनों ही किसी गढ़े में नहीं जा गिरेंगे?
४० कोई भी विद्यार्थी अपने पढ़ाने वाले से बड़ा
नहीं हो सकता, किन्तु जब कोई व्यक्ति पूरी तरह
कुशल हो जाता है तो वह अपने गुरु के समान बन
जाता है।
४१ "तू अपने भाई की आँख में कोई तिनके को
क्यों देखता है और अपनी आँख का लट्ठा भी
तुझे नहीं सूझता? ४२ सो अपने भाई से तू कैसे कह
सकता है: 'बंधु, तू अपनी आँख का तिनका मुझे
निकालने दे।' जब तू अपनी आँख के लट्ठे तक
को नहीं देखता! अरे कपटी, पहले अपनी आँख का
लट्ठा दूर कर, तब तुझे अपने भाई की आँख का
तिनका बाहर निकालने के लिये दिखाई दे पायेगा।

दो प्रकार के फल

(मत्ती ७:१७-२०; १२:३४b-३५)

४३ "कोई भी ऐसा उत्तम पेड़ नहीं है जिस पर
बुरा फल लगता हो। न ही कोई ऐसा बुरा पेड़
है, जिस पर उत्तम फल लगता हो। ४४ हर पेड़
अपने फल से ही जाना जाता है। लोग कँटीली
झाड़ी से अंजीर नहीं बटोरते। न ही किसी झड़बेरी
से लोग अंगूर उतारते हैं। ४५ एक अच्छा मनुष्य
उसके मन में अच्छाइयों का जो खजाना है, उसी
से अच्छी बातें उपजाता है। और एक बुरा मनुष्य,
जो उसके मन में बुराई है, उसी से बुराई पैदा करता
है। क्योंकि एक मनुष्य मुँह से वही बोलता है, जो
उसके हृदय से उफन कर बाहर आता है।

दो प्रकार के लोग

(मत्ती ७:२४-२७)

४६ "तुम मुझे 'प्रभु, प्रभु' क्यों कहते हो और
जो मैं कहता हूँ, उस पर नहीं चलते? ४७ हर कोई
जो मेरे पास आता है और मेरा उपदेश सुनता है
और उस का आचरण करता है, वह किस प्रकार का
होता है, मैं तुम्हें बताऊँगा। ४८ वह उस व्यक्ति
के समान है जो मकान बना रहा है। उसने गहरी
खुदाई की और चट्टान पर नींव डाली। फिर जब
बाढ़ आयी और जल की धाराएं उस मकान से
टकराईं तो यह उसे हिला तक न सकीं, क्योंकि वह
बहुत अच्छी तरह बना हुआ था।
४९ "किन्तु जो मेरा उपदेश सुनता है और उस
पर चलता नहीं, वह उस व्यक्ति के समान है जिसने
बिना नींव की धरती पर मकान बनाया। जल की
धाराएं उससे टकराईं और वह तुरन्त ढह गया और
पूरी तरह तहस-नहस हो गया।"

विश्वास की शक्ति

(मत्ती ८:५-१३; यूहन्ना ४:४३-५४)

७ १ यीशु लोगों को जो सुनाना चाहता था,
उसे कह चुकने के बाद वह कफ़रनहूम चला
आया। २ वहाँ एक सेनानायक था जिसका दास
इतना बीमार था कि मरने को पड़ा था। वह सेवक
उसका बहुत प्रिय था। ३ सेनानायक ने जब यीशु
के विषय में सुना तो उसने कुछ बुजुर्ग यहूदी
नेताओं को यह विनती करने के लिये उसके पास

भेजा कि वह आकर उसके सेवक के प्राण बचा ले।
४ जब वे यीशु के पास पहुँचे तो उन्होंने सच्चे मन
से विनती करते हुए कहा, "वह इस योग्य है कि तू
उसके लिये ऐसा करे। ५ क्योंकि वह हमारे लोगों
से प्रेम करता है। उसने हमारे लिए आराधनालय
का निर्माण किया है।"
६ सो यीशु उनके साथ चल दिया। अभी जब वह
घर से अधिक दूर नहीं था, उस सेनानायक ने उसके
पास अपने मित्रों को यह कहने के लिये भेजा,
"हे प्रभु, अपने को कष्ट मत दे। क्योंकि मैं इतना
अच्छा नहीं हूँ कि तू मेरे घर में आये। ७ इसीलिये
मैंने तेरे पास आने तक की नहीं सोची। किन्तु तू
बस कह दे और मेरा सेवक स्वस्थ हो जायेगा। ८ मैं
स्वयं किसी अधिकारी के नीचे काम करने वाला
व्यक्ति हूँ और मेरे नीचे भी कुछ सैनिक हैं। मैं जब
किसी से कहता हूँ 'जा' तो वह चला जाता है और
जब दूसरे से कहता हूँ 'आ' तो वह आ जाता है।
और जब मैं अपने दास से कहता हूँ, 'यह कर' तो
वह उसे ही करता है।"
९ यीशु ने जब यह सुना तो उसे उस पर बहुत
आश्चर्य हुआ। जो जन समूह उसके पीछे चला आ
रहा था, उसकी तरफ़ मुड़ कर यीशु ने कहा, "मैं
तुम्हे बताता हूँ ऐसा विश्वास मुझे इस्राएल में
भी कहीं नहीं मिला।"
१० फिर भेजे हुए वे लोग जब वापस घर पहुँचे तो
उन्होंने उस सेवक को निरोग पाया।

मृतक को जीवन-दान

११ फिर ऐसा हुआ कि यीशु नाइन नाम के एक
नगर को चला गया। उसके शिष्य और एक बड़ी
भीड़ उसके साथ थी। १२ वह जैसे ही नगर-द्वार के
निकट आया तो वहाँ से एक मुर्दे को ले जाया जा
रहा था। वह अपनी विधवा माँ का एकलौता बेटा
था। सो नगर के अनगिनत लोगों की भीड़ उसके
साथ थी। १३ जब प्रभु ने उसे देखा तो उसे उस पर
बहुत दया आयी। वह बोला, "रो मत।" १४ फिर
वह आगे बढ़ा और उसने ताबूत को छुआ वे लोग
जो ताबूत को ले जा रहे थे, निश्चल खड़े थे। यीशु
ने कहा, "नवयुवक, मैं तुझसे कहता हूँ, खड़ा हो
जा!" १५ सो वह मरा हुआ आदमी उठ बैठा और
बोलने लगा। यीशु ने उसे उसकी माँ को वापस
लौटा दिया।
१६ और फिर वे सभी श्रद्धा और विस्मय से भर
उठे। और यह कहते हुए परमेश्वर की महिमा करने
लगे कि "हमारे बीच एक महान नबी प्रकट हुआ
है।" और कहने लगे, "परमेश्वर अपने लोगों की
सहायता के लिये आ गया है।"
१७ यीशु का यह समाचार यहूदिया और
आसपास के गाँवों में सब कहीं फैल गया।

यूहन्ना का प्रश्न
(मत्ती ११:२-१९)

१८ इन सब बातों के विषय में यूहन्ना के
अनुयायियों ने उसे सब कुछ जा बताया। सो
यूहन्ना ने अपने दो शिष्यों को बुलाकर १९ उन्हें
प्रभु से यह पूछने को भेजा: "क्या तू वही है, जो
आने वाला है या हम किसी और की बाट जोहें?"
२० फिर वे लोग जब यीशु के पास पहुँचे तो
उन्होंने कहा, "बपतिस्मा देने वाले यूहन्ना ने हमें
तुझसे यह पूछने भेजा है: 'क्या तू वही है जो आने
वाला है या हम किसी और की बाट जोहें?'"
२१ उसी समय उसने बहुत से रोगियों को निरोग
किया और उन्हें वेदनाओं तथा दुष्टात्माओं से
छुटकारा दिलाया। और बहुत से अंधों को आँखें
दीं। २२ फिर उसने उन्हें उत्तर दिया, "जाओ और
जो तुमने देखा है और सुना है, उसे यूहन्ना को
बताओ: अंधे लोग फिर देख रहे हैं, लँगड़े लूले
चल फिर रहे हैं और कोढ़ी शुद्ध हो गये हैं। बहरे
सुन पा रहे हैं और मुर्दे फिर जिलाये जा रहे हैं।
और धनहीन लोगों को सुसमाचार सुनाया जा रहा
है। २३ वह व्यक्ति धन्य है जिसे मुझे स्वीकार करने
में कोई समस्या नहीं।"
२४ जब यूहन्ना का संदेश लाने वाले चले गये
तो यीशु ने भीड़ में लोगों को यूहन्ना के बारे
में बताना प्रारम्भ किया: "तुम बियाबान जंगल
में क्या देखने गये थे? क्या हवा में झूलता कोई
सरकंडा? नहीं? २५ फिर तुम क्या देखने गये थे?
क्या कोई पुरुष जिसने बहुत उत्तम वस्त्र पहने
हों? नहीं, वे लोग जो उत्तम वस्त्र पहनते हैं और
जो विलास का जीवन जीते हैं, वे तो राज-भवनों में
ही पाये जाते हैं। २६ किन्तु बताओ तुम क्या देखने
गये थे? क्या कोई नबी? हाँ, मैं तुम्हें बताता हूँ कि
तुमने जिसे देखा है, वह किसी नबी से कहीं अधिक
है। २७ यह वही है जिसके विषय में लिखा गया है:

'देख मैं तुझसे पहले ही अपना दूत भेज रहा हूँ,
वह तुझसे पहले ही राह तैयार करेगा।' *

२८ मैं तुम्हें बताता हूँ कि किसी स्त्री से पैदा हुओं
में यूहन्ना से महान् कोई नहीं है। किन्तु फिर भी

---

*७:२७ उद्धरण मलाकी ३:१

परमेश्वर के राज्य का छोटे से छोटा व्यक्ति भी
उससे बड़ा है।”
२९ (तब हर किसी ने, यहाँ तक कि कर वसूलने
वालों ने भी यूहन्ना को सुन कर उसका बपतिस्मा
लेकर यह मान लिया कि परमेश्वर का मार्ग सत्य
है। ३० किन्तु फरीसियों और व्यवस्था के जानकारों
ने उसका बपतिस्मा न लेकर उनके सम्बन्ध में
परमेश्वर की इच्छा को नकार दिया।)
३१ “तो फिर इस पीढ़ी के लोगों की तुलना मैं
किस से करूँ कि वे कैसे हैं? ३२ वे बाज़ार में बैठे
उन बच्चों के समान हैं जो एक दूसरे से पुकार कर
कहते है:

‘हमने तुम्हारे लिये बाँसुरी बजायी पर
तुम नहीं नाचे।
हमने तुम्हारे लिए शोक-गीत
गाया पर तुम नहीं रोये।’

३३ क्योंकि बपतिस्मा देने वाला यूहन्ना आया
जो न तो रोटी खाता था और न ही दाखरस
पीता था और तुम कहते हो, ‘उसमें दुष्टात्मा है।’
३४ फिर खाते पीते हुए मनुष्य का पुत्र आया, पर
तुम कहते हो, ‘देखो यह पेटू है, पियक्कड़ है,
कर वसूलने वालों और पापियों का मित्र है।’
३५ बुद्धि की उत्तमता तो उसके परिणाम से ही
सिद्ध होती है।”

शमौन फ़रीसी

३६ एक फ़रीसी ने अपने साथ खाने पर उसे
निमंत्रित किया। सो वह फ़रीसी के घर गया और
उसके यहाँ भोजन करने बैठा।
३७ वहीं नगर में उन दिनों एक पापी स्त्री थी,
उसे जब यह पता लगा कि वह एक फ़रीसी के घर
भोजन कर रहा है तो वह संगमरमर के एक पात्र में
इत्र लेकर आयी। ३८ वह उसके पीछे उसके चरणों
में खड़ी थी। वह रो रही थी। अपने आँसुओं से वह
उसके पैर भिगोने लगी। फिर उसने पैरों को अपने
बालों से पोंछा और चरणों को चूम कर उस पर
इत्र उँड़ेल दिया।
३९ उस फ़रीसी ने जिसने यीशु को अपने घर
बुलाया था, यह देखकर मन ही मन सोचा, “यदि
यह मनुष्य नबी होता तो जान जाता कि उसे छूने
वाली यह स्त्री कौन है और कैसी है? वह जान
जाता कि यह तो पापिन है।”
४० उत्तर में यीशु ने उससे कहा, “शमौन, मुझे
तुझ से कुछ कहना है।”
वह बोला, “गुरु, कह।”
४१ यीशु ने कहा, “किसी साहूकार के दो कर्ज़दार
थे। एक पर उसके पाँच सौ चाँदी के सिक्के
*निकलते थे और दूसरे पर पचास। ४२ क्योंकि वे
कर्ज़ नहीं लौटा पाये थे इसलिये उसने दया पूर्वक
दोनों के कर्ज़ माफ़ कर दिये। अब बता दोनों में से
उसे अधिक प्रेम कौन करेगा?”
४३ शमौन ने उत्तर दिया, “मेरा विचार है, वही
जिसका उसने अधिक कर्ज़ छोड़ दिया।”
यीशु ने कहा, “तूने उचित न्याय किया।”
४४ फिर उस स्त्री की तरफ़ मुड़ कर वह शमौन
से बोला, “तू इस स्त्री को देख रहा है? मैं तेरे घर
में आया, तूने मेरे पैर धोने को मुझे जल नहीं दिया
किन्तु इसने मेरे पैर आँसुओं से तर कर दिये। और
फिर उन्हें अपने बालों से पोंछा। ४५ तूने स्वागत
में मुझे नहीं चूमा किन्तु यह जब से मैं भीतर आया
हूँ, मेरे पैरों को निरन्तर चूमती रही है। ४६ तूने मेरे
सिर पर तेल का अभिषेक नहीं किया, किन्तु इसने
मेरे पैरों पर इत्र छिड़का। ४७ इसीलिये मैं तुझे
बताता हूँ कि इसका अगाध प्रेम दर्शाता है कि
इसके बहुत से पाप क्षमा कर दिये गये हैं। किन्तु
वह जिसे थोड़े पापों की क्षमा मिली, वह थोड़ा
प्रेम करता है।”
४८ तब यीशु ने उस स्त्री से कहा, “तेरे पाप
क्षमा कर दिये गये हैं।”
४९ फिर जो उसके साथ भोजन कर रहे थे, वे मन
ही मन सोचने लगे, “यह कौन है जो पापों को भी
क्षमा कर देता है?”
५० तब यीशु ने उस स्त्री से कहा, “तेरे विश्वास
ने तेरी रक्षा की है। शान्ति के साथ जा।”

यीशु अपने शिष्यों के साथ

८ १ इसके बाद ऐसा हुआ कि यीशु परमेश्वर
के राज्य का सुसमाचार लोगों को सुनाते
हुए नगर-नगर और गाँव-गाँव घूमने लगा। उसके
बारहों शिष्य भी उसके साथ हुआ करते थे।
२ उसके साथ कुछ स्त्रियाँ भी थीं जिन्हें उसने
रोगों और दुष्टात्माओं से छुटकारा दिलाया था।
इनमें मरियम मग्दलीनी नाम की एक स्त्री थी
जिसे सात दुष्टात्माओं से छुटकारा मिला था।
३ (हेरोदेस के प्रबन्ध अधिकारी) खुज़ा की पत्नी
योअन्ना भी इन्हीं में थी। साथ ही सुसन्नाह तथा
और बहुत सी स्त्रियाँ भी थीं। ये स्त्रियाँ अपने

*७:४१ चाँदी के सिक्के या “दीनारी,” रोमन सिक्के जो कि एक दिन की औसत मज़दूरी थी।

ही साधनों से यीशु और उसके शिष्यों की सेवा का
प्रबन्ध करती थीं।

बीज बोने की दृष्टान्त कथा

(मत्ती १३ :१-१७ ; मरकुस ४ :१-१२)

[४] जब नगर-नगर से आकर लोगों की बड़ी भीड़
उसके यहाँ एकत्र हो रही थी, तो उसने उनसे एक
दृष्टान्त कथा कही :
[५] "एक किसान अपने बीज बोने निकला। जब
उसने बीज बोये तो कुछ बीज राह किनारे जा पड़े
और पैरों तले रूँद गये। और चिड़ियाँए उन्हें चुग
गयीं। [६] कुछ बीज चट्टानी धरती पर गिरे, वे जब
उगे तो नमी के बिना मुरझा गये। [७] कुछ बीज
कँटीली झाड़ियों में गिरे। काँटों की बढ़वार भी
उनके साथ हुई और काँटों ने उन्हें दबोच लिया।
[८] और कुछ बीज अच्छी धरती पर गिरे। वे उगे
और उन्होंने सौ गुनी अधिक फसल दी।"
ये बातें बताते हुए उसने पुकार कर कहा,
"जिसके पास सुनने को कान हैं, वह सुन ले।"
[९] उसके शिष्यों ने उससे पूछा, "इस दृष्टान्त
कथा का क्या अर्थ है ?"
[१०] सो उसने बताया, "परमेश्वर के राज्य के
रहस्य जानने की सुविधा तुम्हें दी गयी है किन्तु
दूसरों को यह रहस्य दृष्टान्त कथाओं के द्वारा दिये
गये हैं ताकि:

'वे देखते हुए भी
न देख पायें
और सुनते हुए भी
न समझ पायें।' *

बीज बोने के दृष्टान्त की व्याख्या

(मत्ती १३ :१८-२३ ; मरकुस ४ :१३-२०)

[११] "इस दृष्टान्त कथा का अर्थ यह है : बीज
परमेश्वर का वचन है। [१२] वे बीज जो राह किनारे
गिरे थे, वे वह व्यक्ति हैं जो जब वचन को सुनते
हैं, तो शैतान आता है और वचन को उनके मन
से निकाल ले जाता है ताकि वे विश्वास न कर
पायें और उनका उद्धार न हो सके। [१३] वे बीज जो
चट्टानी धरती पर गिरे थे उनका अर्थ है, वह
व्यक्ति जो जब वचन को सुनते हैं तो उसे आनन्द
के साथ अपनाते हैं। किन्तु उनके भीतर उसकी जड़
नहीं जम पाती। वे कुछ समय के लिये विश्वास
करते हैं किन्तु परीक्षा की घड़ी में वे डिग जाते हैं।
[१४] "और जो बीज काँटो में गिरे, उसका अर्थ है,
वह व्यक्ति जो वचन को सुनते हैं किन्तु जब वह
अपनी राह चलने लगते हैं तो चिन्ताएँ धन-दौलत
और जीवन के भोग विलास उसे दबा देते हैं, जिससे
उन पर कभी पकी फसल नहीं उतरती। [१५] और
अच्छी धरती पर गिरे बीज से अर्थ है वे व्यक्ति
जो अच्छे और सच्चे मन से जब वचन को सुनते
हैं तो उसे धारण भी करते हैं। फिर अपने धैर्य के
साथ वह उत्तम फल देते हैं।

अपने सत्य का उपयोग करो

(मरकुस ४ :२१-२५)

[१६] "कोई भी किसी दिये को बर्तन के नीचे ढक
देने को नहीं जलाता। या उसे बिस्तर के नीचे
नहीं रखता। बल्कि वह उसे दीवट पर रखता है
ताकि जो भीतर आयें प्रकाश देख सकें। [१७] न कोई
गुप्त बात है जो जानी नहीं जाएगी और कुछ भी
ऐसा छिपा नहीं है जो प्रकाश में नहीं आयेगा।
[१८] इसलिये ध्यान से सुनो क्योंकि जिसके पास है
उसे और भी दिया जायेगा और जिसके पास नहीं
है, उससे जो उसके पास दिखाई देता है, वह भी ले
लिया जायेगा।"

यीशु के अनुयायी ही उसका सच्चा परिवार है

(मत्ती १२ :४६-५० ; मरकुस ३ :३१-३५)

[१९] तभी यीशु की माँ और उसके भाई उसके पास
आये किन्तु वे भीड़ के कारण उसके निकट नहीं जा
सके। [२०] इसलिये यीशु से यह कहा गया, "तेरी
माँ और तेरे भाई बाहर खड़े हैं। वे तुझसे मिलना
चाहते हैं।"
[२१] किन्तु यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, "मेरी माँ और
मेरे भाई तो ये हैं जो परमेश्वर का वचन सुनते हैं
और उस पर चलते हैं।"

शिष्यों को यीशु की शक्ति का दर्शन

(मत्ती ८ :२३-२७ ; मरकुस ४ :३५-४१)

[२२] तभी एक दिन ऐसा हुआ कि वह अपने
शिष्यों के साथ एक नाव पर चढ़ा और उनसे बोला,
"आओ, झील के उस पार चलें।" सो उन्होंने पाल
खोल दी। [२३] जब वे नाव चला रहे थे, यीशु सो
गया। झील पर आँधी-तूफान उतर आया। उनकी
नाव में पानी भरने लगा। वे ख़तरे में पड़ गये।
[२४] सो वे उसके पास आये और उसे जगाकर कहने
लगे, "स्वामी! स्वामी! हम डूब रहे हैं।"

---

*८ :१० उद्धरण यशायाह ६ :९

फिर वह खड़ा हुआ और उसने आँधी तथा लहरों को डाँटा। वे थम गयीं और वहाँ शान्ति छा गयी। २५ फिर उसने उनसे पूछा, “कहाँ गया तुम्हारा विश्वास?”

किन्तु वे डरे हुए थे और अचरज में पड़ें थे। वे आपस में बोले, “आखिर यह है कौन जो हवा और पानी दोनों को आज्ञा देता है और वे उसे मानते हैं?”

दुष्टात्मा से छुटकारा

(मत्ती ८ :२८-३४ ; मरकुस ५ :१-२०)

२६ फिर वे गिरासेनियों के प्रदेश में पहुँचे जो गलील झील के सामने परले पार था। २७ जैसे ही वह किनारे पर उतरा, नगर का एक व्यक्ति उसे मिला। उसमें दुष्टात्माएँ समाई हुई थीं। एक लम्बे समय से उसने न तो कपड़े पहने थे और न ही वह घर में रहा था, बल्कि वह कब्रों में रहता था।

२८-२९ जब उसने यीशु को देखा तो चिल्लाते हुए उसके सामने गिर कर ऊँचे स्वर में बोला, “हे परम प्रधान (परमेश्वर) के पुत्र यीशु, तू मुझसे क्या चाहता है? मैं विनती करता हूँ मुझे पीड़ा मत पहुँचा।” उसने उस दुष्टात्मा को उस व्यक्ति में से बाहर निकलने का आदेश दिया था, क्योंकि उस दुष्टात्मा ने उस मनुष्य को बहुत बार पकड़ा था। ऐसे अवसरों पर उसे बेड़ियों से बाँध कर पहरे में रखा जाता था। किन्तु वह सदा ज़ंजीरों को तोड़ देता था और दुष्टात्मा उसे वीराने में भगाए फिरती थी।

३० सो यीशु ने उससे पूछा, “तेरा नाम क्या है?”

उसने कहा, “सेना।” (क्योंकि उसमें बहुत सी दुष्टात्माएँ समाई थीं।) ३१ वे यीशु से तर्क-वितर्क के साथ विनती कर रही थीं कि वह उन्हें गहन गर्त में जाने की आज्ञा न दे। ३२ अब देखो, तभी वहाँ पहाड़ी पर सुअरों का एक बड़ा झुण्ड चर रहा था। दुष्टात्माओं ने उससे विनती की कि वह उन्हें सुअरों में जाने दे। सो उसने उन्हें अनुमति दे दी। ३३ इस पर वे दुष्टात्माएँ उस व्यक्ति में से बाहर निकलीं और उन सुअरों में प्रवेश कर गयीं। और सुअरों का वह झुण्ड नीचे उस ढलुआ तट से लुढ़कते पुढ़कते दौड़ता हुआ झील में जा गिरा और डूब गया।

३४ झुण्ड के रखवाले, जो कुछ हुआ था, उसे देखकर वहाँ से भाग खड़े हुए। और उन्होंने इसका समाचार नगर और गाँव में जा सुनाया। ३५ फिर वहाँ के लोग जो कुछ घटा था उसे देखने बाहर आये। वे यीशु से मिले। और उन्होंने उस व्यक्ति को जिसमें से दुष्टात्माएँ निकली थीं यीशु के चरणों में बैठे पाया। उस व्यक्ति ने कपड़े पहने हुए थे और उसका दिमाग एकदम सही था। इससे वे सभी डर गये। ३६ जिन्होंने देखा, उन्होंने लोगों को बताया कि दुष्टात्मा-ग्रस्त व्यक्ति कैसे ठीक हुआ। ३७ इस पर गिरासेन प्रदेश के सभी निवासियों ने उससे प्रार्थना की कि वह वहाँ से चला जाये क्योंकि वे सभी बहुत डर गये थे।

सो यीशु नाव में आया और लौट पड़ा। ३८ किन्तु जिस व्यक्ति में से दुष्टात्माएँ निकली थीं, वह यीशु से अपने को साथ ले चलने की विनती कर रहा था। इस पर यीशु ने उसे यह कहते हुए लौटा दिया कि, ३९ “घर जा और जो कुछ परमेश्वर ने तेरे लिये किया है, उसे बता।”

सो वह लौटकर, यीशु ने उसके लिये जो कुछ किया था, उसे सारे नगर में सबसे कहता फिरा।

रोगी स्त्री का अच्छा होना और मृत लड़की को जीवनदान

(मत्ती ९ :१८-२६ ; मरकुस ५ :२१-४३)

४० अब देखो जब यीशु लौटा तो जन समूह ने उसका स्वागत किया क्योंकि वे सभी उसकी प्रतीक्षा में थे। ४१ तभी याईर नाम का एक व्यक्ति वहाँ आया। वह वहाँ के यहूदी आराधनालय का मुखिया था। वह यीशु के चरणों में गिर पड़ा और उससे अपने घर चलने की विनती करने लगा। ४२ क्योंकि उसके बारह साल की एक एकलौती बेटी थी, वह मरने वाली थी।

सो यीशु जब जा रहा था तो भीड़ उसे कुचले जा रही थी। ४३ वहीं एक स्त्री थी जिसे बारह साल से खून बह रहा था। जो कुछ उसके पास था, उसने चिकित्सकों पर खर्च कर दिया था, पर वह किसी से भी ठीक नहीं हो पायी थी। *४४ वह उसके पीछे आयी और उसने उसके चोगे की कन्नी छू ली। और उसका खून जाना तुरन्त रुक गया। ४५ तब यीशु ने पूछा, “वह कौन है जिसने मुझे छुआ है?”

जब सभी मना कर रहे थे, पतरस बोला, “स्वामी, सभी लोगों ने तो तुझे घेर रखा है और वे सभी तो तुझ पर गिर पड़ रहे है।”

४६ किन्तु यीशु ने कहा, “किसी ने मुझे छुआ है क्योंकि मुझे लगा है जैसे मुझ में से शक्ति निकली हो।” ४७ उस स्त्री ने जब देखा कि वह छुप नहीं

*८ :४३ उसने … था कुछ यूनानी प्रतियों में यह शब्द नहीं है।

पायी है, तो वह काँपती हुई आयी और यीशु के
सामने गिर पड़ी। वहाँ सभी लोगों के सामने उसने
बताया कि उसने उसे क्यों छुआ था। और कैसे
तत्काल वह अच्छी हो गयी। ४८ इस पर यीशु ने
उससे कहा, “पुत्री, तेरे विश्वास ने तेरा उद्धार
किया है। चैन से जा।”
४९ वह अभी बोल ही रहा था कि यहूदी
आराधनालय के मुखिया के घर से वहाँ कोई आया
और बोला, “तेरी बेटी मर चुकी है। सो गुरु को अब
और कष्ट मत दे।”
५० यीशु ने यह सुन लिया। सो वह उससे बोला,
“डर मत! विश्वास रख। वह बच जायेगी।”
५१ जब यीशु उस घर में आया तो उसने अपने
साथ पतरस, यूहन्ना, याकूब और बच्ची के माता-
पिता को छोड़ कर किसी और को अपने साथ
भीतर नहीं आने दिया। ५२ सभी लोग उस लड़की
के लिये रो रहे थे और विलाप कर रहे थे। यीशु
बोला, “रोना बंद करो। यह मरी नहीं है, बल्कि सो
रही है।”
५३ इस पर लोगों ने उसकी हँसी उड़ाई। क्योंकि
वे जानते थे कि लड़की मर चुकी है। ५४ किन्तु यीशु
ने उसका हाथ पकड़ा और पुकार कर कहा, “बच्ची,
खड़ी हो जा!” ५५ उसकी आत्मा लौट आयी, और
वह तुरंत उठ बैठी। यीशु ने आज्ञा दी, “इसे कुछ
खाने को दिया जाये।” ५६ इस पर लड़की के माता
पिता को बहुत अचरज हुआ किन्तु यीशु ने उन्हें
आदेश दिया कि जो घटना घटी है, उसे वे किसी
को न बतायें।

यीशु द्वारा बारह शिष्यों का भेजा जाना

(मत्ती १० :५-१५ ; मरकुस ६ :७-१३)

९ १ फिर यीशु ने बारहों शिष्यों को एक साथ
बुलाया और उन्हें दुष्टात्माओं से छुटकारा
दिलाने का अधिकार और शक्ति प्रदान की। उसने
उन्हें रोग दूर करने की शक्ति भी दी। २ फिर उसने
उन्हें परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार सुनाने
और रोगियों को चंगा करने के लिये बाहर भेजा।
३ उसने उनसे कहा, “अपनी यात्रा के लिये वे कुछ
साथ न लें: न लाठी, न झोला, न रोटी, न चाँदी
और न कोई अतिरिक्त वस्त्र। ४ तुम जिस किसी
घर के भीतर जाओ, वहीं ठहरो। और जब तक विदा
लो, वहीं ठहरे रहो। ५ और जहाँ कहीं लोग तुम्हारा
स्वागत न करें तो जब तुम उस नगर को छोड़ो तो
उनके विरुद्ध गवाही के रूप में अपने पैरों की धूल
झाड़ दो।”
६ सो वहाँ से चल कर वे हर कहीं सुसमाचार का
उपदेश देते और लोगों को चंगा करते सभी गाँवों
से होते हुए यात्रा करने लगे।

हेरोदेस की भ्रान्ति

(मत्ती १४ :१-१२ ; मरकुस ६ :१४-२९)

७ अब जब एक चौथाई देश के राजा हेरोदेस ने,
जो कुछ हुआ था, उसके बारे में सुना तो वह चिंता
में पड़ गया क्योंकि कुछ लोगों के द्वारा कहा जा
रहा था, “यूहन्ना को मरे हुओं में से जिला दिया
गया है।” ८ दूसरे कह रहे थे, “एलिय्याह प्रकट
हुआ है।” कुछ और कह रहे थे, “पुराने युग का
कोई नबी जी उठा है।” ९ किन्तु हेरोदेस ने कहा,
“मैंने यूहन्ना का तो सिर कटवा दिया था, फिर यह
है कौन जिसके बारे में मैं ऐसी बातें सुन रहा हूँ?”
सो हेरोदेस उसे देखने का जतन करने लगा।

पाँच हज़ार से अधिक का भोज

(मत्ती १४ :१३-२१ ; मरकुस
६ :३०-४४ ; यूहन्ना ६ :१-१४)

१० फिर जब प्रेरित लौट कर आये तो उन्होंने
जो कुछ किया था, सब यीशु को बताया। सो वह
उन्हें वहाँ से अपने साथ लेकर चुपचाप बैतसैदा
नामक नगर को चला गया। ११ पर भीड़ को पता
चल गया सो वह भी उसके पीछे हो ली। यीशु
ने उनका स्वागत किया और परमेश्वर के राज्य
के विषय में उन्हें बताया। और जिन्हें उपचार की
आवश्यकता थी, उन्हें चंगा किया।
१२ जब दिन ढलने लग रहा था तो वे बारहों
उसके पास आये और बोले, “भीड़ को विदा कर
ताकि वे आसपास के गाँवों और खेतों में जाकर
आसरा और भोजन पा सकें क्योंकि हम यहाँ सुदूर
निर्जन स्थान में हैं।”
१३ किन्तु उसने उनसे कहा, “तुम ही इन्हें खाने
को कुछ दो।”
वे बोले, “हमारे पास बस पाँच रोटियों और दो
मछलियों को छोड़कर और कुछ भी नहीं है। तू
यह तो नहीं चाहता है कि हम जाएँ और इन सब के
लिए भोजन मोल लेकर आएँ।” १४ (वहाँ लगभग
पाँच हजार पुरुष थे।)
किन्तु यीशु ने अपने शिष्यों से कहा, “उन्हें
पचास पचास के समूहों में बैठा दो।”
१५ सो उन्होंने वैसा ही किया और हर किसी को
बैठा दिया। १६ फिर यीशु ने पाँच रोटियों और दो
मछलियों को लेकर स्वर्ग की ओर देखते हुए उनके
लिए परमेश्वर को धन्यवाद दिया और फिर उनके

टुकड़े करते हुए उन्हें अपने शिष्यों को दिया कि वे
लोगों को परोस दें। १७ तब सब लोग खाकर तृप्त
हुए और बचे हुए टुकड़ों से उसके शिष्यों ने बारह
टोकरियाँ भरीं।

यीशु ही मसीह है

(मत्ती १६ :१३-१९ ; मरकुस ८ :२७-२९)

१८ हुआ यह कि जब यीशु अकेले प्रार्थना कर
रहा था तो उसके शिष्य भी उसके साथ थे। सो
यीशु ने उनसे पूछा, "लोग क्या कहते हैं कि मैं
कौन हूँ ?"

१९ उन्होंने उत्तर दिया, "बपतिस्मा देने वाला
यूहन्ना, कुछ कहते हैं एलिय्याह किन्तु कुछ दूसरे
कहते हैं प्राचीन युग का कोई नबी उठ खड़ा हुआ
है।"

२० यीशु ने उनसे कहा, "और तुम क्या कहते हो
कि मैं कौन हूँ ?"

पतरस ने उत्तर दिया, "परमेश्वर का मसीह।"

२१ किन्तु इस विषय में किसी को भी न बताने की
चेतावनी देते हुए यीशु ने उनसे कहा,

यीशु द्वारा अपनी मृत्यु की भविष्यवाणी

(मत्ती १६ :२१-२८ ; मरकुस ८ :३१-९ :१)

२२ "यह निश्चित है कि मनुष्य का पुत्र बहुत
सी यातनाएँ झेलेगा और वह बुजुर्ग यहूदी
नेताओं, याजकों और धर्मशास्त्रियों द्वारा नकारा
जाकर मरवा दिया जायेगा। और फिर तीसरे दिन
जीवित कर दिया जायेगा।"

२३ फिर उसने उन सब से कहा, "यदि कोई मेरे
पीछे चलना चाहता है तो उसे अपने आप को
नकारना होगा और उसे हर दिन अपना क्रूस
उठाना होगा। तब वह मेरे पीछे चले। २४ क्योंकि
जो कोई अपना जीवन बचाना चाहता है, वह उसे
खो बैठेगा पर जो कोई मेरे लिये अपने जीवन का
त्याग करता है, वही उसे बचा पायेगा। २५ क्योंकि
इसमें किसी व्यक्ति का क्या लाभ है कि वह सारे
संसार को तो प्राप्त कर ले किन्तु अपने आप को
नष्ट कर दे या भटक जाये। २६ जो कोई भी मेरे
शब्दों के लिये लज्जित है, उसके लिये परमेश्वर
का पुत्र भी जब अपने वैभव, अपने परमपिता
और पवित्र स्वर्गदूतों के वैभव में प्रकट होगा तो
उसके लिये लज्जित होगा। २७ किन्तु मैं सच्चाई
के साथ तुमसे कहता हूँ यहाँ कुछ ऐसे खड़े हैं,
जो तब तक मृत्यु का स्वाद नहीं चखेंगे, जब तक
परमेश्वर के राज्य को देख न लें।"

मूसा और एलिय्याह के साथ यीशु

(मत्ती १७ :१-८ ; मरकुस ९ :२-८)

२८ इन शब्दों के कहने के लगभग आठ दिन
बाद वह पतरस, यूहन्ना और याकूब को साथ
लेकर प्रार्थना करने के लिए पहाड़ के ऊपर गया।
२९ फिर ऐसा हुआ कि प्रार्थना करते हुए उसके
मुख का स्वरूप कुछ भिन्न ही हो गया और उसके
वस्त्र चमचम करते सफेद हो गये। ३० वहीं उससे
बात करते हुए दो पुरुष प्रकट हुए। वे मूसा
और एलिय्याह थे। ३१ जो अपनी महिमा के साथ
प्रकट हुए थे और यीशु की मृत्यु के विषय में बात
कर रहे थे जिसे वह यरूशलेम में पुरा करने पर
था। ३२ किन्तु पतरस और वे जो उसके साथ थे नींद
से घिरे थे। सो जब वे जागे तो उन्होंने यीशु की
महिमा को देखा और उन्होंने उन दो जनों को भी
देखा जो उसके साथ खड़े थे। ३३ और फिर हुआ यूँ
कि जैसे ही वे उससे विदा ले रहे थे, पतरस ने यीशु
से कहा, "स्वामी, अच्छा है कि हम यहाँ हैं, हमें
तीन मण्डप बनाने हैं — एक तेरे लिए। एक मूसा
के लिये और एक एलिय्याह के लिये।" (वह नहीं
जानता था, वह क्या कह रहा था।)

३४ वह ये बातें कर ही रहा था कि एक बादल
उमड़ा और उसने उन्हें अपनी छाया में समेट
लिया। जैसे ही उन पर बादल छाया, वे घबरा
गये। ३५ तभी बादलों से आकाशवाणी हुई, "यह
मेरा पुत्र है, इसे मैंने चुना है, इसकी सुनो।"

३६ जब आकाशवाणी हो चुकी तो उन्होंने यीशु
को अकेले पाया। वे इसके बारे में चुप रहे। उन्होंने
जो कुछ देखा था, उस विषय में उस समय किसी
से कुछ नहीं कहा।

लड़के को दुष्टात्मा से छुटकारा

(मत्ती १७ :१४-१८ ; मरकुस ९ :१४-२७)

३७ अगले दिन ऐसा हुआ कि जब वे पहाड़ी से
नीचे उतरे तो उन्हें एक बड़ी भीड़ मिली। ३८ तभी
भीड़ में से एक व्यक्ति चिल्ला उठा, "गुरु, मैं
प्रार्थना करता हूँ कि मेरे बेटे पर अनुग्रह-दृष्टि
कर। वह मेरी एकलौती सन्तान है। ३९ अचानक
एक दुष्ट आत्मा उसे जकड़ लेती है और वह चीख
उठता है। उसे दुष्टात्मा ऐसे मरोड़ डालती है
कि उसके मुँह से झाग निकलने लगता है। वह
उसे कभी नहीं छोड़ती और सताए जा रही है।
४० मैंने तेरे शिष्यों से प्रार्थना की कि वह उसे
बाहर निकाल दें किन्तु वे ऐसा नहीं कर सके।"

४१ तब यीशु ने उत्तर दिया, "अरे अविश्वासियों
और भटकाये गये लोगों, मैं और कितने दिन तुम्हारे
साथ रहूँगा और कब तक तुम्हारे साथ रहूँगा?
अपने बेटे को यहाँ ले आ।"
४२ अभी वह लड़का आ ही रहा था कि दुष्टात्मा
ने उसे पटकी दी और मरोड़ दिया। किन्तु यीशु ने
दुष्ट आत्मा को फटकारा और लड़के को निरोग
करके वापस उसके पिता को सौंप दिया। ४३ वे सभी
परमेश्वर की इस महानता से चकित हो उठे।

यीशु द्वारा अपनी मृत्यु की चर्चा

(मत्ती १७:२२-२३; मरकुस ९:३०-३२)

यीशु जो कुछ कर रहा था उसे देखकर लोग जब
आश्चर्य कर रहे थे तभी यीशु ने अपने शिष्यों से
कहा, ४४ "अब जो मैं तुमसे कह रहा हूँ, उन बातों
पर ध्यान दो। मनुष्य का पुत्र मनुष्य के हाथों
पकड़वाया जाने वाला है।" ४५ किन्तु वे इस बात
को नहीं समझ सके। यह बात उनसे छुपी हुई थी।
सो वे उसे जान नहीं पाये। और वे उस बात के
विषय में उससे पूछने से डरते थे।

सबसे बड़ा कौन?

(मत्ती १८:१-५; मरकुस ९:३३-३७)

४६ एक बार यीशु के शिष्यों के बीच इस बात
पर विवाद छिड़ा कि उनमें सबसे बड़ा कौन है?
४७ यीशु ने जान लिया कि उनके मन में क्या विचार
हैं। सो उसने एक बच्चे को लिया और उसे अपने
पास खड़ा करके ४८ उनसे बोला, "जो कोई इस
छोटे बच्चे का मेरे नाम में सत्कार करता है, वह
मानों मेरा ही सत्कार कर रहा है। और जो कोई
मेरा सत्कार करता है, वह उसका ही सत्कार कर
रहा है जिसने मुझे भेजा है। इसीलिए जो तुममें
सबसे छोटा है, वही सबसे बड़ा है।"

जो तुम्हारा विरोधी नहीं है, वह तुम्हारा ही है

(मरकुस ९:३८-४०)

४९ यूहन्ना ने प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए
कहा, "स्वामी, हमने तेरे नाम पर एक व्यक्ति को
दुष्टात्माएँ निकालते देखा है। हमने उसे रोकने का
प्रयत्न किया, क्योंकि वह हममें से कोई नहीं है,
जो तेरा अनुसरण करते हैं।"
५० इस पर यीशु ने यूहन्ना से कहा, "उसे रोक
मत, क्योंकि जो तेरे विरोध में नहीं है, वह तेरे पक्ष
में ही है।"

एक सामरी नगर

५१ अब ऐसा हुआ कि जब उसे ऊपर स्वर्ग में ले
जाने का समय आया तो वह यरूशलेम जाने का
निश्चय कर चल पड़ा। ५२ उसने अपने दूतों को
पहले ही भेज दिया था। वे चल पड़े और उसके
लिये तैयारी करने को एक सामरी गाँव में पहुँचे।
५३ किन्तु सामरियों ने वहाँ उसका स्वागत सत्कार
नहीं किया क्योंकि वह यरूशलेम को जा रहा था।
५४ जब उसके शिष्यों याकूब और यूहन्ना ने यह
देखा तो वे बोले, "प्रभु क्या तू चाहता है कि हम
आदेश दें कि आकाश से अग्नि बरसे और उन्हें
भस्म कर दे?" [*]
५५ इस पर वह उनकी तरफ़ मुड़ा और उनको
डाँटा फटकारा, [†] ५६ फिर वे दूसरे गाँव चले गये।

यीशु का अनुसरण

(मत्ती ८:१९-२२)

५७ जब वे राह किनारे चले जा रहे थे किसी ने
उससे कहा, "तू जहाँ कहीं भी जाये, मैं तेरे पीछे
चलूँगा।"
५८ यीशु ने उससे कहा, "लोमड़ियों के पास खोह
होते हैं। और आकाश की चिड़ियाओं के भी घोंसले
होते हैं किन्तु मनुष्य के पुत्र के पास सिर टिकाने
तक को कोई स्थान नहीं है।"
५९ उसने किसी दूसरे से कहा, "मेरे पीछे हो ले।"
किन्तु वह व्यक्ति बोला, "हे प्रभु, मुझे जाने दे
ताकि मैं पहले अपने पिता को दफ़न कर आऊँ।"
६० तब यीशु ने उससे कहा, "मरे हुओं को अपने
मुर्दे गाड़ने दे, तू जा और परमेश्वर के राज्य की
घोषणा कर।"
६१ फिर किसी और ने भी कहा, "हे प्रभु, मैं तेरे
पीछे चलूँगा किन्तु पहले मुझे अपने घर वालों से
विदा ले आने दे।"
६२ इस पर यीशु ने उससे कहा, "ऐसा कोई भी
जो हल पर हाथ रखने के बाद पीछे देखता है,
परमेश्वर के राज्य के योग्य नहीं है।"

---

[*] ९:५४ कुछ यूनानी प्रतियों में यह भाग जोड़ा गया है: "जैसा कि एलिय्याह ने किया था?"

[†] ९:५५ कुछ यूनानी प्रतियों में यह भाग जोड़ा गया है: "और यीशु ने कहा, 'क्या तुम नहीं जानते कि तुम कैसी आत्मा से सम्बन्ध रखते हो? मनुष्य का पुत्र मनुष्य की आत्माओं को नष्ट करने नहीं बल्कि उनका उद्धार करने आया है।'"

यीशु द्वारा बहत्तर शिष्यों का भेजा जाना

१० १इन घटनाओं के बाद प्रभु ने बहत्तर *शिष्यों को और नियुक्त किया और फिर जिन-जिन नगरों और स्थानों पर उसे स्वयं जाना था, दो-दो करके उसने उन्हें अपने से आगे भेजा। २ वह उनसे बोला, "फसल बहुत व्यापक है किन्तु, काम करने वाले मज़दूर कम है। इसलिए फसल के प्रभु से विनती करो कि वह अपनी फसलों में मज़दूर भेजे।

३ "जाओ और याद रखो, मैं तुम्हें भेड़ियों के बीच भेड़ के मेमनों के समान भेज रहा हूँ। ४ अपने साथ न कोई बटुआ, न थैला और न ही जूते लेना। रास्ते में किसी से नमस्कार तक मत करो। ५ जिस किसी घर में जाओ, सबसे पहले कहो, 'इस घर को शान्ति मिले।' ६ यदि वहाँ कोई शान्तिपूर्ण व्यक्ति होगा तो तुम्हारी शान्ति उसे प्राप्त होगी। किन्तु यदि वह व्यक्ति शान्तिपूर्ण नहीं होगा तो तुम्हारी शान्ति तुम्हारे पास लौट आयेगी। ७ जो कुछ वे लोग तुम्हें दें, उसे खाते पीते उसी घर में ठहरो। क्योंकि मज़दूरी पर मज़दूर का हक है। घर-घर मत फिरते रहो।

८ "और जब कभी तुम किसी नगर में प्रवेश करो और उस नगर के लोग तुम्हारा स्वागत सत्कार करें तो जो कुछ वे तुम्हारे सामने परोसें बस वही खाओ। ९ उस नगर के रोगियों को निरोग करो और उनसे कहो, 'परमेश्वर का राज्य तुम्हारे निकट आ पहुँचा है।'

१० "और जब कभी तुम किसी ऐसे नगर में जाओ जहाँ के लोग तुम्हारा सम्मान न करें, तो वहाँ की गलियों में जा कर कहो, ११ 'इस नगर की वह धूल तक जो हमारे पैरों में लगी है, हम तुम्हारे विरोध में यहीं पीछे जा रहे है। फिर भी यह ध्यान रहे कि परमेश्वर का राज्य निकट आ पहुँचा है।' १२ मैं तुमसे कहता हूँ कि उस दिन उस नगर के लोगों से सदोम के लोगों की दशा कहीं अच्छी होगी।

अविश्वासियों को यीशु की चेतावनी

(मत्ती ११:२०-२४)

१३ "ओ खुराजीन, ओ बैतसैदा, तुम्हें धिक्कार है, क्योंकि जो आश्चर्यकर्म तुममें किये गए, यदि उन्हें सूर और सैदा में किया जाता, तो न जाने वे कब के टाट के शोक-वस्त्र धारण कर और राख में बैठ कर मन फिरा लेते। १४ कुछ भी हो न्याय के दिन सूर और सैदा की स्थिति तुमसे कहीं अच्छी होगी। १५ अरे कफ़रनहूम क्या तू स्वर्ग तक ऊँचा उठाया जायेगा? तू तो नीचे नरक में पड़ेगा!

१६ "शिष्यों! जो कोई तुम्हें सुनता है, मुझे सुनता है, और जो तुम्हारा निषेध करता है, वह मेरा निषेध करता है। और जो मुझे नकारता है, वह उसे नकारता है जिसने मुझे भेजा है।"

शैतान का पतन

१७ फिर वे बहत्तर आनन्द के साथ वापस लौटे और बोले, "हे प्रभु, दुष्टात्माएँ तक तेरे नाम में हमारी आज्ञा मानती हैं!"

१८ इस पर यीशु ने उनसे कहा, "मैंने शैतान को आकाश से बिजली के समान गिरते देखा है। १९ सुनो! साँपों और बिच्छुओं को पैरों तले रौंदने और शत्रु की समूची शक्ति पर प्रभावी होने का सामर्थ्य मैंने तुम्हें दे दिया है। तुम्हें कोई कुछ हानि नहीं पहुँचा पायेगा। २० किन्तु बस इसी बात पर प्रसन्न मत होओ कि आत्माएँ तुम्हारे बस में हैं, बल्कि इस पर प्रसन्न होओ कि तुम्हारे नाम स्वर्ग में अंकित हैं।"

यीशु की परम पिता से प्रार्थना

(मत्ती ११:२५-२७; १३:१६-१७)

२१ उसी क्षण वह पवित्र आत्मा में स्थिर होकर आनन्दित हुआ और बोला, "हे परम पिता! हे स्वर्ग और धरती के प्रभु! मैं तेरी स्तुति करता हूँ कि तूमने इन बातों को चतुर और प्रतिभावान लोगों से छुपा कर रखते हुए भी बच्चों †के लिये उन्हें प्रकट कर दिया। हे परम पिता! निश्चय ही तू ऐसा ही करना चाहता था।

२२ "मुझे मेरे पिता द्वारा सब कुछ दिया गया है और पिता के सिवाय कोई नहीं जानता कि पुत्र कौन है और पुत्र के अतिरिक्त कोई नहीं जानता कि पिता कौन है, या उसके सिवा जिसे पुत्र इसे प्रकट करना चाहता है।"

२३ फिर शिष्यों की तरफ़ मुड़कर उसने चुपके से कहा, "धन्य हैं, वे आँखें जो तुम देख रहे हो, उसे देखती हैं। २४ क्योंकि मैं तुम्हें बताता हूँ कि उन बातों को बहुत से नबी और राजा देखना चाहते थे, जिन्हें तुम देख रहे हो, पर देख नहीं सके। जिन

*१०:१ बहत्तर कुछ यूनानी प्रतियों में यह संख्या सत्तर है। पद १७ में भी सत्तर है।

†१०:२१ बच्चों बच्चों से अभिप्राय है सीधे सादे सरल अबोध जन।

बातों को तुम सुन रहे हो, वे उन्हें सुनना चाहते थे,
पर वे सुन न पाये।"

अच्छे सामरी की कथा

२५ तब एक न्यायशास्त्री खड़ा हुआ और यीशु
की परीक्षा लेने के लिये उससे पूछा, "गुरु, अनन्त
जीवन पाने के लिये मैं क्या करूँ?"
२६ इस पर यीशु ने उससे कहा, "व्यवस्था के
विधि में क्या लिखा है, वहाँ तू क्या पढ़ता है?"
२७ उसने उत्तर दिया, "'तू अपने सम्पूर्ण मन,
सम्पूर्ण आत्मा, सम्पूर्ण शक्ति और सम्पूर्ण बुद्धि
से अपने प्रभु से प्रेम कर।' *और 'अपने पड़ोसी
से वैसे ही प्यार कर, जैसे तू अपने आप से करता
है।' †"
२८ तब यीशु ने उस से कहा, "तू ने ठीक उत्तर
दिया है। तो तू ऐसा ही कर इसी से तू जीवित
रहेगा।"
२९ किन्तु उसने अपने को न्याय संगत ठहराने
की इच्छा करते हुए यीशु से कहा, "और मेरा
पड़ोसी कौन है?"
३० यीशु ने उत्तर में कहा, "देखो, एक व्यक्ति
यरूशलेम से यरीहो जा रहा था कि वह डाकुओं
से घिर गया। उन्होंने सब कुछ छीन कर उसे नंगा
कर दिया और मार पीट कर उसे अधमरा छोड़ कर
वे चले गये।
३१ "अब संयोग से उसी मार्ग से एक याजक जा
रहा था। जब उसने इसे देखा तो वह मुँह मोड़कर
दूसरी ओर चला गया। ३२ उसी रास्ते होता हुआ
एक लेवी ‡भी वहीं आया। उसने उसे देखा और वह
भी मुँह मोड़कर दूसरी ओर चला गया।
३३ "किन्तु एक सामरी भी जाते हुए वहीं आया
जहाँ वह पड़ा था। जब उसने उस व्यक्ति को देखा
तो उसके लिये उसके मन में करुणा उपजी, ३४ सो
वह उसके पास आया और उसके घावों पर तेल और
दाखरस डाल कर पट्टी बाँध दी। फिर वह उसे
अपने पशु पर लाद कर एक सराय में ले गया और
उसकी देखभाल करने लगा। ३५ अगले दिन उसने
दो दीनारी निकाली और उन्हें सराय वाले को देते
हुए बोला, 'इसका ध्यान रखना और इससे अधिक
जो कुछ तेरा खर्चा होगा, जब मैं लौटूँगा, तुझे
चुका दूँगा।'"
३६ यीशु ने उससे कहा, "बता तेरे विचार से
डाकुओं के बीच घिरे व्यक्ति का पड़ोसी इन तीनों
में से कौन हुआ?"
३७ न्यायशास्त्री ने कहा, "वही जिसने उस पर
दया की।"
इस पर यीशु ने उससे कहा, "जा और वैसा ही
कर जैसा उसने किया!"

मरियम और मार्था

३८ जब यीशु और उसके शिष्य अपनी राह चले
जा रहे थे तो यीशु एक गाँव में पहुँचा। एक स्त्री
ने, जिसका नाम मार्था था, उदारता के साथ उसका
स्वागत सत्कार किया। ३९ उसकी मरियम नाम की
एक बहन थी जो प्रभु के चरणों में बैठी, जो कुछ
वह कह रहा था, उसे सुन रही थी। ४० उधर तरह
तरह की तैयारियों में लगी मार्था व्याकुल होकर
यीशु के पास आयी और बोली, "हे प्रभु, क्या तुझे
चिंता नहीं है कि मेरी बहन ने सारा काम बस मुझ
ही पर डाल दिया है? इसलिए उससे मेरी सहायता
करने को कह।"
४१ प्रभु ने उसे उत्तर दिया, "मार्था, हे मार्था, तू
बहुत सी बातों के लिये चिंतित और व्याकुल रहती
है। ४२ किन्तु बस एक ही बात आवश्यक है, और
मरियम ने क्योंकि अपने लिये उसी उत्तम अंश को
चुन लिया है, सो वह उससे नहीं छीना जायेगा।"

प्रार्थना

(मत्ती ६:९-१५)

११ १ अब ऐसा हुआ कि यीशु कहीं प्रार्थना कर
रहा था। जब वह प्रार्थना समाप्त कर चुका
तो उसके एक शिष्य ने उससे कहा, "हे प्रभु, हमें
सिखा कि हम प्रार्थना कैसे करें। जैसा कि यूहन्ना
ने अपने शिष्यों को सिखाया था।"
२ इस पर वह उनसे बोला, "तुम प्रार्थना करो,
तो कहो:
'हे पिता, तेरा नाम पवित्र माना जाए।
तेरा राज्य आवे,
३ हमारी दिन भर की रोटी प्रतिदिन दिया कर।
४ हमारे अपराध क्षमा कर,
क्योंकि हमने भी अपने अपराधी को क्षमा किया,
और हमें कठिन परीक्षा में मत पड़ने दे।'"

---

*१०:२७ उद्धरण व्यवस्था विवरण ६:५
†१०:२७ उद्धरण लैव्यव्यवस्था १९:१८
‡१०:३२ लेवी लेवीय समूह का एक व्यक्ति। यह परिवार समूह मन्दिर में यहूदी याजक का सहायक होता था।

माँगते रहो
(मत्ती ७:७-११)

५-६ फिर उसने उनसे कहा, "मानो, तुममें से
किसी का एक मित्र है, सो तुम आधी रात उसके
पास जाकर कहते हो, 'हे मित्र मुझे तीन रोटियाँ
दे। क्योंकि मेरा एक मित्र अभी-अभी यात्रा
से मेरे पास आया है और मेरे पास उसके सामने
परोसने के लिये कुछ भी नहीं है।' ७ और कल्पना
करो उस व्यक्ति ने भीतर से उत्तर दिया, 'मुझे
तंग मत कर, द्वार बंद हो चुका है, बिस्तर में
मेरे साथ मेरे बच्चे हैं, सो तुझे कुछ भी देने मैं
खड़ा नहीं हो सकता।' ८ मैं तुम्हें बताता हूँ वह
यद्यपि नहीं उठेगा और तुम्हें कुछ नहीं देगा, किन्तु
फिर भी क्योंकि वह तुम्हारा मित्र है, सो तुम्हारे
निरन्तर, बिना संकोच माँगते रहने से वह खड़ा
होगा और तुम्हारी आवश्यकता भर, तुम्हें देगा।
९ और इसीलिये मैं तुमसे कहता हूँ माँगो, तुम्हें
दिया जाएगा। खोजो, तुम पाओगे। खटखटाओ,
तुम्हारे लिए द्वार खोल दिया जायेगा। १० क्योंकि
हर कोई जो माँगता है, पाता है। जो खोजता
है, उसे मिलता है। और जो खटखटाता है, उसके
लिए द्वार खोल दिया जाता है। ११ तुममें ऐसा पिता
कौन होगा जो यदि उसका पुत्र मछली माँगे,
तो मछली के स्थान पर उसे साँप थमा दे १२ और
यदि वह अण्डा माँगे तो उसे बिच्छू दे दे। १३ सो
बुरे होते हूए भी जब तुम जानते हो कि अपने
बच्चों को उत्तम उपहार कैसे दिये जाते हैं, तो स्वर्ग
में स्थित परम पिता, जो उससे माँगते हैं, उन्हें
पवित्र आत्मा कितना अधिक देगा।"

यीशु में परमेश्वर की शक्ति
(मत्ती १२:२२-३०; मरकुस ३:२०-२७)

१४ फिर जब यीशु एक गूँगा बना डालने वाली
दुष्टात्मा को निकाल रहा था तो ऐसा हुआ कि
जैसे ही वह दुष्टात्मा बाहर निकली, तो वह गूँगा,
बोलने लगा। भीड़ के लोग इससे बहुत चकित
हुए। १५ किन्तु उनमें से कुछ ने कहा, "यह दैत्यों
के शासक बैल्ज़ाबुल की सहायता से दुष्टात्माओं
को निकालता है।"

१६ किन्तु औरों ने उसे परखने के लिये किसी
स्वर्गीय चिन्ह की माँग की। १७ किन्तु यीशु जान
गया कि उनके मनों में क्या है। सो वह उनसे बोला,
"वह राज्य जिसमें अपने भीतर ही फूट पड़ जाये,
नष्ट हो जाता है और ऐसे ही किसी घर का भी
फूट पड़ने पर उसका नाश हो जाता है। १८ यदि
शैतान अपने ही विरुद्ध फूट पड़े तो उसका राज्य
कैसे टिक सकता है? यह मैंने तुमसे इसलिये पूछा
है कि तुम कहते हो कि मैं बैल्ज़ाबुल की सहायता
से दुष्टात्माओं को निकालता हूँ। १९ किन्तु यदि
मैं बैल्ज़ाबुल की सहायता से दुष्टात्माओं को
निकालता हूँ तो तुम्हारे अनुयायी उन्हें किसकी
सहायता से निकालते हैं? सो तुझे तेरे अपने
लोग ही अनुचित सिद्ध करेंगे। २० किन्तु यदि मैं
दुष्टात्माओं को परमेश्वर की शक्ति से निकालता
हूँ तो यह स्पष्ट है कि परमेश्वर का राज्य तुम तक
आ पहुँचा है!

२१ "जब एक शक्तिशाली मनुष्य पूरी तरह
हथियार कसे अपने घर की रक्षा करता है तो
उसकी सम्पत्ति सुरक्षित रहती है। २२ किन्तु जब
कभी कोई उससे अधिक शक्तिशाली उस पर
हमला कर उसे हरा देता है तो वह उसके सभी
हथियारों को, जिन पर उसे भरोसा था, उससे छीन
लेता है और लूट के माल को वे आपस में बाँट लेते
हैं।

२३ "जो मेरे साथ नहीं है, मेरे विरोध में है और
वह जो मेरे साथ बटोरता नहीं है, बिखेरता है।

खाली व्यक्ति
(मत्ती १२:४३-४५)

२४ "जब कोई दुष्टात्मा किसी मनुष्य से बाहर
निकलती है तो विश्राम को खोजते हुए सूखे
स्थानों से होती हुई जाती है और जब उसे आराम
नहीं मिलता तो वह कहती हैं, 'मैं अपने उसी घर
लौटूँगी जहाँ से गयी हूँ।' २५ और वापस जाकर वह
उसे साफ़ सुथरा और व्यवस्थित पाती है। २६ फिर
वह जाकर अपने से भी अधिक दुष्ट अन्य सात
दुष्टात्माओं को वहाँ लाती है। फिर वे उसमें जाकर
रहने लगती हैं। इस प्रकार उस व्यक्ति की बाद
की यह स्थिति पहली स्थिति से भी अधिक बुरी
हो जाती है।"

वे धन्य हैं

२७ फिर ऐसा हुआ कि जैसे ही यीशु ने ये बातें
कहीं, भीड़ में से एक स्त्री उठी और ऊँचे स्वर में
बोली, "वह गर्भ धन्य है, जिसने तुझे धारण किया।
वे स्तन धन्य है, जिनका तूने पान किया है।"

२८ इस पर उसने कहा, "धन्य तो बल्कि वे हैं जो
परमेश्वर का वचन सुनते हैं और उस पर चलते हैं!"

प्रमाण की माँग

(मत्ती १२ :३८-४२ ; मरकुस ८ :१२)

२९ जैसे जैसे भीड़ बढ़ रही थी, वह कहने लगा,
“यह एक दुष्ट पीढ़ी है। यह कोई चिन्ह देखना
चाहती है। किन्तु इसे योना कि चिन्ह के सिवा और
कोई चिन्ह नहीं दिया जायेगा। ३० क्योंकि जैसे
नीनवे के लोगों के लिए योना चिन्ह बना, वैसे
ही इस पीढ़ी के लिये मनुष्य का पुत्र भी चिन्ह
बनेगा।

३१ “दक्षिण की रानी *न्याय के दिन प्रकट होकर
इस पीढ़ी के लोगों पर अभियोग लगायेगी और
उन्हें दोषी ठहरायेगी क्योंकि वह धरती के दूसरे
छोरों से सुलैमान का ज्ञान सुनने को आयी और
अब देखो यहाँ तो कोई सुलैमान से भी बड़ा है।

३२ “नीनवे के लोग न्याय के दिन इस पीढ़ी
के लोगों के विरोध में खड़े होकर उन पर दोष
लगायेंगे क्योंकि उन्होंने योना के उपदेश को सुन
कर मन फिराया था। और देखो अब तो योना से
भी महान कोई यहाँ है!

विश्व का प्रकाश बनो

(मत्ती ५ :१५ ; ६ :२२-२३)

३३ “दीपक जलाकर कोई भी उसे किसी छिपे
स्थान या किसी बर्तन के भीतर नहीं रखता, बल्कि
वह इसे दीवट पर रखता है ताकि जो भीतर
आयें प्रकाश देख सकें। ३४ तुम्हारी देह का दीपक
तुम्हारी आँखें हैं, सो यदि आँखें साफ हैं तो सारी
देह प्रकाश से भरी है किन्तु, यदि ये बुरी हैं तो
तुम्हारी देह अंधकारमय हो जाती है। ३५ सो ध्यान
रहे कि तुम्हारे भीतर का प्रकाश अंधकार नहीं
है। ३६ अत: यदि तुम्हारा सारा शरीर प्रकाश से
परिपूर्ण है और इसका कोई भी अंग अंधकारमय
नहीं है तो वह पूरी तरह ऐसे चमकेगा मानो कोई
दीपक तुम पर अपनी किरणों में चमक रहा हो।”

यीशु द्वारा फरीसियों की आलोचना

(मत्ती २३ :१-३६ ; मरकुस
१२ :३८-४० ; लूका २० :४५-४७)

३७ यीशु ने जब अपनी बात समाप्त की तो
एक फ़रीसी ने उससे अपने साथ भोजन करने का
आग्रह किया। सो वह भीतर जाकर भोजन करने
बैठ गया। ३८ किन्तु जब उस फ़रीसी ने यह देखा
कि भोजन करने से पहले उसने अपने हाथ नहीं
धोये तो उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। ३९ इस पर प्रभु
ने उनसे कहा, “अब देखो तुम फ़रीसी थाली और
कटोरी को बस बाहर से तो माँजते हो पर भीतर से
तुम लोग लालच और दुष्टता से भरे हो। ४० अरे
मूर्ख लोगों! क्या जिसने बाहरी भाग को बनाया,
वही भीतरी भाग को भी नहीं बनाता? ४१ इसलिए
जो कुछ भीतर है, उसे दीनों को दे दे। फिर तेरे लिए
सब कुछ पवित्र हो जायेगा।

४२ “ओ फरीसियों! तुम्हें धिक्कार है क्योंकि तुम
अपने पुदीने और सुदाब बूटी और हर किसी जड़ी
बूटी का दसवाँ हिस्सा तो अर्पित करते हो किन्तु
परमेश्वर के लिये प्रेम और न्याय की उपेक्षा करते
हो। किन्तु इन बातों को तुम्हें उन बातों की उपेक्षा
किये बिना करना चाहिये था।

४३ “ओ फरीसियों, तुम्हें धिक्कार है! क्योंकि
तुम यहूदी आराधनालयों में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण
आसन चाहते हो और बाज़ारों में सम्मानपूर्ण
नमस्कार लेना तुम्हें भाता है। ४४ तुम्हें धिक्कार
है क्योंकि तुम बिना किसी पहचान की उन कब्रों
के समान हो जिन पर लोग अनजाने ही चलते हैं।”

४५ तब एक न्यायशास्त्री ने यीशु से कहा,
“गुरु, जब तू ऐसी बातें कहता है तो हमारा भी
अपमान करता है।”

४६ इस पर यीशु ने कहा, “ओ न्यायशास्त्रियों!
तुम्हें धिक्कार है। क्योंकि तुम लोगों पर ऐसे बोझ
लादते हो जिन्हें उठाना कठिन है। और तुम स्वयं
उन बोझों को एक उँगली तक से छूना भर नहीं
चाहते। ४७ तुम्हें धिक्कार है क्योंकि तुम नबियों
के लिये कब्रें बनाते हो जबकि वे तुम्हारे पूर्वज
ही थे जिन्होंने उनकी हत्या की। ४८ इससे तुम
यह दिखाते हो कि तुम अपने पूर्वजों के उन कामों
का समर्थन करते हो। क्योंकि उन्होंने तो उन्हें
मारा और तुमने उनकी कब्रें बनाईं। ४९ इसलिए
परमेश्वर के ज्ञान ने भी कहा, ‘मैं नबियों और
प्रेरितों को भी उनके पास भेजूँगा। फिर कुछ को
तो वे मार डालेंगे और कुछ को यातनाएँ देंगे।’

५० “इसलिए संसार के प्रारम्भ से जितने भी
नबियों का खून बहाया गया है, उसका हिसाब इस
पीढ़ी के लोगों से चुकता किया जायेगा। ५१ यानी
हाबिल की हत्या से लेकर जकरयाह की हत्या
तक का हिसाब, जो परमेश्वर के मन्दिर और वेदी
के बीच की गयी थीं। हाँ, मैं तुमसे कहता हूँ इस

*११ :३१ दक्षिण की रानी या “शीबा की रानी।” वह हजार मील चल कर सुलैमान से परमेश्वर का ज्ञान सीखने आयी थी। देखें १ राजा १० :१-१३

पीढ़ी के लोगों को इसके लिए लेखा जोखा देना
ही होगा।
५२ “हे न्यायशास्त्रियों, तुम्हें धिक्कार है,
क्योंकि तुमने ज्ञान की कुंजी ले तो ली है। पर उसमें
न तो तुमने खुद प्रवेश किया और जो प्रवेश
करने का जतन कर रहे थे उनको भी तुमने बाधा
पहुँचाई।”
५३ और फिर जब यीशु वहाँ से चला गया तो वे
धर्मशास्त्री और फ़रीसी उससे घोर शत्रुता रखने
लगे। बहुत सी बातों के बारे में वे उससे तीखे प्रश्न
पूछने लगे। ५४ क्योंकि वे उसे उसकी कही किसी
बात से फँसाने की टोह में लगे थे।

फरीसियों जैसे मत बनो

१२ १ और फिर जब हजारों की इतनी भीड़ आ
जुटी कि लोग एक दूसरे को कुचल रहे
थे तब यीशु पहले अपने शिष्यों से कहने लगा,
“फरीसियों के ख़मीर से, जो उनका कपट है, बचे
रहो। २ कुछ छिपा नहीं है जो प्रकट नहीं कर
दिया जायेगा। ऐसा कुछ अनजाना नहीं है जिसे
जाना नहीं दिया जायेगा। ३ इसीलिये हर वह बात
जिसे तुमने अँधेरे में कहा है, उजाले में सुनी
जायेगी। और एकांत कमरों में जो कुछ भी तुमने
चुपचाप किसी के कान में कहा है, मकानों की छतों
पर से घोषित किया जायेगा।

बस परमेश्वर से डरो

(मत्ती १० :२८-३१)

४ “किन्तु मेरे मित्रों! मैं तुमसे कहता हूँ उनसे
मत डरो जो बस तुम्हारे शरीर को मार सकते हैं
और उसके बाद ऐसा कुछ नहीं है जो उनके बस
में हो। ५ मैं तुम्हें दिखाऊँगा कि तुम्हें किस से
डरना चाहिये। उससे डरो जो तुम्हें मारकर नरक
में डालने की शक्ति रखता है। हाँ, मैं तुम्हें बताता
हूँ, बस उसी से डरो।
६ “क्या दो पैसे की पाँच चिड़ियाएँ नहीं बिकतीं?
फिर भी परमेश्वर उनमें से एक को भी नहीं
भूलता। ७ और देखो तुम्हारे सिर का एक एक बाल
तक गिना हुआ है। डरो मत तुम तो बहुत सी
चिड़ियाओं से कहीं अधिक मूल्यवान हो।

यीशु के नाम पर लज्जाओ मत

(मत्ती १० :३२-३३ ; १२ :३२ ; १० :१९-२०)

८ “किन्तु मैं तुमसे कहता हूँ जो कोई व्यक्ति
सभी के सामने मुझे स्वीकार करता है, मनुष्य का
पुत्र भी उस व्यक्ति को परमेश्वर के स्वर्गदूतों के
सामने स्वीकार करेगा। ९ किन्तु वह जो मुझे दूसरों
के सामने नकारेगा, उसे परमेश्वर के स्वर्गदूतों के
सामने नकार दिया जायेगा।
१० “और हर उस व्यक्ति को तो क्षमा कर दिया
जायेगा जो मनुष्य के पुत्र के विरोध में कोई शब्द
बोलता है, किन्तु जो पवित्र आत्मा की निन्दा
करता है, उसे क्षमा नहीं किया जायेगा।
११ “सो जब वे तुम्हें यहूदी आराधनालयों,
शासकों और अधिकारियों के सामने ले जायें तो
चिंता मत करो कि तुम अपना बचाव कैसे करोगे
या तुम्हें क्या कुछ कहना होगा। १२ चिंता मत करो
क्योंकि पवित्र आत्मा तुम्हें सिखायेगा कि उस
समय तुम्हें क्या बोलना चाहिये।”

स्वार्थ के विरुद्ध चेतावनी

१३ फिर भीड़ में से उससे किसी ने कहा, “गुरु, मेरे
भाई से पिता की सम्पत्ति का बँटवारा करने को कह
दे।”
१४ इस पर यीशु ने उससे कहा, “ओ भले मनुष्य,
मुझे तुम्हारा न्यायकर्ता या बँटवारा करने वाला
किसने बनाया है?” १५ सो यीशु ने उनसे कहा,
“सावधानी के साथ सभी प्रकार के लोभ से अपने
आप को दूर रखो। क्योंकि आवश्यकता से अधिक
सम्पत्ति होने पर भी जीवन का आधार उसका
संग्रह नहीं होता।”
१६ फिर उसने उन्हें एक दृष्टान्त कथा सुनाई :
“किसी धनी व्यक्ति की धरती पर भरपूर उपज
हुई। १७ वह अपने मन में सोचते हुए कहने लगा,
‘मैं क्या करूँ, मेरे पास फ़सल को रखने के लिये
स्थान तो है नहीं।’
१८ “फिर उसने कहा, ‘ठीक है मैं यह करूँगा
कि अपने अनाज के कोठों को गिरा कर बड़े
कोठे बनवाऊँगा और अपने समूचे अनाज को
और सामान को वहाँ रख छोड़ूँगा। १९ फिर अपनी
आत्मा से कहूँगा, अरे मेरी आत्मा अब बहुत सी
उत्तम वस्तुएँ, बहुत से बरसों के लिये तेरे पास
संचित हैं। घबरा मत, खा, पी और मौज उड़ा।’
२० “किन्तु परमेश्वर उससे बोला, ‘अरे मूर्ख, इसी
रात तेरी आत्मा तुझसे ले ली जायेगी। जो कुछ
तूने तैयार किया है, उसे कौन लेगा?’
२१ “देखो, उस व्यक्ति के साथ भी कुछ ऐसा
ही हुआ है, वह अपने लिए भंडार भरता है किन्तु
परमेश्वर की दृष्टि में वह धनी नहीं है।”

परमेश्वर से बढ़कर कुछ नहीं है

(मत्ती ६ :२५-३४, १९-२१)

२२ फिर उसने अपने शिष्यों से कहा, "इसीलिये
मैं तुमसे कहता हूँ, अपने जीवन की चिंता मत करो
कि तुम क्या खाओगे अथवा अपने शरीर की चिंता
मत करो कि तुम क्या पहनोगे ? २३ क्योंकि जीवन
भोजन से और शरीर वस्त्रों से अधिक महत्त्वपूर्ण
है। २४ कौवों को देखो, न वे बोते हैं, न ही वे काटते
है। न उनके पास भंडार है और न अनाज के कोठे।
फिर भी परमेश्वर उन्हें भोजन देता है। तुम तो
कौवों से कितने अधिक मूल्यवान हो। २५ चिन्ता
करके, तुम में से कौन ऐसा हे, जो अपनी आयु में
एक घड़ी भी और जोड़ सकता है। २६ क्योंकि यदि
तुम इस छोटे से काम को भी नहीं कर सकते तो
शेष के लिये चिन्ता क्यों करते हो ?
२७ "कुमुदिनियों को देखो, वे कैसे उगती हैं ? न
वे श्रम करती है, न कताई, फिर भी मैं तुमसे
कहता हूँ कि सुलैमान अपने सारे वैभव के साथ
उन में से किसी एक के समान भी नहीं सज सका।
२८ इसीलिये जब मैदान की घास को, जो आज
यहाँ है और जिसे कल ही भाड़ में झोक दिया
जायेगा, परमेश्वर ऐसे वस्त्रों से सजाता है तो
ओ अल्प विश्वासियो, तुम्हें तो वह और कितने
ही अधिक वस्त्र पहनायेगा।
२९ "और चिन्ता मत करो कि तुम क्या खाओगे
और क्या पीओगे। इनके लिये मत सोचो।
३० क्योंकि जगत के और सभी लोग इन वस्तुओं
के पीछे दौड़ रहे हैं पर तुम्हारा पिता तो जानता
ही है कि तुम्हें इन वस्तुओं की आवश्यकता है।
३१ बल्कि तुम तो उसके राज्य की ही चिन्ता करो।
ये वस्तुएँ तो तुम्हें दे ही दी जायेंगी।

धन पर भरोसा मत करो

३२ "मेरी भोली भेड़ो डरो मत, क्योंकि तुम्हारा
परम पिता तुम्हें स्वर्ग का राज्य देने को तत्पर है।
३३ सो अपनी सम्पत्ति बेच कर धन गरीबों में बाँट
दो। अपने पास ऐसी थैलियाँ रखो जो पुरानी न
पड़ें अर्थात् कभी समाप्त न होने वाला धन स्वर्ग में
जुटाओ जहाँ उस तक किसी चोर की पहँच न हो।
और न उसे कीड़े मकौड़े नष्ट कर सकें। ३४ क्योंकि
जहाँ तुम्हारा कोष है, वहीं तुम्हारा मन भी रहेगा।

सदा तैयार रहो

(मत्ती २४ :४२-४४)

३५ "कर्म करने को सदा तैयार रहो। और अपने
दीपक जलाए रखो। ३६ और उन लोगों के जैसे
बनो जो ब्याह के भोज से लौटकर आते अपने
स्वामी की प्रतीक्षा में रहते है ताकि, जब वह
आये और द्वार खटखटाये तो वे तत्काल उसके
लिए द्वार खोल सकें। ३७ वे सेवक धन्य हैं जिन्हें
स्वामी आकर जागते और तैयार पाएगा। मैं तुम्हें
सच्चाई के साथ कहता हूँ कि वह भी उनकी सेवा के
लिये कमर कस लेगा और उन्हे, खाने की चौकी पर
भोजन के लिए बिठायेगा। वह आयेगा और उन्हें
भोजन करायेगा। ३८ वह चाहे आधी रात से पहले
आए और चाहे आधी रात के बाद यदि उन्हें तैयार
पाता है तो वे धन्य हैं।
३९ "इस बात के लिए निश्चित रहो कि यदि घर
के स्वामी को यह पता होता कि चोर किस घड़ी आ
रहा है, तो वह उसे अपने घर में सेंध नहीं लगाने
देता। ४० सो तुम भी तैयार रहो क्योंकि मनुष्य का
पुत्र ऐसी घड़ी आयेगा जिसे तुम सोच भी नहीं
सकते।"

विश्वासपात्र सेवक कौन ?

(मत्ती २४ :४५-५१)

४१ तब पतरस ने पूछा, "हे प्रभु, यह दृष्टान्त
कथा तू हमारे लिये कह रहा है या सब के लिये ?"
४२ इस पर यीशु ने कहा, "तो फिर ऐसा
विश्वास-पात्र, बुद्धिमान प्रबन्ध-अधिकारी
कौन होगा जिसे प्रभु अपने सेवकों के ऊपर
उचित समय पर, उन्हें भोजन सामग्री देने के लिये
नियुक्त करेगा ? ४३ वह सेवक धन्य है जिसे उसका
स्वामी जब आये तो उसे वैसा ही करते पाये। ४४ मैं
सच्चाई के साथ तुमसे कहता हूँ कि वह उसे अपनी
सभी सम्पत्तियों का अधिकारी नियुक्त करेगा।
४५ "किन्तु यदि वह सेवक अपने मन में यह कहे
कि मेरा स्वामी तो आने में बहुत देर कर रहा है
और वह दूसरे पुरुष और स्त्री सेवकों को मारना
पीटना आरम्भ कर दे तथा खाने-पीने और मदमस्त
होने लगे ४६ तो उस सेवक का स्वामी ऐसे दिन आ
जायेगा जिसकी वह सोचता तक नहीं। एक ऐसी
घड़ी जिसके प्रति वह अचेत है। फिर वह उसके
टुकड़े-टुकड़े कर डालेगा और उसे अविश्वासियों
के बीच स्थान देगा।
४७ "वह सेवक जो अपने स्वामी की इच्छा
जानता है और उसके लिए तत्पर नहीं होता या

जैसा उसका स्वामी चाहता है, वैसा ही नहीं
करता, उस सेवक पर तीखी मार पड़ेगी। ४८ किन्तु
वह जिसे अपने स्वामी की इच्छा का ज्ञान नहीं और
कोई ऐसा काम कर बैठे जो मार पड़ने योग्य हो तो
उस सेवक पर हल्की मार पड़ेगी। क्योंकि प्रत्येक
उस व्यक्ति से जिसे बहुत अधिक दिया गया है,
अधिक अपेक्षित किया जायेगा। उस व्यक्ति से
जिसे लोगों ने अधिक सौंपा है, उससे लोग अधिक
ही माँगेंगे।"

यीशु के साथ असहमति

(मत्ती १० :३४-३६)

४९ "मैं धरती पर एक आग भड़काने आया हूँ।
मेरी कितनी इच्छा है कि वह कदाचित् अभी तक
भड़क उठती। ५० मेरे पास एक बपतिस्मा है जो
मुझे लेना है जब तक यह पूरा नहीं हो जाता, मैं
कितना व्याकुल हूँ। ५१ तुम क्या सोचते हो मैं इस
धरती पर शान्ति स्थापित करने के लिये आया हूँ?
नहीं, मैं तुम्हें बताता हूँ, मैं तो विभाजन करने आया
हूँ। ५२ क्योंकि अब से आगे एक घर के पाँच आदमी
एक दूसरे के विरुद्ध बट जायेंगे। तीन दो के विरोध
में और दो तीन के विरोध में हो जायेंगे।
५३ पिता, पुत्र के विरोध में,
और पुत्र, पिता के विरोध में,
माँ, बेटी के विरोध में,
और बेटी, माँ के विरोध में,
सास, बहू के विरोध में,
और बहू, सास के विरोध में हो जायेंगी।"

समय की पहचान

(मत्ती १६ :२-३)

५४ फिर वह भीड़ से बोला, "जब तुम पश्चिम
की ओर से किसी बादल को उठते देखते हो तो
तत्काल कह उठते हो, 'वर्षा आ रही है' और फिर
ऐसा ही होता है। ५५ और फिर जब दक्षिणी हवा
चलती है, तुम कहते हो, 'गर्मी पड़ेगी' और ऐसा ही
होता है। ५६ अरे कपटियों तुम धरती और आकाश
के स्वरूपों की व्याख्या करना तो जानते हो, फिर
ऐसा क्योंकि तुम वर्तमान समय की व्याख्या करना
नहीं जानते?

अपनी समस्याएँ सुलझाओ

(मत्ती ५ :२५-२६)

५७ "जो उचित है, उसके निर्णायक तुम अपने
आप क्यों नहीं बनते? ५८ जब तुम अपने विरोधी
के साथ अधिकारियों के पास जा रहे हो तो रास्ते
में ही उसके साथ समझौता करने का जतन करो।
नहीं तो कहीं ऐसा न हो कि वह तुम्हें न्यायाधीश
के सामने खींच ले जाये और न्यायाधीश तुम्हें
अधिकारी को सौंप दे। और अधिकारी तुम्हें जेल
में बन्द कर दे। ५९ मैं तुम्हें बताता हूँ, तुम वहाँ से
तब तक नहीं छूट पाओगे जब तक अंतिम पाई
तक न चुका दो।"

मन बदलो

१३ १ उस समय वहाँ उपस्थित कुछ लोगों ने
यीशु को उन गलीलियों के बारे में बताया
जिनका रक्त पिलातुस ने उनकी बलियों के साथ
मिला दिया था। २ सो यीशु ने उन से कहा,
"तुम क्या सोचते हो कि ये गलीली दूसरे सभी
गलीलियों से बुरे पापी थे क्योंकि उन्हें ये बातें
भुगतनी पड़ीं? ३ नहीं, मैं तुम्हें बताता हूँ, यदि
तुम मन नहीं, फिराओगे तो तुम सब भी वैसी ही
मौत मरोगे जैसी वे मरे थे। ४ या उन अट्ठारह
व्यक्तियों के विषय में तुम क्या सोचते हो जिनके
ऊपर शीलोह के बुर्ज ने गिर कर उन्हें मार डाला।
क्या सोचते हो, वे यरूशलेम में रहने वाले दूसरे
सभी व्यक्तियों से अधिक अपराधी थे? ५ नहीं, मैं
तुम्हें बताता हूँ कि यदि तुम मन न फिराओगे तो
तुम सब भी वैसे ही मरोगे।"

निष्फल पेड़

६ फिर उसने यह दृष्टान्त कथा कही: "किसी
व्यक्ति ने अपनी दाख की बारी में अंजीर का एक
पेड़ लगाया हुआ था सो वह उस पर फल खोजता
आया पर उसे कुछ नहीं मिला। ७ इस पर उसने
माली से कहा, 'अब देख मैं तीन साल से अंजीर
के इस पेड़ पर फल ढूँढ़ता आ रहा हूँ किन्तु मुझे
एक भी फल नहीं मिला। सो इसे काट डाल। यह
धरती को यूँ ही व्यर्थ क्यों करता रहे?' ८ माली ने
उसे उत्तर दिया, 'हे स्वामी, इसे इस साल तब तक
छोड़ दे, जब तक मैं इसके चारों तरफ गढ़ा खोद
कर इसमें खाद लगाऊँ। ९ फिर यदि यह अगले
साल फल दे तो अच्छा है और यदि नहीं दे तो
तू इसे काट सकता है।'"

सब्त के दिन स्त्री को निरोग करना

१० किसी आराधनालय में सब्त के दिन यीशु जब
उपदेश दे रहा था ११ तो वहीं एक ऐसी स्त्री थी
जिसमें दुष्ट आत्मा समाई हुई थी। जिसने उसे
अठारह बरसों से पंगु बनाया हुआ था। वह झुक
कर कुबड़ी हो गयी थी और थोड़ी सी भी सीधी

नहीं हो सकती थी। १२ यीशु ने उसे जब देखा तो
उसे अपने पास बुलाया और कहा, "हे स्त्री, तुझे
अपने रोग से छुटकारा मिला!" यह कहते हुए,
१३ उसके सिर पर अपने हाथ रख दिये। और वह
तुरंत सीधी खड़ी हो गयी। वह परमेश्वर की स्तुति
करने लगी।
१४ यीशु ने क्योंकि सब्त के दिन उसे निरोग
किया था, इसलिये यहूदी आराधनालय का नेता
क्रोध में भर कर लोगों से कहा, "काम करने के
लिए छः दिन होते हैं सो उन्हीं दिनों में आओ और
अपने रोग दूर करवाओ पर सब्त के दिन निरोग
होने मत आओ।"
१५ प्रभु ने उत्तर देते हुए उससे कहा, "ओ
कपटियों! क्या तुममें से हर कोई सब्त के दिन
अपने बैल या अपने गधे को बाड़े से निकाल कर
पानी पिलाने कहीं नहीं ले जाता? १६ अब यह स्त्री
जो इब्राहीम की बेटी है और जिसे शैतान ने
अट्ठारह साल से जकड़ रखा था, क्या इसको
सब्त के दिन इसके बंधनों से मुक्त नहीं किया
जाना चाहिये था?" १७ जब उसने यह कहा तो
उसका विरोध करने वाले सभी लोग लज्जा से
गढ़ गये। उधर सारी भीड़ उन आश्चर्यपूर्ण कर्मों
से जिन्हें उसने किया था, आनन्दित हो रही थी।

स्वर्ग का राज्य कैसा है?

(मत्ती १३:३१-३३; मरकुस ४:३०-३२)

१८ सो उसने कहा, "परमेश्वर का राज्य कैसा है
और मैं उसकी तुलना किससे करूँ? १९ वह सरसों के
बीज जैसा है, जिसे किसी ने लेकर अपने बाग़ में
बो दिया। वह बड़ा हुआ और एक पेड़ बन गया।
फिर आकाश की चिड़ियाओं ने उसकी शाखाओं
पर घोंसले बना लिये।"
२० उसने फिर कहा, "परमेश्वर के राज्य की
तुलना मैं किससे करूँ? २१ यह उस ख़मीर के समान
है जिसे एक स्त्री ने लेकर तीन भाग आटे में
मिलाया और वह समूचा आटा ख़मीर युक्त हो
गया।"

सँकरा द्वार

(मत्ती ७:१३-१४, २१-२३)

२२ यीशु जब नगरों और गाँवों से होता हुआ
उपदेश देता यरूशलेम जा रहा था। २३ तभी उससे
किसी ने पूछा, "प्रभु, क्या थोड़े से ही व्यक्तियों
का उद्धार होगा?"
उसने उससे कहा, २४ "सँकरे द्वार से प्रवेश
करने को हर सम्भव प्रयत्न करो, क्योंकि मैं तुम्हें
बताता हूँ कि भीतर जाने का प्रयत्न बहुत से करेंगे
पर जा नहीं पायेंगे। २५ जब एक बार घर का स्वामी
उठ कर द्वार बन्द कर देता है, तो तुम बाहर ही खड़े
दरवाजा खटखटाते कहोगे, 'हे स्वामी, हमारे लिये
दरवाज़ा खोल दे!' किन्तु वह तुम्हें उत्तर देगा, 'मैं
नहीं जानता तुम कहाँ से आये हो?' २६ तब तुम
कहने लागोगे, 'हमने तेरे साथ खाया, तेरे साथ
पिया, तूने हमारी गलियों में हमें शिक्षा दी।' २७ पर
वह तुमसे कहेगा, 'मैं नहीं जानता तुम कहाँ से
आये हो? अरे कुकर्मियों! मेरे पास से भाग जाओ।'
२८ "तुम इब्राहीम, इसहाक, याकूब तथा अन्य
सभी नबियों को परमेश्वर के राज्य में देखोगे
किन्तु तुम्हें बाहर धकेल दिया जायेगा तो वहाँ बस
रोना और दाँत पीसना ही होगा। २९ फिर पूर्व और
पश्चिम, उत्तर और दक्षिण से लोग परमेश्वर के
राज्य में आकर भोजन की चौकी पर अपना स्थान
ग्रहण करेंगे। ३० ध्यान रहे कि वहाँ जो अंतिम हैं,
पहले हो जायेंगे और जो पहले हैं, वे अंतिम हो
जायेंगे।"

यीशु की मृत्यु यरूशलेम में

(मत्ती २३:३७-३९)

३१ उसी समय यीशु के पास कुछ फ़रीसी आये
और उससे कहा, "हेरोदेस तुझे मार डालना चाहता
है, इसलिये यहाँ से कहीं और चला जा।"
३२ तब उसने उनसे कहा, "जाओ और उस लोमड़
*से कहो, 'सुन मैं लोगों में से दुष्टात्माओं को
निकालूँगा, मैं आज भी चंगा करूँगा और कल
भी। फिर तीसरे दिन मैं अपना काम पूरा करूँगा।'
३३ फिर भी मुझे आज, कल और परसों चलते ही
रहना होगा। क्योंकि किसी नबी के लिये यह
उचित नहीं होगा कि वह यरूशलेम से बाहर प्राण
त्यागे।
३४ "हे यरूशलेम, हे यरूशलेम! तू नबियों की
हत्या करता है और परमेश्वर ने जिन्हें तेरे पास
भेजा है, उन पर पत्थर बरसाता है। मैंने कितनी ही
बार तेरे लोगों को वैसे ही परस्पर इकट्ठा करना
चाहा है जैसे एक मुर्गी अपने बच्चों को अपने पंखों
के नीचे समेट लेती है। पर तूने नहीं चाहा। ३५ देख

*१३:३२ लोमड़ लोमड़ चालाक होता है, इसलिए यीशु ने यहाँ हेरोदेस को लोमड़ के रूप में सम्बोधित करके उसे धूर्त कहना चाहा है।

तेरे लिये तेरा घर परमेश्वर द्वारा बिसराया हुआ पड़ा है। मैं तुझे बताता हूँ तू मुझे उस समय तक फिर नहीं देखेगा जब तक वह समय न आ जाये जब तू कहेगा, 'धन्य है वह, जो प्रभु के नाम पर आ रहा है।'"

क्या सब्त के दिन उपचार उचित है?

१४ १ एक बार सब्त के दिन प्रमुख फरीसियों में से किसी के घर यीशु भोजन पर गया। उधर वे बड़ी निकटता से उस पर आँख रखे हुए थे। २ वहाँ उसके सामने जलोदर से पीड़ित एक व्यक्ति था। ३ यीशु ने यहूदी धर्मशास्त्रियों और फरीसियों से पूछा, "सब्त के दिन किसी को निरोग करना उचित है या नहीं?" ४ किन्तु वे चुप रहे। सो यीशु ने उस आदमी को लेकर चंगा कर दिया। और फिर उसे कहीं भेज दिया। ५ फिर उसने उनसे पूछा, "यदि तुममें से किसी के पास अपना बेटा है या बैल है, वह कुँए में गिर जाता है तो क्या सब्त के दिन भी तुम उसे तत्काल बाहर नहीं निकालोगे?" ६ वे इस पर उससे तर्क नहीं कर सके।

अपने को महत्त्व मत दो

७ क्योंकि यीशु ने यह देखा कि अतिथि जन अपने लिये बैठने को कोई सम्मानपूर्ण स्थान खोज रहे थे, सो उसने उन्हें एक दृष्टान्त कथा सुनाई। वह बोला: ८ "जब तुम्हें कोई विवाह भोज पर बुलाये तो वहाँ किसी आदरपूर्ण स्थान पर मत बैठो। क्योंकि हो सकता है वहाँ कोई तुमसे अधिक बड़ा व्यक्ति उसके द्वारा बुलाया गया हो। ९ फिर तुम दोनों को बुलाने वाला तुम्हारे पास आकर तुमसे कहेगा, 'अपना यह स्थान इस व्यक्ति को दे दो।' और फिर लज्जा के साथ तुम्हें सबसे नीचा स्थान ग्रहण करना पड़ेगा।

१० "सो जब तुम्हे बुलाया जाता है तो जाकर सबसे नीचे का स्थान ग्रहण करो जिससे जब तुम्हें आमंत्रित करने वाला आएगा तो तुमसे कहेगा, 'हे मित्र, उठ ऊपर बैठ।' फिर उन सब के सामने, जो तेरे साथ वहाँ अतिथि होंगे, तेरा मान बढ़ेगा। ११ क्योंकि हर कोई जो अपने आपको उठायेगा, उसे नीचा किया जायेगा और जो अपने आपको नीचा बनाएगा, उसे उठाया जायेगा।"

प्रतिफल

१२ फिर जिसने उसे आमन्त्रित किया था, वह उससे बोला, "जब कभी तू कोई दिन या रात का भोज दे तो अपने मित्रों, भाई बंधों, संबधियों या धनी मानी पड़ोसियों को मत बुला क्योंकि बदले में वे तुझे बुलायेंगे और इस प्रकार तुझे उसका फल मिल जायेगा। १३ बल्कि जब तू कोई भोज दे तो दीन दुखियों, अपाहिजों, लँगड़ों और अंधों को बुला। १४ फिर क्योंकि उनके पास तुझे वापस लौटाने को कुछ नहीं है सो यह तेरे लिए आशीर्वाद बन जायेगा। इसका प्रतिफल तुझे धर्मी लोगों के जी उठने पर दिया जायेगा।"

बड़े भोज की दृष्टान्त कथा

(मत्ती २२:१-१०)

१५ फिर उसके साथ भोजन कर रहे लोगों में से एक ने यह सुनकर यीशु से कहा, "हर वह व्यक्ति धन्य है, जो परमेश्वर के राज्य में भोजन करता है!"

१६ तब यीशु ने उससे कहा, "एक व्यक्ति किसी बड़े भोज की तैयारी कर रहा था, उसने बहुत से लोगों को न्योता दिया। १७ फिर दावत के समय जिन्हें न्योता दिया गया था, दास को भेजकर यह कहलवाया, 'आओ क्योंकि अब भोजन तैयार है।' १८ वे सभी एक जैसे आनाकानी करने लगे। पहले ने उससे कहा, 'मैंने एक खेत मोल लिया है, मुझे जाकर उसे देखना है, कृपया मुझे क्षमा करें।' १९ फिर दूसरे ने कहा, 'मैंने पाँच जोड़ी बैल मोल लिये हैं, मैं तो बस उन्हें परखने जा ही रहा हूँ, कृपया मुझे क्षमा करें।' २० एक और भी बोला, 'मैंने पत्नी ब्याही है, इस कारण मैं नहीं आ सकता।'

२१ "सो जब वह सेवक लौटा तो उसने अपने स्वामी को ये बातें बता दीं। इस पर उस घर का स्वामी बहुत क्रोधित हुआ और अपने सेवक से कहा, 'शीघ्र ही नगर के गली कूँचों में जा और दीन-हीनों, अपाहिजों, अंधों और लँगड़ों को यहाँ बुला ला।'

२२ "उस दास ने कहा, 'हे स्वामी, तुम्हारी आज्ञा पूरी कर दी गयी है किन्तु अभी भी स्थान बचा है।' २३ फिर स्वामी ने सेवक से कहा, 'सड़कों पर और खेतों की मेढ़ों तक जाओ और वहाँ से लोगों को आग्रह करके यहाँ बुला लाओ ताकि मेरा घर भर जाये। २४ और मैं तुमसे कहता हूँ जो पहले बुलाये गये थे उनमें से एक भी मेरे भोज को न चखे!'"

नियोजित बनो

(मत्ती १०:३७-३८)

२५ यीशु के साथ अपार जनसमूह जा रहा था। वह उनकी तरफ़ मुड़ा और बोला, २६ "यदि मेरे पास कोई भी आता है और अपने पिता, माता, पत्नी

और बच्चों अपने भाइयों और बहनों और यहाँ
तक कि अपने जीवन तक से मुझ से अधिक प्रेम
रखता है, वह मेरा शिष्य नहीं हो सकता! २७ जो
अपना क्रूस उठाये बिना मेरे पीछे चलता है, वह
मेरा शिष्य नहीं हो सकता।
२८ “यदि तुममें से कोई बुर्ज बनाना चाहे तो क्या
वह पहले बैठ कर उसके मूल्य का, यह देखने के
लिये कि उसे पूरा करने के लिये उसके पास काफ़ी
कुछ है या नहीं, हिसाब-किताब नहीं लगायेगा?
२९ नहीं तो वह नींव तो डाल देगा और उसे पूरा
न कर पाने से, जिन्होंने उसे शुरू करते देखा, सब
उसकी हँसी उड़ायेंगे और कहेंगे, ३० ‘अरे देखो इस
व्यक्ति ने बनाना प्रारम्भ तो किया, पर यह उसे
पूरा नहीं कर सका।’
३१ “या कोई राजा ऐसा होगा जो किसी दूसरे
राजा के विरोध में युद्ध छेड़ने जाये और पहले बैठ
कर यह विचार न करे कि अपने दस हज़ार सैनिकों
के साथ क्या वह बीस हज़ार सैनिकों वाले अपने
विरोधी का सामना कर भी सकेगा या नहीं। ३२ और
यदि वह समर्थ नहीं होगा तो उसका विरोधी अभी
मार्ग में ही होगा तभी वह अपना प्रतिनिधि मंडल
भेज कर शांति-संधि का प्रस्ताव करेगा।
३३ “तो फिर इसी प्रकार तुममें से कोई भी जो
अपनी सभी सम्पत्तियों का त्याग नहीं कर देता,
मेरा शिष्य नहीं हो सकता।

अपना प्रभाव मत खोओ

(मत्ती ५:१३; मरकुस ९:५०)

३४ “नमक उत्तम है पर यदि वह अपना स्वाद खो
दे तो उसे किसमें डाला जा सकता है। ३५ न तो वह
मिट्टी के और न ही खाद की काम में आता है,
लोग बस उसे यूँ ही फेंक देते हैं।
“जिसके सुनने के कान हों, वह सुन ले।”

खोए हुए को पाने के आनन्द की दृष्टान्त-कथाएँ

(मत्ती १८:१२-१४)

१५ १ अब जब कर वसूलने वाले और पापी
सभी उसे सुनने उसके पास आने लगे थे।
२ तो फ़रीसी और यहूदी धर्मशास्त्री बड़बड़ाते
हुए कहने लगे, “यह व्यक्ति तो पापियों का
स्वागत करता है और उनके साथ खाता है।”
३ इस पर यीशु ने उन्हें यह दृष्टान्त कथा सुनाई:
४ “मानों तुममें से किसी के पास सौ भेड़ें हैं और
उनमें से कोई एक खो जाये तो क्या वह निन्यानबे
भेड़ों को खुले में छोड़ कर खोई हुई भेड़ का पीछा
तब तक नहीं करेगा, जब तक कि वह उसे पा न
ले। ५ फिर जब उसे भेड़ मिल जाती है तो वह उसे
प्रसन्नता के साथ अपने कन्धों पर उठा लेता
है। ६ और जब घर लौटता है तो अपने मित्रों
और पड़ोसियों को पास बुलाकर उनसे कहता है,
‘मेरे साथ आनन्द मनाओ क्योंकि मुझे मेरी खोयी
हुई भेड़ मिल गयी है।’ ७ मैं तुमसे कहता हूँ, इसी
प्रकार किसी एक मन फिराने वाले पापी के लिये,
उन निन्यानबे धर्मी पुरुषों से, जिन्हें मन फिराने की
आवश्यकता नहीं है, स्वर्ग में कहीं अधिक आनन्द
मनाया जाएगा।
८ “या सोचो कोई औरत है जिसके पास दस
चाँदी के सिक्के हैं और उसका एक सिक्का खो
जाता है तो क्या वह दीपक जला कर घर को तब
तक नहीं बुहारती रहेगी और सावधानी से नहीं
खोजती रहेगी जब तक कि वह उसे मिल न जाये?
९ और जब वह उसे पा लेती है तो अपने मित्रों
और पड़ोसियों को पास बुला कर कहती है, ‘मेरे
साथ आनन्द मनाओ क्योंकि मेरा सिक्का जो खो
गया था, मिल गया है।’ १० मैं तुमसे कहता हूँ कि
इसी प्रकार एक मन फिराने वाले पापी के लिये
भी परमेश्वर के दूतों की उपस्थिति में वहाँ आनन्द
मनाया जायेगा।”

भटके पुत्र को पाने की दृष्टान्त-कथा

११ फिर यीशु ने कहा: “एक व्यक्ति के दो बेटे थे।
१२ सो छोटे ने अपने पिता से कहा, ‘जो सम्पत्ति
मेरे बाँटे में आती है, उसे मुझे दे दे।’ तो पिता ने
उन दोनों को अपना धन बाँट दिया।
१३ “अभी कोई अधिक समय नहीं बीता था, कि
छोटे बेटे ने अपनी समूची सम्पत्ति समेटी और
किसी दूर देश को चल पड़ा। और वहाँ जँगलियों
सा उद्दण्ड जीवन जीते हुए उसने अपना सारा धन
बर्बाद कर डाला। १४ जब उसका सारा धन समाप्त
हो चुका था तभी उस देश में सभी ओर व्यापक
भयानक अकाल पड़ा। सो वह अभाव में रहने
लगा। १५ इसलिये वह उस देश के किसी व्यक्ति
के यहाँ जाकर मज़दूरी करने लगा उसने उसे अपने
खेतों में सुअर चराने भेज दिया। १६ वहाँ उसने
सोचा कि उसे वे फलियाँ ही पेट भरने को मिल
जायें जिन्हें सुअर खाते थे। पर किसी ने उसे एक
फली तक नहीं दी।
१७ “फिर जब उसके होश ठिकाने आये तो वह
बोला, ‘मेरे पिता के पास कितने ही ऐसे मज़दूर
हैं जिनके पास खाने के बाद भी बचा रहता है,
और मैं यहाँ भूखों मर रहा हूँ। १८ सो मैं यहाँ से
उठकर अपने पिता के पास जाऊँगा और उससे

कहूँगा : पिताजी, मैंने स्वर्ग के परमेश्वर और तेरे
विरुद्ध पाप किया है। १९ अब आगे मैं तेरा बेटा
कहलाने योग्य नहीं रहा हूँ। मुझे अपना एक
मज़दूर समझकर रख ले।' २० सो वह उठकर अपने
पिता के पास चल दिया।

छोटे पुत्र का लौटना

"अभी वह पर्याप्त दूरी पर ही था कि उसके पिता
ने उसे देख लिया और उसके पिता को उस पर बहुत
दया आयी। सो दौड़ कर उसने उसे अपनी बाहों में
समेट लिया और चूमा। २१ पुत्र ने पिता से कहा,
'पिताजी, मैंने तुम्हारी दृष्टि में और स्वर्ग के विरुद्ध
पाप किया है, मैं अब और अधिक तुम्हारा पुत्र
कहलाने योग्य नहीं हूँ।'
२२ "किन्तु पिता ने अपने सेवकों से कहा, 'जल्दी
से उत्तम वस्त्र निकाल लाओ और उन्हें इसे
पहनाओ। इसके हाथ में अँगूठी और पैरों में
चप्पल पहनाओ। २३ कोई मोटा ताजा बछड़ा
लाकर मारो और आओ उसे खाकर हम आनन्द
मनायें। २४ क्योंकि मेरा यह बेटा जो मर गया था
अब जैसे फिर जीवित हो गया है। यह खो गया
था, पर अब यह मिल गया है।' सो वे आनन्द मनाने
लगे।

बड़े बेटे की शिकायत

२५ "अब उसका बड़ा बेटा जो खेत में था, जब
आया और घर के पास पहुँचा तो उसने गाने नाचने
के स्वर सुने। २६ उसने अपने एक सेवक को बुलाकर
पूछा, 'यह सब क्या हो रहा है?' २७ सेवक ने उससे
कहा, 'तेरा भाई आ गया है और तेरे पिता ने उसे
सुरक्षित और स्वस्थ पाकर एक मोटा सा बछड़ा
कटवाया है!'
२८ "बड़ा भाई आग बबूला हो उठा, वह भीतर
जाना तक नहीं चाहता था। सो उसके पिता ने
बाहर आकर उसे समझाया बुझाया। २९ पर उसने
पिता को उत्तर दिया, 'देख मैं बरसों से तेरी सेवा
करता आ रहा हूँ। मैंने तेरी किसी भी आज्ञा का
विरोध नहीं किया, पर तूने मुझे तो कभी एक बकरी
तक नहीं दी कि मैं अपने मित्रों के साथ कोई
आनन्द मना सकता। ३० पर जब तेरा यह बेटा
आया जिसने वेश्याओं में तेरा धन उड़ा दिया,
उसके लिये तूने मोटा ताजा बछड़ा मरवाया।'
३१ "पिता ने उससे कहा, 'मेरे पुत्र, तू सदा ही
मेरे पास है और जो कुछ मेरे पास है, सब तेरा
है। ३२ किन्तु हमें प्रसन्न होना चाहिए और उत्सव
मनाना चाहिये क्योंकि तेरा यह भाई, जो मर गया
था, अब फिर जीवित हो गया है। यह खो गया था,
जो फिर अब मिल गया है।'"

सच्चा धन

१६ १ फिर यीशु ने अपने शिष्यों से कहा, "एक
धनी पुरुष था। उसका एक प्रबन्धक था
उस प्रबन्धक पर लांछन लगाया गया कि वह
उसकी सम्पत्ति को नष्ट कर रहा है। २ सो उसने
उसे बुलाया और कहा, 'तेरे विषय में मैं यह क्या
सुन रहा हूँ? अपने प्रबन्ध का लेखा जोखा दे
क्योंकि अब आगे तू प्रबन्धक नहीं रह सकता।'
३ "इस पर प्रबन्धक ने मन ही मन कहा, 'मेरा
स्वामी मुझसे मेरा प्रबन्धक का काम छीन रहा
है, सो अब मैं क्या करूँ? मुझमें अब इतनी शक्ति
भी नहीं रही कि मैं खेतों में खुदाई-गुड़ाई का काम
तक कर सकूँ और माँगने में मुझे लाज आती है।
४ ठीक, मुझे समझ आ गया कि मुझे क्या करना
चाहिये, जिससे जब मैं प्रबन्धक के पद से हटा
दिया जाऊँ तो लोग अपने घरों में मेरा स्वागत
सत्कार करें।'
५ "सो उसने स्वामी के हर देनदार को बुलाया।
पहले व्यक्ति से उसने पूछा, 'तुझे मेरे स्वामी का
कितना देना है?' ६ उसने कहा, 'एक सौ माप जैतून
का तेल।' इस पर वह उससे बोला, 'यह ले अपनी
बही और बैठ कर जल्दी से इसे पचास कर दे।'
७ "फिर उसने दूसरे से कहा, 'और तुझ पर
कितनी देनदारी है?' उसने बताया, 'एक सौ भार
गेहूँ।' वह उससे बोला, 'यह ले अपनी बही और
सौ का अस्सी कर दे।'
८ "इस पर उसके स्वामी ने उस बेईमान
प्रबन्धक की प्रशंसा की क्योंकि उसने चतुराई
से काम लिया था। सांसारिक व्यक्ति अपने
जैसे व्यक्तियों से व्यवहार करने में आध्यात्मिक
व्यक्तियों से अधिक चतुर है।
९ "मैं तुमसे कहता हूँ सांसारिक धन-सम्पत्ति
से अपने लिये 'मित्र' बनाओ। क्योंकि जब धन-
सम्पत्ति समाप्त हो जायेगी, वे अनन्त निवास में
तुम्हारा स्वागत करेंगे। १० वे लोग जिन पर थोड़े से
के लिये विश्वास किया जायेगा और इसी तरह जो
थोड़े से के लिए बेईमान हो सकता है वह अधिक
के लिए भी बेईमान होगा। ११ इस प्रकार यदि तुम
सांसारिक सम्पत्ति के लिये ही भरोसे योग्य नहीं
रहे तो सच्चे धन के विषय में तुम पर कौन भरोसा
करेगा? १२ जो किसी दूसरे का है, यदि तुम उसके
लिये विश्वास के पात्र नहीं रहे, तो जो तुम्हारा
है, उसे तुम्हें कौन देगा?

१३ "कोई भी दास दो स्वामियों की सेवा नहीं कर
सकता। वह या तो एक से घृणा करेगा और दूसरे
से प्रेम या वह एक के प्रति समर्पित रहेगा और
दूसरे को तिरस्कार करेगा। तुम धन और परमेश्वर
दोनों की उपासना एक साथ नहीं कर सकते।"

प्रभु की विधि अटल है
(मत्ती ११:१२-१३)

१४ अब जब पैसे के पुजारी फरीसियों ने यह सब
सुना तो उन्होंने यीशु की बहुत खिल्ली उड़ाई।
१५ इस पर उसने उनसे कहा, "तुम वो हो जो लोगों
को यह जताना चाहते हो कि तुम बहुत अच्छे हो
किन्तु परमेश्वर तुम्हारे मनों को जानता है। लोग
जिसे बहुत मूल्यवान समझते हैं, परमेश्वर के लिए
वह तुच्छ है।
१६ "यूहन्ना तक व्यवस्था की विधि और नबियों
की प्रमुखता रही। उसके बाद परमेश्वर के राज्य
का सुसमाचार प्रचारित किया जा रहा है और हर
कोई बड़ी तीव्रता से इसकी ओर खिंचा चला आ
रहा है। १७ फिर भी स्वर्ग और धरती का डिग जाना
तो सरल है किन्तु व्यवस्था के विधि के एक-एक
बिंदु की शक्ति सदा अटल है।

तलाक और पुर्नविवाह

१८ "वह हर कोई जो अपनी पत्नी को त्यागता
है और दूसरी को ब्याहता है, व्यभिचार करता है।
ऐसे ही जो अपने पति द्वारा त्यागी गयी, किसी
स्त्री से ब्याह करता है, वह भी व्यभिचार करता
है।"

धनी पुरुष और लाज़र

१९ "अब देखो, एक व्यक्ति था जो बहुत धनी
था। वह बैंगनी रंग के उत्तम मलमल के वस्त्र
पहनता था और हर दिन विलासिता के जीवन का
आनन्द लेता था। २० वहीं लाजर नाम का एक दीन
दुखी उसके द्वार पर पड़ा रहता था। उसका शरीर
घावों से भरा हुआ था। २१ उस धनी पुरुष की जूठन
से ही वह अपना पेट भरने को तरसता रहता था।
यहाँ तक कि कुत्ते भी आते और उसके घावों को
चाट जाते।
२२ "और फिर ऐसा हुआ कि वह दीन-हीन
व्यक्ति मर गया। सो स्वर्गदूतों ने ले जाकर उसे
इब्राहीम की गोद में बैठा दिया। फिर वह धनी
पुरुष भी मर गया और उसे दफ़ना दिया गया।
२३ नरक में तड़पते हुए उसने जब आँखें उठा कर
देखा तो इब्राहीम उसे बहुत दूर दिखाई दिया
किन्तु उसने लाज़र को उसकी गोद में देखा। २४ तब
उसने पुकार कर कहा, 'पिता इब्राहीम, मुझ पर
दया कर और लाजर को भेज कि वह पानी में अपनी
उँगली डुबो कर मेरी जीभ ठंडी कर दे, क्योंकि मैं
इस आग में तड़प रहा हूँ।'
२५ "किन्तु इब्राहीम ने कहा, 'हे मेरे पुत्र, याद
रख, तूने तेरे जीवन काल में अपनी अच्छी वस्तुएँ
पा लीं जबकि लाज़र को बुरी वस्तुएँ ही मिलीं। सो
अब वह यहाँ आनन्द भोग रहा है और तू यातना।
२६ और इस सब कुछ के अतिरिक्त हमारे और
तुम्हारे बीच एक बड़ी खाई डाल दी गयी है ताकि
यहाँ से यदि कोई तेरे पास जाना चाहे, वह जा न
सके और वहाँ से कोई यहाँ आ न सके।'
२७ "उस सेठ ने कहा, 'तो फिर हे पिता, मैं तुझसे
प्रार्थना करता हूँ कि तू लाज़र को मेरे पिता के
घर भेज दे २८ क्योंकि मेरे पाँच भाई हैं, वह उन्हें
चेतावनी देगा ताकि उन्हें तो इस यातना के स्थान
पर न आना पडे।'
२९ "किन्तु इब्राहीम ने कहा, 'उनके पास मूसा
है और नबी हैं। उन्हें उनकी सुनने दे।'
३० "सेठ ने कहा, 'नहीं, पिता इब्राहीम, यदि
कोई मरे हुओं में से उनके पास जाये तो वे मन
फिराएंगे।'
३१ "इब्राहीम ने उससे कहा, 'यदि वे मूसा और
नबियों की नहीं सुनते तो, यदि कोई मरे हुओं में से
उठकर उनके पास जाये तो भी वे नहीं मानेंगे।'"

पाप और क्षमा
(मत्ती १८:६-७, २१-२२; मरकुस ९:४२)

१७ १ यीशु ने अपने शिष्यों से कहा, "जिनसे
लोग भटकते हैं, ऐसी बातें तो होंगी ही
किन्तु धिक्कार है उस व्यक्ति को जिसके द्वारा वे
बातें हों। २ उसके लिये अधिक अच्छा यह होता
कि बजाय इसके कि वह इन छोटों में से किसी
को पाप करने को प्रेरित कर सके, उसके गले में
चक्की का पाट लटका कर उसे सागर में धकेल
दिया जाता। ३ सावधान रहो!
"यदि तुम्हारा भाई पाप करे तो उसे डाँटो और
यदि वह अपने किये पर पछताये तो उसे क्षमा कर
दो। ४ यदि हर दिन वह तेरे विरुद्ध सात बार पाप
करे और सातों बार लौटकर तुझसे कहे कि मुझे
पछतावा है तो तू उसे क्षमा कर दे।"

तुम्हारा विश्वास कितना बड़ा है?

५ इस पर शिष्यों ने प्रभु से कहा, "हमारे
विश्वास की बढ़ोतरी करा।"

६ प्रभु ने कहा, “यदि तुममें सरसों के दाने
जितना भी विश्वास होता तो तुम इस शहतूत के
पेड़ से कह सकते ‘उखड़ जा और समुद्र में जा
लग।’ और वह तुम्हारी बात मान लेता।

उत्तम सेवक बनो

७ “मान लो तुममें से किसी के पास एक दास
है जो हल चलाता या भेड़ों को चराता है। वह
जब खेत से लौट कर आये तो क्या उसका स्वामी
उससे कहेगा, ‘तुरन्त आ और खाना खाने को बैठ
जा?’ ८ किन्तु बजाय इसके क्या वह उससे यह नहीं
कहेगा, ‘मेरा भोजन तैयार कर, अपने वस्त्र पहन
और जब तक मैं खा-पी न लूँ, मेरी सेवा कर; तब
इसके बाद तू भी खा पी सकता है?’ ९ अपनी आज्ञा
पूरी करने पर क्या वह उस सेवक का धन्यवाद
करता है। १० तुम्हारे साथ भी ऐसा ही है। जो कुछ
तुमसे करने को कहा गया है, उसे कर चुकने के बाद
तुम्हें कहना चाहिये, ‘हम दास हैं, हम किसी बड़ाई
के अधिकारी नहीं हैं। हमने तो बस अपना कर्तव्य
किया है।’”

आभारी रहो

११ फिर जब यीशु यरूशलेम जा रहा था तो वह
सामरिया और गलील के बीच की सीमा के पास से
निकला। १२ जब वह एक गाँव में जा रहा था तभी
उसे दस कोढ़ी मिले। वे कुछ दूरी पर खड़े थे। १३ वे
ऊँचे स्वर में पुकार कर बोले, “हे यीशु! हे स्वामी!
हम पर दया कर!”

१४ फिर जब उसने उन्हें देखा तो वह बोला,
“जाओ और अपने आप को याजकों को दिखाओ।”

वे अभी जा ही रहे थे कि वे कोढ़ से मुक्त हो
गये। १५ किन्तु उनमें से एक ने जब यह देखा कि
वह शुद्ध हो गया है, तो वह वापस लौटा और ऊँचे
स्वर में परमेश्वर की स्तुति करने लगा। १६ वह मुँह
के बल यीशु के चरणों में गिर पड़ा और उसका
आभार व्यक्त किया। (और देखो, वह एक सामरी
था।) १७ यीशु ने उससे पूछा, “क्या सभी दस के
दस कोढ़ से मुक्त नहीं हो गये? फिर वे नौ कहाँ
हैं? १८ क्या इस परदेसी को छोड़ कर उनमें से कोई
भी परमेश्वर की स्तुति करने वापस नहीं लौटा।”
१९ फिर यीशु ने उससे कहा, “खड़ा हो और चला
जा, तेरे विश्वास ने तुझे अच्छा किया है।”

परमेश्वर का राज्य तुम्हारे भीतर ही है

(मत्ती २४:२३-२८, ३७-४१)

२० एक बार जब फरीसियों ने यीशु से पूछा,
“परमेश्वर का राज्य कब आयेगा?”

तो उसने उन्हें उत्तर दिया, “परमेश्वर का राज्य
ऐसे प्रत्यक्ष रूप में नहीं आता। २१ लोग यह
नहीं कहेंगे, ‘वह यहाँ है’, या ‘वह वहाँ है’, क्योंकि
परमेश्वर का राज्य तो तुम्हारे भीतर ही है।”

२२ किन्तु उसने शिष्यों को बताया, “ऐसा समय
आयेगा जब तुम मनुष्य के पुत्र के दिनों में से एक
दिन को भी देखने को तरसोगे किन्तु, उसे देख नहीं
पाओगे। २३ और लोग तुमसे कहेंगे, ‘देखो, यहाँ!’
या ‘देखो, वहाँ!’ तुम वहाँ मत जाना या उनका
अनुसरण मत करना।

२४ “वैसे ही जैसे बिजली चमक कर एक छोर
से दूसरे छोर तक आकाश को चमका देती है,
वैसे ही मनुष्य का पुत्र भी अपने दिन होगा।
२५ किन्तु पहले उसे बहुत सी यातनाएँ भोगनी
होंगी और इस पीढ़ी द्वारा वह निश्चय ही नकार
दिया जायेगा।

२६ “वैसे ही जैसे नूह के दिनों में हुआ था, मनुष्य
के पुत्र के दिनों में भी होगा। २७ उस दिन तक
जब नूह ने नौका में प्रवेश किया, लोग खाते-पीते
रहे, ब्याह रचाते और विवाह में दिये जाते रहे।
फिर जल प्रलय आया और उसने सबको नष्ट कर
दिया।

२८ “इसी प्रकार लूत के दिनों में भी ठीक ऐसे ही
हुआ था। लोग खाते-पीते, मोल लेते, बेचते खेती
करते और घर बनाते रहे। २९ किन्तु उस दिन जब
लूत सदोम से बाहर निकला तो आकाश से अग्नि
और गंधक बरसने लगे और वे सब नष्ट हो गये।
३० उस दिन भी जब मनुष्य का पुत्र प्रकट होगा,
ठीक ऐसा ही होगा।

३१ “उस दिन यदि कोई व्यक्ति छत पर हो और
उसका सामान घर के भीतर हो तो उसे लेने वह
नीचे न उतरे। इसी प्रकार यदि कोई व्यक्ति खेत
में हो तो वह पीछे न लौटे। ३२ लूत की पत्नी को
याद करो,

३३ “जो कोई अपना जीवन बचाने का प्रयत्न
करेगा, वह उसे खो देगा और जो अपना जीवन
खोयेगा, वह उसे बचा लेगा। ३४ मैं तुम्हें बताता
हूँ, उस रात एक चारपाई पर जो दो मनुष्य होंगे,
उनमें से एक उठा लिया जायेगा और दूसरा छोड़
दिया जायेगा। ३५ दो स्त्रियाँ जो एक साथ चक्की

पीसती होंगी, उनमें से एक उठा ली जायेगी और
दूसरी छोड़ दी जायेगी।" ३६ *
३७ फिर यीशु के शिष्यों ने उससे पूछा, "हे प्रभु,
ऐसा कहाँ होगा ?"
उसने उनसे कहा, "जहाँ लाश पड़ी होगी, गिद्ध
भी वहीं इकट्ठे होंगे।"

परमेश्वर अपने भक्त जनों की अवश्य सुनेगा

१८ १ फिर उसने उन्हें यह बताने के लिए कि वे
निरन्तर प्रार्थना करते रहें और निराश न
हों, यह दृष्टान्त कथा सुनाई : २ वह बोला : "किसी
नगर में एक न्यायाधीश हुआ करता था। वह न
तो परमेश्वर से डरता था और न ही मनुष्यों की
परवाह करता था। ३ उसी नगर में एक विधवा
भी रहा करती थी। और वह उसके पास बार बार
आती और कहती, 'देख, मुझे मेरे प्रति किए
गए अन्याय के विरुद्ध न्याय मिलना ही चाहिये।'
४ सो एक लम्बे समय तक तो वह न्यायाधीश
आनाकानी करता रहा पर आखिरकार उसने अपने
मन में सोचा, 'न तो मैं परमेश्वर से डरता हूँ और न
लोगों की परवाह करता हूँ। ५ तो भी क्योंकि इस
विधवा ने मेरे कान खा डाले हैं, सो मैं देखूँगा कि
उसे न्याय मिल जाये ताकि यह मेरे पास बार-बार
आकर कहीं मुझे ही न थका डाले।'"
६ फिर प्रभु ने कहा, "देखो उस दुष्ट न्यायाधीश
ने क्या कहा था। ७ सो क्या परमेश्वर अपने चुने
हुए लोगों पर ध्यान नहीं देगा कि उन्हें, जो उसे
रात दिन पुकारते रहते हैं, न्याय मिले ? क्या वह
उनकी सहायता करने में देर लगायेगा ? ८ मैं तुमसे
कहता हूँ कि वह देखेगा कि उन्हें न्याय मिल चुका
है और शीघ्र ही मिल चुका है। फिर भी जब
मनुष्य का पुत्र आयेगा तो क्या वह इस धरती
पर विश्वास को पायेगा ?"

दीनता के साथ परमेश्वर की उपासना

९ फिर यीशु ने उन लोगों के लिए भी जो अपने
आप को तो नेक मानते थे, और किसी को कुछ नहीं
समझते, यह दृष्टान्त कथा सुनाई : १० "मन्दिर में
दो व्यक्ति प्रार्थना करने गये, एक फ़रीसी था और
दूसरा कर वसूलने वाला। ११ वह फ़रीसी अलग
खड़ा होकर यह प्रार्थना करने लगा, 'हे परमेश्वर,
मैं तेरा धन्यवाद करता हूँ कि मैं दूसरे लोगों जैसा
डाकू, ठग और व्यभिचारी नहीं हूँ और न ही इस
कर वसूलने वाले जैसा हूँ। १२ मैं सप्ताह में दो
बार उपवास रखता हूँ और अपनी समूची आय का
दसवाँ भाग दान देता हूँ।'
१३ "किन्तु वह कर वसूलने वाला जो दूर खड़ा था
और यहाँ तक कि स्वर्ग की ओर अपनी आँखें तक
नहीं उठा रहा था, अपनी छाती पीटते हुए बोला,
'हे परमेश्वर, मुझ पापी पर दया कर।' १४ मैं तुम्हें
बताता हूँ, यही मनुष्य नेक ठहराया जाकर अपने
घर लौटा, न कि वह दूसरा। क्योंकि हर वह व्यक्ति
जो अपने आप को बड़ा समझेगा, उसे छोटा बना
दिया जायेगा और जो अपने आप को दीन मानेगा,
उसे बड़ा बना दिया जायेगा।"

बच्चे स्वर्ग के सच्चे अधिकारी हैं

(मत्ती १९:१३-१५; मरकुस १०:१३-१६)

१५ लोग अपने बच्चों तक को यीशु के पास ला
रहे थे कि वह उन्हें बस छू भर दे। किन्तु जब
उसके शिष्यों ने यह देखा तो उन्हें झिड़क दिया।
१६ किन्तु यीशु ने बच्चों को अपने पास बुलाया
और शिष्यों से कहा, "इन छोटे बच्चों को मेरे
पास आने दो, इन्हें रोको मत, क्योंकि परमेश्वर
का राज्य ऐसों का ही है। १७ मैं सच्चाई के साथ
तुमसे कहता हूँ कि ऐसा कोई भी जो परमेश्वर के
राज्य को एक अबोध बच्चे की तरह ग्रहण नहीं
करता, उसमें कभी प्रवेश नहीं पायेगा!"

एक धनिक का यीशु से प्रश्न

(मत्ती १९:१६-३०; मरकुस १०:१७-३१)

१८ फिर किसी यहूदी नेता ने यीशु से पूछा, "हे
उत्तम गुरु, अनन्त जीवन का अधिकार पाने के
लिये मुझे क्या करना चाहिये ?"
१९ यीशु ने उससे कहा, "तू मुझे उत्तम क्यों
कहता है ? केवल परमेश्वर को छोड़ कर और कोई
भी उत्तम नहीं है। २० तू व्यवस्था के आदेशों को
तो जानता है, 'व्यभिचार मत कर, हत्या मत कर,
चोरी मत कर, झूठी गवाही मत दे, अपने पिता
और माता का आदर कर।' †"
२१ वह यहूदी नेता बोला, "मैं इन सब बातों को
अपने लड़कपन से ही मानता आया हूँ।"
२२ यीशु ने जब यह सुना तो वह उससे बोला,
"अभी भी एक बात है जिसकी तुझ में कमी है।

---

*१७:३६ कुछ यूनानी प्रतियों में पद ३६ जोड़ा गया है : "दो पुरुष जो खेत में होंगे, उनमें से एक को उठा लिया जायेगा और दूसरे को छोड़ दिया जायेगा।"

†१८:२० उद्धरण निर्गमन २०:१२-२६; व्यवस्था विवरण ५:१६-२०

तेरे पास जो कुछ है, सब कुछ को बेच डाल और
फिर जो मिले, उसे गरीबों में बाँट दे। इससे तुझे
स्वर्ग में भण्डार मिलेगा। फिर आ और मेरे पीछे
हो ले।" २३ सो जब उस यहूदी नेता ने यह सुना
तो वह बहुत दुखी हुआ, क्योंकि उसके पास बहुत
सारी सम्पत्ति थी।
२४ यीशु ने जब यह देखा कि वह बहुत दुखी है
तो उसने कहा, "उन लोगों के लिये जिनके पास धन
है, परमेश्वर के राज्य में प्रवेश कर पाना कितना
कठिन है! २५ हाँ, किसी ऊँट के लिये सूई के नकुए
से निकल जाना तो सम्भव है पर किसी धनिक का
परमेश्वर के राज्य में प्रवेश कर पाना असम्भव
है।"

उद्धार किसका होगा

२६ वे लोग जिन्होंने यह सुना, बोले, "फिर भला
उद्धार किसका होगा?"
२७ यीशु ने कहा, "वे बातें जो मनुष्य के लिए
असम्भव हैं, परमेश्वर के लिए सम्भव हैं।"
२८ फिर पतरस ने कहा, "देख, हमारे पास जो
कुछ था, तेरे पीछे चलने के लिए हमने वह सब
कुछ त्याग दिया है।"
२९ तब यीशु उनसे बोला, "मैं सच्चाई के साथ
तुमसे कहता हूँ, ऐसा कोई नहीं है जिसने परमेश्वर
के राज्य के लिये घर-बार या पत्नी या भाई-बंधु
या माता-पिता या संतान का त्याग कर दिया हो,
३० और उसे इसी वर्तमान युग में कई गुणा अधिक
न मिले और आने वाले काल में वह अनन्त जीवन
को न पा जाये।"

यीशु मर कर जी उठेगा

(मत्ती २० :१७-१९ ; मरकुस १० :३२-३४)

३१ फिर यीशु उन बारह प्रेरितों को एक ओर ले
जाकर उनसे बोला, "सुनो, हम यरूशलेम जा रहे
हैं। मनुष्य के पुत्र के विषय में नबियों द्वारा जो
कुछ लिखा गया है, वह पूरा होगा। ३२ हाँ, वह
विधर्मियों को सौंपा जायेगा, उसकी हँसी उड़ाई
जायेगी, उसे कोसा जायेगा और उस पर थूका
जायेगा। ३३ फिर वे उसे पीटेंगे और मार डालेंगे
और तीसरे दिन यह फिर जी उठेगा।" ३४ इनमें से
कोई भी बात वे नहीं समझ सके। यह कथन उनसे
छिपा ही रह गया। वे समझ नहीं सके कि वह किस
विषय में बता रहा था।

अंधे को आँखें

(मत्ती २० :२९-३४ ; मरकुस १० :४६-५२)

३५ यीशु जब यरीहो के पास पहुँच रहा था तो
भीख माँगता हुआ एक अंधा, वहीं राह किनारे
बैठा था। ३६ जब अंधे ने पास से लोगों के जाने की
आवाज़ सुनी तो उसने पूछा, "क्या हो रहा है?"
३७ सो लोगों ने उससे कहा, "नासरी यीशु यहाँ
से जा रहा है।"
३८ सो अंधा यह कहते हुए पुकार उठा, "दाऊद
के बेटे यीशु! मुझ पर दया कर।"
३९ वे जो आगे चल रहे थे उन्होंने उससे चुप रहने
को कहा। किन्तु वह और अधिक पुकारने लगा,
"दाऊद के पुत्र, मुझ पर दया कर।"
४० यीशु रुक गया और उसने आज्ञा दी कि
नेत्रहीन को उसके पास लाया जाये। सो जब वह
पास आया तो यीशु ने उससे पूछा, ४१ "तू क्या
चाहता है? मैं तेरे लिये क्या करूँ?"
उसने कहा, "हे प्रभु, मैं फिर से देखना चाहता
हूँ।"
४२ इस पर यीशु ने कहा, "तुझे ज्योति मिले, तेरे
विश्वास ने तेरा उद्धार किया है।"
४३ और तुरन्त ही उसे आँखें मिल गयीं। वह
परमेश्वर की महिमा का बखान करते हुए यीशु के
पीछे हो लिया। जब सब लोगों ने यह देखा तो वे
परमेश्वर की स्तुति करने लगे।

जक्कई

१९ १ यीशु यरीहो में प्रवेश करके नगर से
होकर जा रहा था २ वहाँ जक्कई नाम का
एक व्यक्ति भी मौजूद था। वह कर वसूलने वालों
का मुखिया था। सो वह बहुत धनी था। ३ वह
यह देखने का जतन कर रहा था कि यीशु कौन
है, पर भीड़ के कारण वह देख नहीं पा रहा था
क्योंकि उसका कद छोटा था। ४ सो वह सब के
आगे दौड़ता हुआ एक गूलर के पेड़ पर जा चढ़ा
ताकि, वह उसे देख सके क्योंकि यीशु को उसी
रास्ते से होकर निकलना था।
५ फिर जब यीशु उस स्थान पर आया तो उसने
ऊपर देखते हुए जक्कई से कहा, "जक्कई, जल्दी
से नीचे उतर आ क्योंकि मुझे आज तेरे ही घर
ठहरना है।"
६ सो उसने झटपट नीचे उतर प्रसन्नता के
साथ उसका स्वागत किया। ७ जब सब लोगों ने
यह देखा तो वे बड़बड़ाने लगे और कहने लगे, "यह
एक पापी के घर अतिथि बनने जा रहा है!"

८ किन्तु जक्कई खड़ा हुआ और प्रभु से बोला, “हे प्रभु, देख, मैं अपनी सारी सम्पत्ति का आधा गरीबों को दे दूँगा और यदि मैंने किसी का छल से कुछ भी लिया है तो उसे चौगुना करके लौटा दूँगा!”

९ यीशु ने उससे कहा, “इस घर पर आज उद्धार आया है, क्योंकि यह व्यक्ति भी इब्राहीम की ही एक सन्तान है। १० क्योंकि मनुष्य का पुत्र जो कोई खो गया है, उसे ढूँढने और उसकी रक्षा के लिए आया है।”

परमेश्वर जो देता है उसका उपयोग करो

(मत्ती २५:१४-३०)

११ वे जब इन बातों को सुन रहे थे तो यीशु ने उन्हें एक और दृष्टान्त-कथा सुनाई क्योंकि यीशु यरूशलेम के निकट था और वे सोचते थे कि परमेश्वर का राज्य तुरंत ही प्रकट होने जा रहा है। १२ सो यीशु ने कहा, “एक उच्च कुलीन व्यक्ति राजा का पद प्राप्त करके आने को किसी दूर देश को गया। १३ सो उसने अपने दस सेवकों को बुलाया और उनमें से हर एक को दस दस थैलियाँ दीं और उनसे कहा, ‘जब तक मैं लौटूँ, इनसे कोई व्यापार करो।’ * १४ किन्तु उसके नगर के दूसरे लोग उससे घृणा करते थे, इसलिये उन्होंने उसके पीछे यह कहने को एक प्रतिनिधि मंडल भेजा, ‘हम नहीं चाहते कि यह व्यक्ति हम पर राज करे।’

१५ “किन्तु उसने राजा की पदवी पा ली। फिर जब वह वापस घर लौटा तो जिन सेवकों को उसने धन दिया था उनको यह जानने के लिए कि उन्होंने क्या लाभ कमाया है, उसने बुलावा भेजा। १६ पहला आया और बोला, ‘हे स्वामी, तेरी थैलियों से मैंने दस थैलियाँ और कमायी है।’ १७ इस पर उसके स्वामी ने उससे कहा, ‘उत्तम सेवक, तूने अच्छा किया। क्योंकि तू इस छोटी सी बात पर विश्वास के योग्य रहा। तू दस नगरों का अधिकारी होगा।’

१८ “फिर दूसरा सेवक आया और उसने कहा, ‘हे स्वामी, तेरी थैलियों से पाँच थैलियाँ और कमाई हैं।’ १९ फिर उसने इससे कहा, ‘तू पाँच नगरों के ऊपर होगा।’

२० “फिर वह अन्य सेवक आया और कहा, ‘हे स्वामी, यह रही तेरी थैली जिसे मैंने गमछे में बाँध कर कहीं रख दिया था। २१ मैं तुझ से डरता रहा हूँ, क्योंकि तू, एक कठोर व्यक्ति है। तूने जो रखा नहीं है तू उसे भी ले लेता है और जो तूने बोया नहीं तू उसे काटता है।’

२२ “स्वामी ने उससे कहा, ‘अरे दुष्ट सेवक, मैं तेरे अपने ही शब्दों के आधार पर तेरा न्याय करूँगा। तू तो जानता ही है कि में जो रखता नहीं हूँ, उसे भी ले लेने वाला और जो बोता नहीं हूँ, उसे भी काटने वाला एक कठोर व्यक्ति हूँ? २३ तो तूने मेरा धन ब्याज पर क्यों नहीं लगाया, ताकि जब मैं वापस आता तो ब्याज समेत उसे ले लेता।’ २४ फिर पास खड़े लोगों से उसने कहा, ‘इसकी थैली इससे ले लो और जिसके पास दस थैलियाँ हैं उसे दे दो।’

२५ “इस पर उन्होंने उससे कहा, ‘हे स्वामी, उसके पास तो दस थैलियाँ है।’

२६ “स्वामी ने कहा, ‘मैं तुमसे कहता हूँ प्रत्येक उस व्यक्ति को जिसके पास है और अधिक दिया जायेगा और जिसके पास नहीं है, उससे जो उसके पास है, वह भी छीन लिया जायेगा। २७ किन्तु मेरे वे शत्रु जो नहीं चाहते कि मैं उन पर शासन करूँ उनको यहाँ मेरे सामने लाओ और मार डालो।’”

यीशु का यरूशलेम में प्रवेश

(मत्ती २१:१-११; मरकुस ११:१-११; यूहन्ना १२:१२-१९)

२८ ये बातें कह चुकने के बाद यीशु आगे चलता हुआ यरूशलेम की ओर बढ़ने लगा। २९ और फिर जब वह बैतफगे और बैतनिय्याह में उस पहाड़ी के निकट पहुँचा जो जैतून की पहाड़ी कहलाती थी तो उसने अपने दो शिष्यों को यह कह कर भेजा, ३० “यह जो गाँव तुम्हारे सामने है वहाँ जाओ। जैसे ही तुम वहाँ जाओगे, तुम्हें गधी का बच्चा वहाँ बँधा मिलेगा जिस पर किसी ने कभी सवारी नहीं की होगी, उसे खोलकर यहाँ ले आओ ३१ और यदि कोई तुमसे पूछे तुम इसे क्यों खोल रहे हो, तो तुम्हें उससे यह कहना है, ‘प्रभु को चाहिये।’”

३२ फिर जिन्हें भेजा गया था, वे गये और यीशु ने उनको जैसा बताया था, उन्हें वैसा ही मिला। ३३ सो जब वे उस गधी के बच्चे को खोल ही रहे थे, उसके स्वामी ने उनसे पूछा, “तुम इस गधी के बच्चे को क्यों खोल रहे हो?”

३४ उन्होंने कहा, “यह प्रभु को चाहिये।” ३५ फिर वे उसे यीशु के पास ले आये। उन्होंने अपने वस्त्र उस गधी के बच्चे पर डाल दिये और यीशु को उस पर बिठा दिया। ३६ जब यीशु जा रहा था

---

*१९:१३ थैलियाँ शाब्दिक, मीना। एक मीना बराबर उन दिनों का तीन महीने का वेतन।

तो लोग अपने वस्त्र सड़क पर बिछाते जा रहे
थे!
३७ और फिर जब वह जैतून की पहाड़ी से
तलहटी के पास आया तो शिष्यों की समूची भीड़
उन सभी अद्‌भुत कार्यो के लिये, जो उन्होंने देखे
थे, ऊँचे स्वर में प्रसन्नता के साथ परमेश्वर की
स्तुति करने लगी। ३८ वे पुकार उठे :
"'धन्य है वह राजा, जो प्रभु के नाम में आता है।' *

स्वर्ग में शान्ति हो, और आकाश में परम परमेश्वर
की महिमा हो!"
३९ भीड़ में खड़े हुए कुछ फरीसियों ने उससे
कहा, "गुरु, शिष्यों को मना कर।"
४० सो उसने उत्तर दिया, "मैं तुमसे कहता हूँ यदि
ये चुप हो भी जायें तो ये पत्थर चिल्ला उठेंगे।"

यीशु का यरूशलेम के लिए रोना

४१ जब उसने पास आकर नगर को देखा तो वह
उस पर रो पड़ा। ४२ और बोला, "यदि तू बस आज
यह जानता कि शान्ति तुझे किस से मिलेगी किन्तु
वह अभी तेरी आँखों से ओझल है। ४३ वे दिन तुझ
पर आयेंगे जब तेरे शत्रु चारों ओर बाधाएँ खड़ी
कर देंगे। वे तुझे घेर लेंगे और चारों ओर से तुझ
पर दबाव डालेंगे। ४४ वे तुझे धूल में मिला देंगे-
तुझे और तेरे भीतर रहने वाले तेरे बच्चों को। तेरी
चारदीवारी के भीतर वे एक पत्थर पर दूसरा पत्थर
नहीं रहने देंगे। क्योंकि जब परमेश्वर तेरे पास
आया, तूने उस घड़ी को नहीं पहचाना।"

यीशु मन्दिर में

(मत्ती २१ :१२-१७ ; मरकुस
११ :१५-१९ ; यूहन्ना २ :१३-२२)

४५ फिर यीशु ने मन्दिर में प्रवेश किया और
जो वहाँ दुकानदारी कर रहे थे उन्हें बाहर निकालने
लगा। ४६ उसने उनसे कहा, "लिखा गया है, 'मेरा
घर प्रार्थनागृह होगा।' †किन्तु तुमने इसे 'डाकुओं
का अड्डा बना डाला है।' ‡"
४७ सो अब तो वह हर दिन मन्दिर में उपदेश
देने लगा। प्रमुख याजक, यहूदी धर्मशास्त्री और
मुखिया लोग उसे मार डालने की ताक में रहने
लगे। ४८ किन्तु उन्हें ऐसा कर पाने का कोई अवसर
न मिल पाया क्योंकि लोग उसके वचनों को बहुत
महत्त्व दिया करते थे।

यीशु से यहूदियों का एक प्रश्न

(मत्ती २१ :२३-२७ ; मरकुस ११ :२७-३३)

२० १ एक दिन जब यीशु मन्दिर में लोगों को
उपदेश देते हुए सुसमाचार सुना रहा था
तो प्रमुख याजक और यहूदी धर्मशास्त्री बुजुर्ग
यहूदी नेताओं के साथ उसके पास आये। २ उन्होंने
उससे पूछा, "हमें बता तू यह काम किस अधिकार
से कर रहा है? वह कौन है जिसने तुझे यह
अधिकार दिया है?"
३ यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, "मैं भी तुमसे एक
प्रश्न पूछता हूँ, तुम मुझे बताओ ४ यूहन्ना को
बपतिस्मा देने का अधिकार स्वर्ग से मिला था या
मनुष्य से?"
५ इस पर आपस में विचार विमर्श करते हुए
उन्होंने कहा, "यदि हम कहते हैं, 'स्वर्ग से' तो
यह कहेगा, 'तो तुम ने उस पर विश्वास क्यों नहीं
किया?' ६ और यदि हम कहें, 'मनुष्य से' तो सभी
लोग हम पर पत्थर बरसायेंगे। क्योंकि वे यह
मानते हैं कि यूहन्ना एक नबी था।" ७ सो उन्होंने
उत्तर दिया कि वे नहीं जानते कि वह कहाँ से
मिला।
८ फिर यीशु ने उनसे कहा, "तो मैं भी तुम्हें नहीं
बताऊँगा कि यह कार्य मैं किस अधिकार से करता
हूँ?"

परमेश्वर अपने पुत्र को भेजता है

(मत्ती २१ :३३-४६ ; मरकुस १२ :१-१२)

९ फिर यीशु लोगों से यह दृष्टान्त कथा कहने
लगा : "किसी व्यक्ति ने अंगूरों का एक बगीचा
लगाकर उसे कुछ किसानों को किराये पर चढ़ा
दिया और वह एक लम्बे समय के लिये कहीं
चला गया। १० जब फसल उतारने का समय आया,
तो उसने एक सेवक को किसानों के पास भेजा
ताकि वे उसे अंगूरों के बगीचे के कुछ फल दे दें।
किन्तु किसानों ने उसे मार-पीट कर खाली हाथों
लौटा दिया। ११ तो उसने एक दूसरा सेवक वहाँ
भेजा। किन्तु उन्होंने उसकी भी पिटाई कर डाली।
उन्होंने उसके साथ बहुत बुरा व्यवहार किया और
उसे भी खाली हाथों लौटा दिया। १२ इस पर उसने

*१९ :३८ उद्धरण भजन संहिता ११८ :२६
†१९ :४६ उद्धरण यशायाह ५६ :७
‡१९ :४६ उद्धरण यिर्म. ७ :११

एक तीसरा सेवक भेजा किन्तु उन्होंने इसको भी
घायल करके बाहर धकेल दिया।
१३ “तब बगीचे का स्वामी कहने लगा, ‘मुझे क्या
करना चाहिये? मैं अपने प्यारे बेटे को भेजूँगा।’
१४ किन्तु किसानों ने जब उसके बेटे को देखा तो
आपस में सोच विचार करते हूए वे बोले, ‘यह तो
उत्तराधिकारी है, आओ हम इसे मार डालें ताकि
उत्तराधिकार हमारा हो जाये।’ १५ और उन्होंने उसे
बगीचे से बाहर खदेड़ कर मार डाला।
“तो फिर बगीचे का स्वामी उनके साथ क्या
करेगा? १६ वह आयेगा और उन किसानों को मार
डालेगा तथा अंगूरों का बगीचा औरों को सौंप
देगा।”
उन्होंने जब यह सुना तो वे बोले, “ऐसा कभी न
हो।” १७ तब यीशु ने उनकी ओर देखते हुए कहा,
“तो फिर यह जो लिखा है उसका अर्थ क्या है:
‘जिस पत्थर को कारीगरों ने बेकार समझ लिया
था वही कोने का प्रमुख पत्थर बन गया’? *
१८ हर कोई जो उस पत्थर पर गिरेगा टुकड़े-टुकड़े
हो जायेगा और जिस पर वह गिरेगा चकना चूर
हो जायेगा।”
१९ उसी क्षण यहूदी धर्मशास्त्रि और प्रमुख
याजक कोई रास्ता ढूँढकर उसे पकड़ लेना चाहते
थे क्योंकि वे जान गये थे कि उसने यह दृष्टान्त
कथा उनके विरोध में कही है। किन्तु वे लोगों से
डरते थे।

यहूदी नेताओं की चाल

(मत्ती २२:१५-२२; मरकुस १२:१३-१७)

२० सो वे सावधानी से उस पर नज़र रखने लगे।
उन्होंने ऐसे गुप्तचर भेजे जो ईमानदार होने का
ढोंग रचते थे। (ताकि वे उसे उसकी कही किसी
बात में फँसा कर राज्यपाल की शक्ति और
अधिकार के अधीन कर दें।) २१ सो उन्होंने उससे
पूछते हुए कहा, “गुरु, हम जानते हैं कि तू जो
उचित है वही कहता है और उसी का उपदेश देता
है और न ही तू किसी का पक्ष लेता है। बल्कि तू
तो सच्चाई से परमेश्वर के मार्ग की शिक्षा देता
है। २२ सो बता कैसर को हमारा कर चुकाना उचित
है या नहीं चुकाना?”
२३ यीशु उनकी चाल को समझ गया था। सो
उसने उनसे कहा, २४ “मुझे एक दीनार दिखाओ,
इस पर मूरत और लिखावट किसके हैं?”
उन्होंने कहा, “कैसर के।”
२५ इस पर उसने उनसे कहा, “तो फिर जो कैसर
का है, उसे कैसर को दो और जो परमेश्वर का है
उसे परमेश्वर को दो।”
२६ वे उसके उत्तर पर चकित हो कर चुप रह गये
और उसने लोगों के सामने जो कुछ कहा था, उस
पर उसे पकड़ नहीं पाये।

यीशु को पकड़ने के लिये सदूकियों की चाल

(मत्ती २२:२३-३३; मरकुस १२:१८-२७)

२७ अब देखो कुछ सदूकी उसके पास आये। (ये
सदूकी वे थे जो पुनरुत्थान को नहीं मानते।)
उन्होंने उससे पूछते हुए कहा, २८ “गुरु, मूसा ने
हमारे लिये लिखा है कि यदि किसी का भाई मर
जाये और उसके कोई बच्चा न हो और उसकी
पत्नी हो तो उसका भाई उस विधवा से ब्याह
करके अपने भाई के लिये, उससे संतान उत्पन्न
करे। २९ अब देखो, सात भाई थे। पहले भाई ने
किसी स्त्री से विवाह किया और वह बिना किसी
संतान के ही मर गया। ३० फिर दूसरे भाई ने उसे
ब्याहा, ३१ और ऐसे ही तीसरे भाई ने। सब के साथ
एक जैसा ही हुआ। वे बिना कोई संतान छोड़े मर
गये। ३२ बाद में वह स्त्री भी मर गयी। ३३ अब
बताओ, पुनरुत्थान होने पर वह किसकी पत्नी
होगी क्योंकि उससे तो सातों ने ही ब्याह किया
था?”
३४ तब यीशु ने उनसे कहा, “इस युग के लोग
ब्याह करते हैं और ब्याह करके विदा होते हैं।
३५ किन्तु वे लोग जो उस युग के किसी भाग के
योग्य और मरे हुओं में से जी उठने के लिए ठहराये
गये हैं, वे न तो ब्याह करेंगे और न ही ब्याह
करके विदा किये जायेंगे। ३६ और वे फिर कभी
मरेंगे भी नहीं, क्योंकि वे स्वर्गदूतों के समान हैं,
वे परमेश्वर की संतान हैं क्योंकि वे पुनरुत्थान के
पुत्र हैं। ३७ किन्तु मूसा तक ने झाड़ी से सम्बन्धित
अनुच्छेद में दिखाया है कि मरे हुए जिलाए गये
हैं, जबकि उसने कहा था प्रभु, ‘इब्राहीम का
परमेश्वर है, इसहाक का परमेश्वर है और याकूब
का परमेश्वर है।’ † ३८ वह मरे हुओं का नहीं, बल्कि
जीवितों का परमेश्वर है। वे सभी लोग जो उसके
हैं जीवित हैं।”

---

*२० :१७ उद्धरण भजन संहिता ११८ :२२
†२० :३७ इब्राहीम … हैं देखें निर्गमन ३ :६

३९ कुछ यहूदी धर्मशास्त्रियों ने कहा, "गुरु,
अच्छा कहा।" ४० क्योंकि फिर उससे कोई और
प्रश्न पूछने का साहस नहीं कर सका।

क्या मसीह दाऊद का पुत्र या दाऊद का प्रभु है?

(मत्ती २२ :४१-४६ ; मरकुस १२ :३५-३७)

४१ यीशु ने उनसे कहा, "वे कहते हैं कि मसीह
दाऊद का पुत्र है। यह कैसे हो सकता है?
४२ क्योंकि भजन संहिता की पुस्तक में दाऊद
स्वयं कहता है,

'प्रभु परमेश्वर ने मेरे प्रभु से कहा :
मेरे दाहिने हाथ बैठ,
४३ जब तक कि मैं तेरे विरोधियों को तेरे पैर रखने
की चौकी न बना दूँ।' *

४४ इस प्रकार जब दाऊद मसीह को 'प्रभु' कहता
है तो मसीह दाऊद का पुत्र कैसे हो सकता है?"

यहूदी धर्मशास्त्रियों के विरोध में यीशु की चेतावनी

(मत्ती २३ :१-३६ ; मरकुस १२ :३८-४० ; लूका ११ :३७-५४)

४५ सभी लोगों के सुनते उसने अपने
अनुयायिओं से कहा, ४६ "यहूदी धर्मशास्त्रियों
से सावधान रहो। वे लम्बे चोगे पहन कर
यहाँ-वहाँ घूमना चाहते हैं, हाट-बाजारों में वे
आदर के साथ स्वागत-सत्कार पाना चाहते हैं।
और यहूदी आराधनालयों में उन्हें सबसे अधिक
महत्त्वपूर्ण आसन की लालसा रहती है। दावतों
में वे आदर-पूर्ण स्थान चाहते हैं। ४७ वे विधवाओं
के घर-बार लूट लेते हैं। दिखावे के लिये वे
लम्बी-लम्बी प्रार्थनाएँ करते हैं। इन लोगों को
कठिन से कठिन दण्ड भुगतना होगा।"

सच्चा दान

(मरकुस १२ :४१-४४)

२१ १ यीशु ने आँखें उठा कर देखा कि धनी लोग
दान पात्र में अपनी अपनी भेंट डाल रहे
हैं। २ तभी उसने एक गरीब विधवा को उसमें ताँबे
के दो छोटे सिक्के डालते हुए देखा। ३ उसने कहा,
"मैं तुमसे सत्य कहता हूँ कि दूसरे सभी लोगों से
इस गरीब विधवा ने अधिक दान दिया है। ४ यह
मैं इसलिये कहता हूँ क्योंकि इन सब ही लोगों
ने अपने उस धन में से जिसकी उन्हें आवश्यकता
नहीं थी, दान दिया था किन्तु उसने गरीब होते हुए
भी जीवित रहने के लिए जो कुछ उसके पास था,
सब कुछ दे डाला।"

मन्दिर का विनाश

(मत्ती २४ :१-१४ ; मरकुस १३ :१-१३)

५ कुछ लोग मन्दिर के विषय में चर्चा कर रहे थे
कि वह सुन्दर पत्थरों और परमेश्वर को अर्पित की
गयी मनौती की भेंटों से कैसे सजाया गया है।
६ तभी यीशु ने कहा, "ऐसा समय आयेगा जब,
ये जो कुछ तुम देख रहे हो, उसमें एक पत्थर दूसरे
पत्थर पर टिका नहीं रह पायेगा। वे सभी ढहा दिये
जायेंगे।"
७ वे उससे पूछते हुए बोले, "गुरु, ये बातें कब
होंगी? और ये बातें जो होने वाली हैं, उसके क्या
संकेत होंगे?"
८ यीशु ने कहा, "सावधान रहो, कहीं कोई तुम्हें
छल न ले। क्योंकि मेरे नाम से बहुत से लोग
आयेंगे और कहेंगे, 'वह मैं हूँ' और 'समय आ पहुँचा
है।' उनके पीछे मत जाना। ९ परन्तु जब तुम युद्धों
और दंगों की चर्चा सुनो तो डरना मत क्योंकि ये
बातें तो पहले घटेंगी ही। और उनका अन्त तुरंत
नहीं होगा।"
१० उसने उनसे फिर कहा, "एक जाति दूसरी
जाति के विरोध में खड़ी होगी और एक राज्य दूसरे
राज्य के विरोध में। ११ बड़े-बड़े भूचाल आयेंगे और
अनेक स्थानों पर अकाल पड़ेंगे और महामारियाँ
होंगी। आकाश में भयानक घटनाएँ घटेंगी और
महान संकेत प्रकट होंगे।
१२ "किन्तु इन बातों के घटने से पहले वे
तुम्हें बंदी बना लेंगे और तुम्हें यातनाएँ देंगे। वे
तुम पर अभियोग चलाने के लिये तुम्हें यहूदी
आराधनालयों को सौंप देंगे और फिर तुम्हें
बन्दीगृहों में भेज दिया जायेगा। और फिर मेरे
नाम के कारण वे तुम्हें राजाओं और राज्यपालों
के सामने ले जायेंगे। १३ इससे तुम्हें मेरे विषय में
साक्षी देने का अवसर मिलेगा। १४ इसलिये पहले
से ही इसकी चिंता न करने का निश्चय कर लो कि
अपना बचाव तुम कैसे करोगे। १५ क्योंकि मैं तुम्हें
ऐसी बुद्धि और ऐसे शब्द दूँगा कि तुम्हारा कोई
भी विरोधी तुम्हारा सामना और तुम्हारा खण्डन
नहीं कर सकेगा। १६ किन्तु तुम्हारे माता-पिता,
भाई बन्धु, सम्बन्धी और मित्र ही तुम्हें धोखे
से पकड़वायेंगे और तुममें से कुछ को तो मरवा

*२० :४३ उद्धरण भजन संहिता ११० :१

ही डालेंगे। १७ मेरे कारण सब तुमसे बैर करेंगे।
१८ किन्तु तुम्हारे सिर का एक बाल तक बाँका नहीं
होगा। १९ तुम्हारी सहनशीलता, तुम्हारे प्राणों की
रक्षा करेगी।

यरूशलेम का नाश

(मत्ती २४ :१५-२१ ; मरकुस १३ :१४-१९)

२० "अब देखो जब यरूशलेम को तुम सेनाओं
से घिरा देखो तब समझ लेना कि उसका तहस
नहस हो जाना निकट है। २१ तब तो जो यहूदिया
में हों, उन्हें चाहिये कि वे पहाड़ों पर भाग जायें
और वे जो नगर के भीतर हों, बाहर निकल आयें
और वे जो गाँवों में हों उन्हें नगर में नहीं जाना
चाहिये। २२ क्योंकि वे दिन दण्ड देने के होंगे।
ताकि जो लिखी गयी हैं, वे सभी बातें पूरी हों।
२३ उन स्त्रियों के लिये, जो गर्भवती होंगी और
उनके लिये जो दूध पिलाती होंगी, वे दिन कितने
भयानक होंगे। क्योंकि उन दिनों इस धरती पर
बहुत बड़ी विपत्ति आयेगी और इन लोगों पर
परमेश्वर का क्रोध होगा। २४ वे तलवार की धार
से गिरा दिये जायेंगे। और बंदी बना कर सब देशों
में पहुँचा दिये जायेंगे और यरूशलेम ग़ैर यहूदियों
के पैरों तले तब तक रौंदा जायेगा जब तक कि ग़ैर
यहूदियों का समय पूरा नहीं हो जाता।

डरो मत

(मत्ती २४ :२९-३१ ; मरकुस १३ :२४-२७)

२५ "सूरज, चाँद और तारों में संकेत प्रकट होंगे
और धरती पर की सभी जातियों पर विपत्तियाँ
आयेंगी और वे सागर की उथल-पुथल से घबरा
उठेंगे। २६ लोग डर और संसार पर आने वाली
विपदाओं के डर से मूर्छित हो जायेंगे क्योंकि
स्वर्गिक शक्तियाँ हिलाई जायेंगी। २७ और तभी
वे मनुष्य के पुत्र को अपनी शक्ति और महान्
महिमा के साथ एक बादल में आते हुए देखेंगे।
२८ अब देखो, ये बातें जब घटने लगें तो तुम खड़े
होकर अपने सिर ऊपर उठा लेना। क्योंकि तुम्हारा
छुटकारा निकट आ रहा होगा।"

मेरा वचन अमर है

(मत्ती २४ :३२-३५ ; मरकुस १३ :२८-३१)

२९ फिर उसने उनसे एक दृष्टान्त-कथा कही :
"और सभी पेड़ों तथा अंजीर के पेड़ को देखो।
३० उन में जैसे ही कोंपले फूटती हैं, तुम अपने आप
जान जाते हो कि गर्मी की ऋतु बस आ ही पहुँची
है। ३१ वैसे ही तुम जब इन बातों को घटते देखो तो
जान लेना कि परमेश्वर का राज्य निकट है।

३२ "मैं तुमसे सत्य कहता हूँ कि जब तक ये सब
बातें घट नहीं लेतीं, इस पीढ़ी का अंत नहीं होगा।
३३ धरती और आकाश नष्ट हो जाएँगे, पर मेरा
वचन सदा अटल रहेगा।

सदा तैयार रहो

३४ "अपना ध्यान रखो, ताकि तुम्हारे मन कहीं
डट कर पीने पिलाने और सांसारिक चिंताओं से
जड़ न हो जायें। और वह दिन एक फंदे की तरह
तुम पर अचानक न आ पड़े। ३५ निश्चय ही वह
इस समूची धरती पर रहने वालों पर ऐसे ही आ
गिरेगा। ३६ हर क्षण सतर्क रहो, और प्रार्थना करो
कि तुम्हें उन सभी बातों से, जो घटने वाली हैं,
बचने की शक्ति प्राप्त हो। और आत्म-विश्वास
के साथ मनुष्य के पुत्र के सामने खड़े हो सको।"

३७ प्रतिदिन वह मन्दिर में उपदेश दिया करता
था किन्तु, रात बिताने के लिए वह हर साँझ जैतून
नामक पहाड़ी पर चला जाता था। ३८ सभी लोग
भोर को तड़के उठते ताकि मन्दिर में उसके पास
जाकर, उसे सुनें।

यीशु की हत्या का षड़यन्त्र

(मत्ती २६ :१-५, १४-१६ ; मरकुस १४ :१-२,
१०-११ ; यूहन्ना ११ :४५-५३)

२२ १ अब फ़सह नाम का बिना ख़मीर की
रोटी का पर्व आने को था। २ उधर प्रमुख
याजक तथा यहूदी धर्मशास्त्री, क्योंकि लोगों से
डरते थे इसलिये किसी ऐसे रास्ते की ताक में थे
जिससे वे यीशु को मार डालें।

यहूदा का षड़यन्त्र

(मत्ती २६ :१४-१६ ; मरकुस १४ :१०-११)

३ फिर इस्करियोती कहलाने वाले उस यहूदा में,
जो उन बारहों में से एक था, शैतान आ समाया।
४ वह प्रमुख याजकों और अधिकारियों के पास
गया और उनसे यीशु को वह कैसे पकड़वा सकता
है, इस बारे में बातचीत की। ५ वे बहुत प्रसन्न हुए
और इसके लिये उसे धन देने को सहमत हो गये।
६ वह भी राज़ी हो गया और वह ऐसे अवसर की
ताक में रहने लगा जब भीड़-भाड़ न हो और वह
उसे उनके हाथों सौंप दे।

फ़सह की तैयारी

(मत्ती २६ :१७-२५ ; मरकुस
१४ :१२-२१ ; यूहन्ना १३ :२१-३०)

७ फिर बिना ख़मीर की रोटी का वह दिन आया
जब फ़सह के मेमने की बली देनी होती है। ८ सो
उसने यह कहते हुए पतरस और यूहन्ना को भेजा,
"जाओ और हमारे लिये फ़सह का भोज तैयार करो
ताकि हम उसे खा सकें।"
९ उन्होंने उससे पूछा, "तू हमसे उसकी तैयारी
कहाँ चाहता है ?"
उसने उनसे कहा, १० "तुम जैसे ही नगर में
प्रवेश करोगे तुम्हें पानी का घड़ा ले जाते हुए एक
व्यक्ति मिलेगा, उसके पीछे हो लेना और जिस
घर में वह जाये तुम भी चले जाना। ११ और घर
के स्वामी से कहना, 'गुरु ने तुझसे पूछा है कि
वह अतिथि-कक्ष कहाँ है जहाँ मैं अपने शिष्यों के
साथ फ़सह पर्व का भोजन कर सकूँ।' १२ फिर वह
व्यक्ति तुम्हें सीढ़ियों के ऊपर सजा-सजाया एक
बड़ा कमरा दिखायेगा, वहीं तैयारी करना।"
१३ वे चल पड़े और वैसा ही पाया जैसा उसने
उन्हें बताया था। फिर उन्होंने फ़सह भोज तैयार
किया।

प्रभु का अन्तिम भोज

(मत्ती २६ :२६-३० ; मरकुस
१४ :२२-२६ ; १ कुरिन्थ. ११ :२३-२५)

१४ फिर वह घड़ी आयी जब यीशु अपने शिष्यों
के साथ भोजन पर बैठा। १५ उसने उनसे कहा,
"यातना उठाने से पहले यह फ़सह का भोजन
तुम्हारे साथ करने की मेरी प्रबल इच्छा थी।
१६ क्योंकि मैं तुमसे कहता हूँ कि जब तक परमेश्वर
के राज्य में यह पूरा नहीं हो लेता तब तक मैं इसे
दुबारा नहीं खाऊँगा।"
१७ फिर उसने कटोरा उठाकर धन्यवाद दिया
और कहा, "लो इसे आपस में बाँट लो। १८ क्योंकि
मैं तुमसे कहता हूँ आज के बाद जब तक परमेश्वर
का राज्य नहीं आ जाता मैं कोई भी दाखरस कभी
नहीं पिऊँगा।"
१९ फिर उसने थोड़ी रोटी ली और धन्यवाद
दिया। उसने उसे तोड़ा और उन्हें देते हुए कहा,
"यह मेरी देह है जो तुम्हारे लिये दी गयी है। मेरी
याद में ऐसा ही करना।" २० ऐसे ही जब वे भोजन
कर चुके तो उसने कटोरा उठाया और कहा, "यह
प्याला मेरे उस रक्त के रूप में एक नयी वाचा का
प्रतीक है जिसे तुम्हारे लिए उँडेला गया है।" *

यीशु का विरोधी कौन होगा ?

२१ "किन्तु देखो, मुझे जो धोखे से पकड़वायेगा,
उसका हाथ यहीं मेज़ पर मेरे साथ है। २२ क्योंकि
मनुष्य का पुत्र तो मारा ही जायेगा जैसा कि
सुनिश्चित है किन्तु धिक्कार है उस व्यक्ति को
जिसके द्वारा वह पकड़वाया जाएगा।"
२३ इस पर वे आपस में एक दूसरे से प्रश्न करने
लगे, "उनमें से वह कौन हो सकता है जो ऐसा
करने जा रहा है ?"

सेवक बनों

२४ फिर उनमें यह बात भी उठी कि उनमें से
सबसे बड़ा किसे समझा जाये। २५ किन्तु यीशु ने
उनसे कहा, "गैर यहूदियों के राजा उन पर प्रभुत्व
रखते हैं और वे जो उन पर अधिकार का प्रयोग
करते हैं, 'स्वयं को लोगों का उपकारक' कहलवाना
चाहते हैं। २६ किन्तु तुम वैसे नहीं हो बल्कि तुममें
तो सबसे बड़ा सबसे छोटे जैसा होना चाहिये और
जो प्रमुख है उसे सेवक के समान होना चाहिए।
२७ क्योंकि बड़ा कौन है : वह जो खाने की मेज़ पर
बैठा है या वह जो उसे परोसता है ? क्या वही नहीं
जो मेज पर है किन्तु तुम्हारे बीच मैं वैसा हूँ जो
परोसता है।
२८ "किन्तु तुम वे हो जिन्होंने मेरी परिक्षाओं में
मेरा साथ दिया है। २९ और मैं तुम्हे वैसे ही एक
राज्य दे रहा हूँ जैसे मेरे परम पिता ने इसे मुझे
दिया था। ३० ताकि मेरे राज्य में तुम मेरी मेज़
पर खाओ और पिओ और इस्राएल की बारहों
जनजातियों का न्याय करते हुए सिंहासनों पर
बैठो।

विश्वास बनाये रखो

(मत्ती २६ :३१-३५ ; मरकुस
१४ :२७-३१ ; यूहन्ना १३ :३६-३८)

३१ "शमौन, हे शमौन, सुन, तुम सब को गेहूँ
की तरह फटकने के लिए शैतान ने चुन लिया
है। ३२ किन्तु मैंने तुम्हारे लिये प्रार्थना की है कि
तुम्हारा विश्वास न डगमगाये और जब तू वापस
आये तो तेरे बंधुओं की शक्ति बढ़े।"
३३ किन्तु शमौन ने उससे कहा, "हे प्रभु, मैं तेरे
साथ जेल जाने और मरने तक को तैयार हूँ।"

*२२ :२० कुछ यूनानी प्रतियों में पद १९ के अंतिम शब्द और पद २० नहीं पाए जाते हैं।

³⁴ फिर यीशु ने कहा, "पतरस, मैं तुझे बताता हूँ कि आज जब तक मुर्गा बाँग नहीं देगा तब तक तू तीन बार मना नहीं कर लेगा कि तू मुझे जानता है।"

यातना झेलने को तैयार रहो

[३५] फिर यीशु ने अपने शिष्यो से कहा, "मैंने तुम्हें जब बिना बटुए, बिना थैले या बिना चप्पलों के भेजा था तो क्या तुम्हें किसी वस्तु की कमी रही थी?"

उन्होंने कहा, "किसी वस्तु की नहीं।"

[३६] उसने उनसे कहा, "किन्तु अब जिस किसी के पास भी कोई बटुआ है, वह उसे ले ले और वह थैला भी ले चले। और जिसके पास भी तलवार न हो, वह अपना चोगा तक बेच कर उसे मोल ले ले। [३७] क्योंकि मैं तुम्हें बताता हूँ कि शास्त्र का यह लिखा मुझ पर निश्चय ही पूरा होगा :
'वह एक अपराधी समझा गया था।' *
हाँ मेरे सम्बन्ध में लिखी गयी यह बात पूरी होने पर आ रही है।"

[३८] वे बोले, "हे प्रभु, देख, यहाँ दो तलवारें हैं।" इस पर उसने उनसे कहा, "बस बहुत है।"

प्रेरितों को प्रार्थना का आदेश

(मत्ती २६ :३६-४६ ; मरकुस १४ :३२-४२)

[३९-४०] फिर वह वहाँ से उठ कर नित्य प्रति की तरह जैतून — पर्वत चला गया। और उसके शिष्य भी उसके पीछे पीछे हो लिये। वह जब उस स्थान पर पहुँचा तो उसने उनसे कहा, "प्रार्थना करो कि तुम्हें परीक्षा में न पड़ना पड़े।"

[४१] फिर वह किसी पत्थर को जितनी दूर तक फेंका जा सकता है, लगभग उनसे उतनी दूर अलग चला गया। फिर वह घुटनों के बल झुका और प्रार्थना करने लगा, [४२] "हे परम पिता, यदि तेरी इच्छा हो तो इस प्याले को मुझसे दूर हटा किन्तु फिर भी मेरी नहीं, बल्कि तेरी इच्छा पूरी हो।" [४३] तभी एक स्वर्गदूत वहाँ प्रकट हुआ और उसे शक्ति प्रदान करने लगा। [४४] उधर यीशु बड़ी बेचैनी के साथ और अधिक तीव्रता से प्रार्थना करने लगा। उसका पसीना रक्त की बूँदों के समान धरती पर गिर रहा था। † [४५] और जब वह प्रार्थना से उठकर अपने शिष्यों के पास आया तो उसने उन्हें शोक में थक कर सोते हुए पाया। [४६] सो उसने उनसे कहा, "तुम सो क्यों रहे हो? उठो और प्रार्थना करो कि तुम किसी परीक्षा में न पड़ो।"

यीशु को बंदी बनाना

(मत्ती २६ :४७-५६ ; मरकुस १४ :४३-५० ; यूहन्ना १८ :३-११)

[४७] वह अभी बोल ही रहा था कि एक भीड़ आ जुटी। यहूदा नाम का एक व्यक्ति जो बारह शिष्यों में से एक था, उनकी अगुवाई कर रहा था। वह यीशु को चूमने के लिये उसके पास आया।

[४८] पर यीशु ने उससे कहा, "हे यहूदा, क्या तू एक चुम्बन के द्वारा मनुष्य के पुत्र को धोखे से पकड़वाने जा रहा है।" [४९] जो घटने जा रहा था, उसे देखकर उसके आसपास के लोगों ने कहा, "हे प्रभु, क्या हम तलवार से वार करें?" [५०] और उनमें से एक ने तो प्रमुख याजक के दास पर वार करके उसका दाहिना कान ही काट डाला।

[५१] किन्तु यीशु ने तुरंत कहा, "उन्हें यह भी करने दो।" फिर यीशु ने उसके कान को छू कर चंगा कर दिया।

[५२] फिर यीशु ने उस पर चढ़ाई करने आये प्रमुख याजकों, मन्दिर के अधिकारियों और बुजुर्ग यहूदी नेताओं से कहा, "क्या तुम तलवारें और लाठियाँ ले कर किसी डाकू का सामना करने निकले हो? [५३] मन्दिर में मैं हर दिन तुम्हारे ही साथ था, किन्तु तुमने मुझ पर हाथ नहीं डाला। पर यह समय तुम्हारा है। अन्धकार के शासन का काल।"

पतरस का इन्कार

(मत्ती २६ :५७-५८, ६९-७५ ;
मरकुस १४ :५३-५४, ६६-७२ ;
यूहन्ना १८ :१२-१८, २५-२७)

[५४] उन्होंने उसे बंदी बना लिया और वहाँ से ले गये। फिर वे उसे प्रमुख याजक के घर ले गये। पतरस कुछ दूरी पर उसके पीछे पीछे आ रहा था। [५५] आँगन के बीच उन्होंने आग सुलगाई और एक साथ नीचे बैठ गये। पतरस भी वहीं उन्हीं में बैठा था। [५६] आग के प्रकाश में एक दासी ने उसे वहाँ बैठे देखा। उसने उस पर दृष्टि गढ़ाते हुए कहा, "यह आदमी भी उसके साथ था।"

[५७] किन्तु पतरस ने इन्कार करते हुए कहा, "हे स्त्री, मैं उसे नहीं जानता।" [५८] थोड़ी देर बाद एक

---

*२२ :३७ उद्धरण यशायाह ५३ :१२
†२२ :४४ कुछ यूनानी प्रतियों में पद ४३ और ४४ नहीं है।

दूसरे व्यक्ति ने उसे देखा और कहा, “तू भी उन्हीं
में से एक है।”
किन्तु पतरस बोला, “भले आदमी, मैं वह नहीं
हूँ।”
५९ कोई लगभग एक घड़ी बीती होगी कि कोई
और भी बलपूर्वक कहने लगा, “निश्चय ही यह
व्यक्ति उसके साथ भी था। क्योंकि देखो यह
गलील वासी भी है।”
६० किन्तु पतरस बोला, “भले आदमी, मैं नहीं
जानता तू किसके बारे में बात कर रहा है।”
उसी घड़ी, वह अभी बातें कर ही रहा था कि एक
मुर्गे ने बाँग दी। ६१ और प्रभु ने मुड़ कर पतरस पर
दृष्टि डाली। तभी पतरस को प्रभु का वह वचन
याद आया जो उसने उससे कहा था, “आज मुर्गे के
बाँग देने से पहले तू मुझे तीन बार नकार चुकेगा।”
६२ तब वह बाहर चला आया और फूट-फूट कर रो
पड़ा।

यीशु का उपहास

(मत्ती २६ :६७-६८ ; मरकुस १४ :६५)

६३ जिन व्यक्तियों ने यीशु को पकड़ रखा था
वे उसका उपहास करने और उसे पीटने लगे।
६४ उसकी आँखों पर पट्टी बाँध दी और उससे यह
कहते हुए पूछने लगे कि, “बता वह कौन है जिसने
तुझे मारा ?” ६५ उन्होंने उसका अपमान करने के
लिये उससे और भी बहुत सी बातें कहीं।

यीशु यहूदी नेताओं के सामने

(मत्ती २६ :५९-६६ ; मरकुस
१४ :५५-६४ ; यूहन्ना १८ :१९-२४)

६६ जब दिन हुआ तो प्रमुख याजकों और
धर्मशास्त्रियों समेत लोगों के बुजुर्ग नेताओं की
एक सभा हुई। फिर वे लोग उसे अपनी महासभा में
ले गये। ६७ उन्होंने पूछा, “हमें बता क्या तू मसीह
है ?”
यीशु ने उनसे कहा, “यदि मैं तुमसे कहूँ तो तुम
मेरा विश्वास नहीं करोगे। ६८ और यदि मैं पूछूँ
तो तुम उत्तर नहीं दोगे। ६९ किन्तु अब से मनुष्य
का पुत्र सर्वशक्तिमान परमेश्वर की दाहिनी ओर
बैठाया जायेगा।”
७० वे सब बोले, “तो क्या तू परमेश्वर का पुत्र
है ?” उसने कहा, “हाँ, मैं हूँ।”
७१ फिर उन्होंने कहा, “अब हमें किसी और
प्रमाण की आवश्यकता क्यों है ? हमने स्वयं इसके
अपने मुँह से यह सुन तो लिया है।”

पिलातुस द्वारा यीशु से पूछताछ

(मत्ती २७ :१-२, ११-१४ ; मरकुस
१५ :१-५ ; यूहन्ना १८ :२८-३८)

२३ १ फिर उनकी सारी पंचायत उठ खड़ी हुई
और वे उसे पिलातुस के सामने ले गये।
२ वे उस पर अभियोग लगाने लगे। उन्होंने कहा,
“हमने हमारे लोगों को बहकाते हुए इस व्यक्ति
को पकड़ा है। यह कैसर को कर चुकाने का विरोध
करता है और कहता है यह स्वयं मसीह है, एक
राजा।”
३ इस पर पिलातुस ने यीशु से पूछा, “क्या तू
यहूदियों का राजा है ?”
यीशु ने उसे उत्तर दिया, “तू ही तो कह रहा है,
मैं वही हूँ।”
४ इस पर पिलातुस ने प्रमुख याजकों और भीड़
से कहा, “मुझे इस व्यक्ति पर किसी आरोप का
कोई आधार दिखाई नहीं देता।”
५ पर वे यहा कहते हुए दबाव डालते रहे, “इसने
समूचे यहूदिया में लोगों को अपने उपदेशों से
भड़काया है। यह इसने गलील में आरम्भ किया
था और अब समूचा मार्ग पार करके यहाँ तक आ
पहुँचा है।”

यीशु का हेरोदेस के पास भेजा जाना

६ पिलातुस ने यह सुनकर पूछा, “क्या यह
व्यक्ति गलील का है ?” ७ फिर जब उसको यह पता
चला कि वह हेरोदेस के अधिकार क्षेत्र के अधीन
है तो उसने उसे हेरोदेस के पास भेज दिया जो उन
दिनों यरूशलेम में ही था।
८ सो हेरोदेस ने जब यीशु को देखा तो वह बहुत
प्रसन्न हुआ क्योंकि बरसों से वह उसे देखना चाह
रहा था। क्योंकि वह उसके विषय में सुन चुका था
और उसे कोई अद्भुत कर्म करते हुए देखने की
आशा रखता था। ९ उसने यीशु से अनेक प्रश्न
पूछे किन्तु यीशु ने उसे कोई उत्तर नहीं दिया।
१० प्रमुख याजक और यहूदी धर्म शास्त्री वहीं
खड़े थे और वे उस पर तीखे ढँग के साथ दोष लगा
रहे थे। ११ हेरोदेस ने भी अपने सैनिकों समेत उसके
साथ अपमानपूर्ण व्यवहार किया और उसकी हँसी
उड़ाई। फिर उन्होंने उसे एक उत्तम चोगा पहना
कर पिलातुस के पास वापस भेज दिया। १२ उस दिन
हेरोदेस और पिलातुस एक दूसरे के मित्र बन गये।
इससे पहले तो वे एक दूसरे के शत्रु थे।

यीशु को मरना होगा

(मत्ती २७:१५-२६; मरकुस
१५:६-१५; यूहन्ना १८:३९-१९:१६)

१३ फिर पिलातुस ने प्रमुख याजकों, यहूदी
नेताओं और लोगों को एक साथ बुलाया। १४ उसने
उनसे कहा, “तुम इसे लोगों को भटकाने वाले एक
व्यक्ति के रूप में मेरे पास लाये हो। और मैंने यहाँ
अब तुम्हारे सामने ही इसकी जाँच पड़ताल की है
और तुमने इस पर जो दोष लगाये हैं उनका न तो
मुझे कोई आधार मिला है और १५ न ही हेरोदेस को
क्योंकि उसने इसे वापस हमारे पास भेज दिया है।
जैसा कि तुम देख सकते हो इसने ऐसा कुछ नहीं
किया है कि यह मौत का भागी बने। १६ इसलिये मैं
इसे कोड़े मरवा कर छोड़ दूँगा।” १७ *

१८ किन्तु वे सब एक साथ चिल्लाये, “इस
आदमी को ले जाओ। हमारे लिये बरअब्बा को
छोड़ दो।” १९ (बरअब्बा को शहर में मार धाड़ और
हत्या करने के जुर्म में जेल में डाला हुआ था।)

२० पिलातुस यीशु को छोड़ देना चाहता था, सो
उसने उन्हें फिर समझाया। २१ पर वे नारा लगाते
रहे, “इसे क्रूस पर चढ़ा दो, इसे क्रूस पर चढ़ा
दो।”

२२ पिलातुस ने उनसे तीसरी बार पूछा, “किन्तु
इस व्यक्ति ने क्या अपराध किया है? मुझे इसके
विरोध में कुछ नहीं मिला है जो इसे मृत्यु दण्ड
का भागी बनाये। इसलिये मैं कोड़े लगवाकर इसे
छोड़ दूँगा।”

२३ पर वे ऊँचे स्वर में नारे लगा लगा कर माँग
कर रहे थे कि उसे क्रूस पर चढ़ा दिया जाये।
और उनके नारों का कोलाहल इतना बढ़ गया कि
२४ पिलातुस ने निर्णय दे दिया कि उनकी माँग मान
ली जाये। २५ पिलातुस ने उस व्यक्ति को छोड़
दिया जिसे मार धाड़ और हत्या करने के जुर्म में
जेल में डाला गया था (यह वही था जिसके छोड़
देने की वे माँग कर रहे थे) और यीशु को उनके
हाथों में सौंप दिया कि वे जैसा चाहें, करे।

यीशु का क्रूस पर चढ़ाया जाना

(मत्ती २७:३२-४४; मरकुस
१५:२१-३२; यूहन्ना १९:१७-२७)

२६ जब वे यीशु को ले जा रहे थे तो उन्होंने कुरैन
के रहने वाले शमौन नाम के एक व्यक्ति को, जो
अपने खेतों से आ रहा था, पकड़ लिया और उस
पर क्रूस लाद कर उसे यीशु के पीछे पीछे चलने
को विवश किया।

२७ लोगों की एक बड़ी भीड़ उसके पीछे चल
रही थी। इसमें कुछ ऐसी स्त्रियाँ भी थीं जो
उसके लिये रो रही थीं और विलाप कर रही थीं।
२८ यीशु उनकी तरफ़ मुड़ा और बोला, “यरूशलेम
की पुत्रियों, मेरे लिये मत बिलखो बल्कि स्वयं
अपने लिये और अपनी संतान के लिये विलाप
करो। २९ क्योंकि ऐसे दिन आ रहे हैं जब लोग
कहेंगे, ‘वे स्त्रियाँ धन्य हैं, जो बाँझ हैं और धन्य
हैं, वे कोख जिन्होंने किसी को कभी जन्म ही
नहीं दिया। वे स्तन धन्य हैं जिन्होंने कभी दूध
नहीं पिलाया।’ ३० फिर वे पर्वतों से कहेंगे, ‘हम पर
गिर पड़ो’ और पहाड़ियों से कहेंगे ‘हमें ढक लो।’
३१ क्योंकि लोग जब पेड़ हरा है, उसके साथ तब
ऐसा करते है तो जब पेड़ सूख जायेगा तब क्या
होगा?”

३२ दो और व्यक्ति, जो दोनों ही अपराधी थे,
उसके साथ मृत्यु दण्ड के लिये बाहर ले जाये
जा रहे थे। ३३ फिर जब वे उस स्थान पर आये
जो “खोपड़ी” कहलता है तो उन्होंने उन दोनों
अपराधियों के साथ उसे क्रूस पर चढ़ा दिया,
एक अपराधी को उसके दाहिनी ओर दूसरे को बाँई
ओर।

३४ इस पर यीशु बोला, “हे परम पिता, इन्हें
क्षमा करना क्योंकि ये नहीं जानते कि ये क्या कर
रहे हैं।”

फिर उन्होंने पासा फेंक कर उसके कपड़ों का
बटवारा कर लिया। † ३५ वहाँ खड़े लोग देख रहे थे।
यहूदी नेता उसका उपहास करते हुए बोले, “इसने
दूसरों का उद्धार किया है। यदि यह परमेश्वर का
चुना हुआ मसीह है तो इसे अपने आप अपनी रक्षा
करने दो।”

३६ सैनिकों ने भी आकर उसका उपहास किया।
उन्होंने उसे सिरका पीने को दिया ३७ और कहा,

---

*२३:१७ कुछ यूनानी प्रतियों में पद १७ जोड़ा गया है: “पिलातुस को फ़सह पर्व पर हर साल जनता के लिये कोई एक बंदी को छोड़ना पड़ता था।”

†२३:३४ यीशु बोला, “हे परमपिता … रहे है” पहले के कुछ यूनानी प्रतियों में यह भाग नहीं है।

“यदि तू यहूदियों का राजा है तो अपने आपको
बचा ले।” ३८ (उसके ऊपर यह सूचना अंकित कर
दी गई थी, “यह यहूदियों का राजा है।”)
३९ वहाँ लटकाये गये अपराधियों में से एक ने
उसका अपमान करते हुए कहा, “क्या तू मसीह
नहीं है? हमें और अपने आप को बचा ले।”
४० किन्तु दूसरे ने उस पहले अपराधी को
फटकारते हुए कहा, “क्या तू परमेश्वर से नहीं
डरता? तुझे भी वही दण्ड मिल रहा है। ४१ किन्तु
हमारा दण्ड तो न्याय पूर्ण है क्योंकि हमने जो कुछ
किया, उसके लिये जो हमें मिलना चाहिये था, वही
मिल रहा है पर इस व्यक्ति ने तो कुछ भी बुरा नहीं
किया है।” ४२ फिर वह बोला, “यीशु जब तू अपने
राज्य में आये तो मुझे याद रखना।”
४३ यीशु ने उससे कहा, “मैं तुझ से सत्य कहता
हूँ, आज ही तू मेरे साथ स्वर्गलोक में होगा।”

यीशु का देहान्त

(मत्ती २७:४५-५६; मरकुस
१५:३३-४१; यूहन्ना १९:२८-३०)

४४ उस समय दिन के बारह बजे होंगे तभी
तीन बजे तक समूची धरती पर गहरा अंधकार
छा गया। ४५ सूरज भी नहीं चमक रहा था। उधर
मन्दिर में परदा फट कर दो टुकड़े हो गया।
४६ यीशु ने ऊँचे स्वर में पुकारा, “हे परम पिता, मैं
अपनी आत्मा तेरे हाथों सौंपता हूँ।” यह कहकर
उसने प्राण छोड़ दिये।
४७ जब रोमी सेनानायक ने, जो कुछ घटा था,
उसे देखा तो परमेश्वर की प्रशंसा करते हुए उसने
कहा, “यह निश्चय ही एक अच्छा मनुष्य था!”
४८ जब वहाँ देखने आये एकत्र लोगों ने, जो
कुछ हुआ था, उसे देखा तो वे अपनी छाती पीटते
लौट गये। ४९ किन्तु वे सभी जो उसे जानते थे, उन
स्त्रियों समेत, जो गलील से उसके पीछे पीछे आ
रहीं थीं, इन बातों को देखने कुछ दूरी पर खड़े थे।

अरमतियाह का यूसुफ

(मत्ती २७:५७-६१; मरकुस
१५:४२-४७; यूहन्ना १९:३८-४२)

५०-५१ अब वहीं यूसुफ नाम का एक पुरुष था
जो यहूदी महासभा का एक सदस्य था। वह एक
अच्छा धर्मी पुरुष था। वह उनके निर्णय और
उसे काम में लाने के लिये सहमत नहीं था। वह
यहूदियों के एक नगर अरमतियाह का निवासी था।
वह परमेश्वर के राज्य की बाट जोहा करता था।
५२ वह व्यक्ति पिलातुस के पास गया और यीशु
के शव की याचना की। ५३ उसने शव को क्रूस
पर से नीचे उतारा और सन के उत्तम रेशमों के
बने कपड़े में उसे लपेट दिया। फिर उसने उसे
चट्टान में काटी गयी एक कब्र में रख दिया,
जिसमें पहले कभी किसी को नहीं रखा गया था।
५४ वह शुक्रवार का दिन था और सब्त का प्रारम्भ
होने को था।
५५ वे स्त्रियाँ जो गलील से यीशु के साथ आई
थीं, यूसुफ के पीछे हो लीं। उन्होंने वह कब्र देखी,
और देखा कि उसका शव कब्र में कैसे रखा गया।
५६ फिर उन्होंने घर लौट कर सुगंधित सामग्री
और लेप तैयार किये।
सब्त के दिन व्यवस्था के विधि के अनुसार
उन्होंने आराम किया।

यीशु का फिर से जी उठना

(मत्ती २८:१-१०; मरकुस
१६:१-८; यूहन्ना २०:१-१०)

२४ १ सप्ताह के पहले दिन बहुत सवेरे ही वे
स्त्रियाँ कब्र पर उस सुगंधित सामग्री
को, जिसे उन्होंने तैयार किया था, लेकर आयीं।
२ उन्हें कब्र पर से पत्थर लुढ़का हुआ मिला। ३ सो
वे भीतर चली गयीं किन्तु उन्हें वहाँ प्रभु यीशु का
शव नहीं मिला। ४ जब वे इस पर अभी उलझन में
ही पड़ी थीं कि, उनके पास चमचमाते वस्त्र पहने
दो व्यक्ति आ खड़े हुए। ५ डर के मारे वे धरती की
तरफ अपने मुँह लटकाये हुए थे। उन दो व्यक्तियों
ने उनसे कहा, “जो जीवित है, उसे तुम मुर्दों के
बीच क्यों ढूँढ रही हो? ६ वह यहाँ नहीं है। वह जी
उठा है। याद करो जब वह अभी गलील में ही था,
उसने तुमसे क्या कहा था। ७ उसने कहा था कि
मनुष्य के पुत्र का पापियों के हाथों सौंपा जाना
निश्चित है। फिर वह क्रूस पर चढ़ा दिया जायेगा
और तीसरे दिन उसको फिर से जीवित कर देना
निश्चित है।” ८ तब उन स्त्रियों को उसके शब्द
याद हो आये।
९ वे कब्र से लौट आयीं और उन्होंने ये सब
बातें उन ग्यारहों और अन्य सभी को बतायीं।
१० ये स्त्रियाँ थीं मरियम-मग्दलीनी, योअन्ना
और याकूब की माता, मरियम। वे तथा उनके साथ
की दूसरी स्त्रियाँ इन बातों को प्रेरितों से कहीं।
११ पर उनके शब्द प्रेरितों को व्यर्थ से जान पड़े।
सो उन्होंने उनका विश्वास नहीं किया। १२ किन्तु
पतरस खड़ा हुआ और कब्र की तरफ़ दौड़ आया।
उसने नीचे झुक कर देखा पर उसे सन के उत्तम
रेशम से बने कफन के अतिरिक्त कुछ नहीं दिखाई

दिया था। फिर अपने मन ही मन जो कुछ हुआ था, उस पर अचरज करता हुआ वह चला गया।*

इम्माऊस के मार्ग पर

(मरकुस १६:१२-१३)

१३ उसी दिन उसके शिष्यों में से दो, यरूशलेम से
कोई सात मील दूर बसे इम्माऊस नाम के गाँव को
जा रहे थे। १४ जो घटनाएँ घटी थीं, उन सब पर वे
आपस में बातचीत कर रहे थे। १५ जब वे उन बातों
पर चर्चा और सोच विचार कर रहे थे तभी स्वयं
यीशु वहाँ आ उपस्थित हुआ और उनके साथ-
साथ चलने लगा। १६ (किन्तु उन्हें उसे पहचानने
नहीं दिया गया।) १७ यीशु ने उनसे कहा, "चलते
चलते एक दूसरे से ये तुम किन बातों की चर्चा कर
रहे हो?"

वे चलते हुए रुक गये। वे बड़े दुखी दिखाई दे रहे
थे। १८ उनमें से किलयुपास नाम के एक व्यक्ति ने
उससे कहा, "यरूशलेम में रहने वाला तू अकेला
ही ऐसा व्यक्ति होगा जो पिछले दिनों जो बातें
घटी हैं, उन्हे नहीं जानता।"

१९ यीशु ने उनसे पूछा, "कौन सी बातें?"

उन्होंनें उससे कहा, "सब नासरी यीशु के बारे में
हैं। यह एक ऐसा व्यक्ति था जिसने जो किया और
कहा वह परमेश्वर और सभी लोगों के सामने यह
दिखा दिया कि वह एक महान् नबी था। २० और
हम इस बारें में बातें कर रहे थे कि हमारे प्रमुख
याजकों और शासकों ने उसे कैसे मृत्यु दण्ड देने
के लिए सौंप दिया। और उन्होंने उसे क्रूस पर
चढ़ा दिया। २१ हम आशा रखते थे कि यही वह था
जो इस्राएल को मुक्त कराता।

"और इस सब कुछ के अतिरिक्त इस घटना को
घटे यह तीसरा दिन है। २२ और हमारी टोली की
कुछ स्त्रियों ने हमें अचम्भे में डाल दिया है।
आज भोर के तड़के वे कब्र पर गयीं। २३ किन्तु
उन्हें, उसका शव नहीं मिला। वे लौटीं और हमें
बताया कि उन्होंने स्वर्गदूतों का दर्शन पाया है
जिन्होंने कहा था कि वह जीवित है। २४ फिर हम
में से कुछ कब्र पर गये और जैसा स्त्रियों ने
बताया था, उन्होंने वहाँ वैसा ही पाया। उन्होंने
उसे नहीं देखा।"

२५ तब यीशु ने उनसे कहा, "तुम कितने मूर्ख हो
और नबियों ने जो कुछ कहा, उस पर विश्वास
करने में कितने मंद हो। २६ क्या मसीह के लिये
यह आवश्यक नहीं था कि वह इन यातनाओं को
भोगे और इस प्रकार अपनी महिमा में प्रवेश
करे?" २७ और इस तरह मूसा से प्रारम्भ करके सब
नबियों तक और समूचे शास्त्रों में उसके बारे में
जो कहा गया था, उसने उसकी व्याख्या करके उन्हें
समझाया।

२८ वे जब उस गाँव के पास आये, जहाँ जा रहे थे,
यीशु ने ऐसे बर्ताव किया, जैसे उसे आगे जाना हो।
२९ किन्तु उन्होंने उससे बलपूर्वक आग्रह करते
हुए कहा, "हमारे साथ रुक जा क्योंकि लगभग
साँझ हो चुकी है और अब दिन ढल चुका है।" सो
वह उनके साथ ठहरने भीतर आ गया।

३० जब उनके साथ वह खाने की मेज पर था तभी
उसने रोटी उठाई और धन्यवाद किया। फिर उसे
तोड़ कर जब वह उन्हें दे रहा था ३१ तभी उनकी
आँखे खोल दी गयीं और उन्होंने उसे पहचान
लिया। किन्तु वह उनके सामने से अदृश्य हो गया।
३२ फिर वे आपस में बोले, "राह में जब वह हमसे
बातें कर रहा था और हमें शास्त्रों को समझा रहा
था तो क्या हमारे हृदय के भीतर आग सी नहीं
भड़क उठी थी?"

३३ फिर वे तुरंत खड़े हुए और वापस यरूशलेम
को चल दिये। वहाँ उन्हें ग्यारहों प्रेरित और दूसरे
लोग उनके साथ इकट्ठे मिले, ३४ जो कह रहे थे,
"हे प्रभु, वास्तव में जी उठा है। उसने शमौन को
दर्शन दिया है।"

३५ फिर उन दोनों ने राह में जो घटा था, उसका
ब्योरा दिया और बताया कि जब उसने रोटी के
टुकड़े लिये थे, तब उन्होंने यीशु को कैसे पहचान
लिया था।

यीशु का अपने शिष्यों के सामने प्रकट होना

(मत्ती २८:१६-२०; मरकुस १६:१४-१८; यूहन्ना २०:१९-२३; प्र.क. १:६-८)

३६ अभी वे उन्हें ये बातें बता ही रहे थे कि वह
स्वयं उनके बीच आ खड़ा हुआ और उनसे बोला,
"तुम्हें शान्ति मिले।"

३७ किन्तु वे चौंक कर भयभीत हो उठे। उन्होंने
सोचा जैसे वे कोई भूत देख रहे हों। ३८ किन्तु
वह उनसे बोला, "तुम ऐसे घबराये हुए क्यों हो?
तुम्हारे मनों में संदेह क्यों उठ रहे हैं? ३९ मेरे हाथों
और मेरे पैरों को देखो। मुझे छुओ, और देखो कि
किसी भूत के माँस और हड्डियाँ नहीं होतीं और
जैसा कि तुम देख रहे हो कि, मेरे वे हैं।"

*२४:१२ कुछ यूनानी प्रतियों में यह पद नहीं है।

[४०]यह कहते हुए उसने हाथ और पैर उन्हें
दिखाये। [४१]किन्तु अपने आनन्द के कारण वे अब
भी इस पर विश्वास नहीं कर सके। वे भौंचक्के थे
सो यीशु ने उनसे कहा, "क्या तुम्हारे पास कुछ
खाने को है ?" [४२]उन्होंने पकाई हुई मछली का एक
टुकड़ा उसे दिया। [४३]और उसने उसे लेकर उनके
सामने ही खाया।

[४४]फिर उसने उनसे कहा, "ये बातें वे हैं जो मैंने
तुमसे तब कही थीं, जब मैं तुम्हारे साथ था। हर
वह बात जो मेरे विषय में मूसा की व्यवस्था में
नबियों तथा भजनों की पुस्तक में लिखा है, पूरी
होनी ही हैं।"

[४५]फिर पवित्र शास्त्रों को समझने केलिये
उसने उनकी बुद्धि के द्वार खोल दिये। [४६]और
उसने उनसे कहा, "यह वही है, जो लिखा है कि
मसीह यातना भोगेगा और तीसरे दिन मरे हुओं
में से जी उठेगा। [४७-४८]और पापों की क्षमा के
लिए मनफिराव का यह संदेश यरूशलेम से आरंभ
होकर सब देशों में प्रचारित किया जाएगा। तुम
इन बातों के साक्षी हो। [४९]और अब मेरे परम पिता
ने मुझसे जो प्रतिज्ञा की है, उसे मैं तुम्हारे लिये
भेजूँगा। किन्तु तुम्हें इस नगर में उस समय तक
ठहरे रहना होगा, जब तक तुम स्वर्ग की शक्ति से
युक्त न हो जाओ।"

यीशु की स्वर्ग को वापसी

(मरकुस १६:१९-२०; प्र.क. १:९-११)

[५०]यीशु फिर उन्हें बैतनिय्याह तक बाहर ले
गया। और उसने हाथ उठा कर उन्हें आशीर्वाद
दिया। [५१]उन्हें आशीर्वाद देते देते ही उसने उन्हें
छोड़ दिया और फिर उसे स्वर्ग में उठा लिया गया।
[५२]तब उन्होंने उसकी आराधना की और असीम
आनन्द के साथ वे यरूशलेम लौट आये। [५३]और
मन्दिर में परमेश्वर की स्तुति करते हुए वे अपना
समय बिताने लगे।